Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - ६ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मार्च (द्वितीय) २०१३

आचार्य ज्ञानेश्वर

आचार्य अर्जुनदेव वर्णी

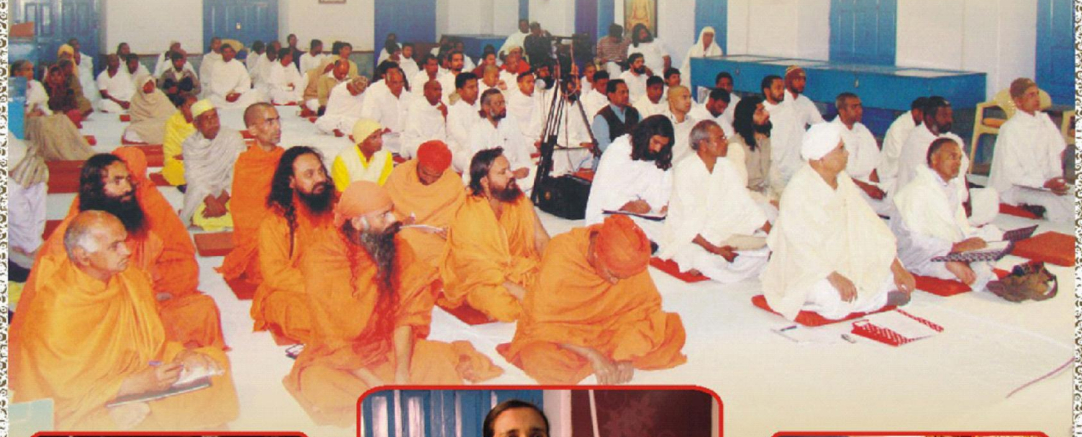

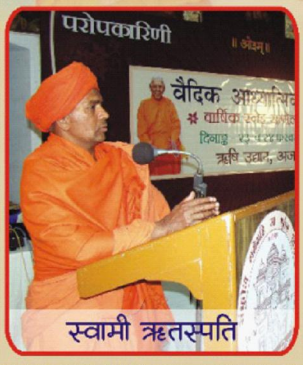

स्वामी ऋतस्पति

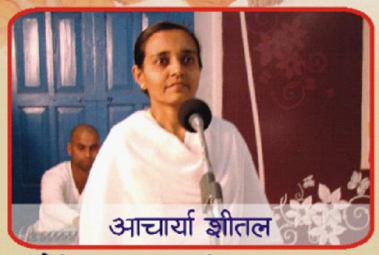
आचार्या शीतल

वैदिक आध्यात्मिक न्यास
(वार्षिक स्नेह सम्मेलन-१)
२३ व २४ फरवरी, २०१३
ऋषि उद्यान, अजमेर

आचार्य रवीन्द्र

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैदिक आध्यात्मिक न्यास (वार्षिक स्नेह सम्मेलन-१)

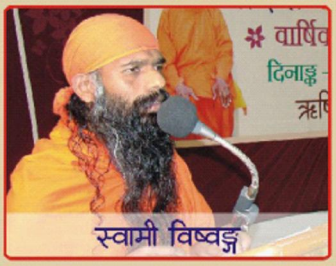
स्वामी विष्वङ्ग

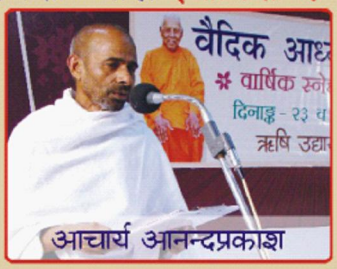
आचार्य आनन्दप्रकाश

आचार्य सत्यप्रकाश

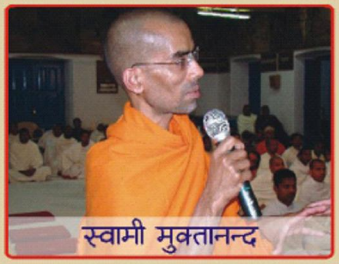
स्वामी मुक्तानन्द

आचार्य भद्रकाम

आचार्य सन्दीप

आचार्य वीरेन्द्र

आचार्य सोमदेव

श्री देवेन्द्र आर्य

माता जयाबेन पोरिया

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

ब्रह्मचारिणी सुमेधा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक :** ०६
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: फाल्गुन शुक्ल, २०६९
कलि संवत्: ५११३
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११३

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मार्च द्वितीय २०१३

अनुक्रम

१. स्वामी दयानन्द हमें वेद से जोड़ते...	सम्पादकीय	०४
२. सतत साधना-उपासना	सत्यजित्	०७
३. आदिमूल परमेश्वर	डॉ. वेदपाल	०८
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१२
५. सृष्टि संवत् और स्वामी दयानन्द.....	शिवनारायण	१७
६. हिन्दी तथा हिन्दुत्व के प्रचारक.....	शिवकुमार	१८
७. दयानन्द ने गंगा उलट दई	इन्द्रजित् देव	२१
८. स्मृतिशेष गुरुवर स्वतन्त्रानन्द जी	स्वामी सदानन्द	२४
९. वैदिक-आध्यात्मिक न्यास का.....	आचार्या शीतल	२५
१०. नैष्ठिक अग्निव्रत के पत्र का उत्तर....	सत्यजित्	२८
११. सामवेद की मूल संहिता कौथुमीय..	ब्र. राजेन्द्रार्य	३३
१२. पुस्तक-परिचय	वेदपति	३८
१३. पाठकों की प्रतिक्रिया		३९
१४. संस्था समाचार	ब्र. प्रभाकर	४०
१५. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सम्पादकीय.....

स्वामी दयानन्द हमें वेद से जोड़ते हैं-क्यों?

स्वामी दीक्षानन्द जी अपने व्याख्यान में स्वामी दयानन्द की विशेषता बताते हुए कहा करते थे-''संसार के अनेक महापुरुष, देवी-देवता अपनी-अपनी विशेष पहचान रखते हैं। जिनसे उन्हें पहचाना जाता है। कोई बांसुरी रखता है, कोई शंख, कोई वीणा आदि, परन्तु स्वामी दयानन्द को किसी विशेष बात से पहचाना जाता है तो वेद से पहचाना जाता है।'' स्वामी जी ने हम सबको भी वेद से जुड़ने का आदेश दिया। स्वामी जी का वर्तमान युग में यह नया कार्य अवश्य था, परन्तु प्राचीन ऋषियों को देखें तो यह कार्य अत्यन्त पुराना है, उतना ही पुराना जितना पुराना मनुष्य है।

स्वामी जी ने हमें वेद से इसलिए जोड़ा कि महाभारत के पश्चात् संकीर्ण और अज्ञानी लोगों ने हमको वेदों से दूर कर दिया था। स्त्री-शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकार से वञ्चित कर दिया था। उसे फिर से देते हुए उन्होंने मनुष्य मात्र को वेद के अध्ययन का अधिकार प्रदान किया। स्वामी दयानन्द के पूर्व ऋषियों को हम देखते हैं, तो वे मनुष्य के जीवन को वेदमय बनाने की प्रेरणा देते हैं। किसी व्यक्ति का जीवन उसका व्यक्तिगत होता है, उसको वह कैसे बिताता है, यह उसके शिक्षा, संस्कार व वातावरण पर निर्भर करता है। ऋषि लोग मनुष्य-जीवन को वेद से जोड़ते हैं, तो मनुष्य के गर्भ में आने से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसे हम वेद से बंधा देखते हैं। जन्म के पूर्व तीन संस्कार शिशु के वेदमन्त्रों से हो चुके होते हैं। जातकर्म संस्कार में बालक (शिशु) की जिह्वा पर सोने की शलाका से ओ३म् लिखते हैं और कान में '**वेदोऽसि**' तू वेद है, तू वेद के लिए है कहते हैं। मनुष्य को कान वेद सुनने के लिये तथा जिह्वा ओ३म् का उच्चारण करने के लिए परमेश्वर ने दी है। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य के जितने संस्कार होते हैं, सभी वेदमन्त्रों से ही किये जाते हैं। निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चूड़ाकर्म आदि। उपनयन और वेदारम्भ तो साक्षात् वेद से जोड़ते हैं।

आज जब हम बालक को विद्यालय में प्रविष्ट कराने जाते हैं, तब हमारी इच्छा बालक को डॉक्टर इञ्जीनियर, प्राशासनिक अधिकारी आदि बनाने की रहती है। इन शिक्षाओं को देते हुए बालक को हम इस अध्ययन का कोई प्रयोजन नहीं बताते, परन्तु प्राचीन ऋषि लोग बालक के अध्ययन एवं शिक्षा का प्रयोजन प्रथम दिन, प्रथम पाठ में ही बतला देते हैं। बालक का वेदारम्भ संस्कार करते हुए आचार्य कहता है-हे बालक! तेरी शिक्षा का उद्देश्य वेद पढ़ना है। आज वर्णमाला का अभ्यास किसी और ग्रन्थ के लिये नहीं, वेद के लिए है। ऐसा नहीं कि वह शिक्षा ग्रहण करते हुए अन्य कला-कौशल नहीं सीखेगा, अन्य शास्त्रों का अध्ययन नहीं करेगा। बालक को सभी विद्या, ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा आचार्य देता है। इनका उपयोग जीवन को सुविधापूर्वक चलाते हुए समाज का उपकार करने में होगा। परन्तु अन्तिम उद्देश्य तो वेद ही है। आज जो अक्षराभ्यास आरम्भ किया है, वह वेद का अध्ययन करने पर ही पूर्ण होगा।

शिक्षा के क्रम को देखने से पता लगता है कि ऋषि लोग जो भी शिक्षा देते हैं, वह अन्तिम प्रयोजन की प्राप्ति के लिए देते हैं, वह प्रयोजन है-वेद। महान् वैयाकरण पतञ्जलि ऋषि कहते हैं कि जो मनुष्य विद्वान् और ब्राह्मण बनना चाहता है, उसे कर्त्तव्य समझकर वेद का अध्ययन करना चाहिए। केवल वेदों का अध्ययन ही नहीं करना चाहिए, अपितु वेदाङ्गों के साथ अध्ययन कर उनके अर्थों को भी जानना चाहिए। यहां पर वेदाध्ययन के लिए एक शब्द प्रयुक्त हुआ है-'**निष्कारणो धर्मः**' सांसारिक प्रयोजनों के लिए सभी लोग नाना प्रकार की विद्यायें पढ़ते हैं, परन्तु वेद पढ़ने से यदि कोई सांसारिक लाभ सिद्ध नहीं होता, तो भी वेदाध्ययन सर्वोपरि मानकर उसका अध्ययन करना ब्राह्मण के जीवन का उद्देश्य बताया है। पतञ्जलि ने व्याकरण-शास्त्र पढ़कर भाषा जानने को मुख्य उद्देश्य नहीं बताया। वे व्याकरण-शास्त्र पढ़ने के अट्ठारह प्रयोजन गिनाते हैं, उनमें भी पांच को मुख्य बतलाते हैं। उन पांच मुख्य प्रयोजनों में प्रथम व्याकरणाध्ययन का प्रयोजन वेदज्ञान की रक्षा करना है। वे कहते हैं वेदों की रक्षा के लिए मनुष्य को व्याकरण व भाषा का ज्ञान करना चाहिए। व्याकरण सिद्ध होने वाले शेष प्रयोजन तो अनायास ही सिद्ध हो जाते हैं, जब वेदाध्ययन का प्रमुख प्रयोजन सिद्ध होता है। आचार्य आपस्तम्ब ने वेदाध्ययन पर बल देते हुए कहा है ''मनुष्य यदि आजीविका उपार्जन में लगता है, तो उसका वेदाध्ययन छूट जाता है; यदि वेदाध्ययन में लगता है, तो आजीविका छूट जाती है, ऐसी परिस्थिति में मनुष्य क्या करे? तब ऋषि कहते हैं, बुद्धिमान् मनुष्य को योग्य है कि वह समर्थ है तो दोनों कार्यों को करे, यदि दोनों में से केवल एक का चुनाव करना पड़े तो वेदाध्ययन को ही महत्त्व देना उचित है।''

मनुष्य के लिए जो अनिवार्य है, उसे सर्वाधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। एक व्यक्ति को आजीविका के साधन प्राप्त करने का और उनका उपयोग करने का पूर्ण अधिकार है, परन्तु आजीविका के उपाय करने मात्र से मनुष्य उचित नहीं हो जाता। तैत्तिरीय उपनिषद् के शिक्षावल्ली में वेदाध्ययन का परिणाम बताते हुए समावर्तन संस्कार के उपदेश में आचार्य ने निर्दिष्ट व्यवहार को वेद का रहस्य कहा है। जिसे वेद का रहस्य कहा,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

उसे ही आचार्य का अन्तिम आदेश और अन्तिम उपदेश कहा है। इस उपदेश की मनुष्य को जीवन में सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है। एक अच्छा डॉक्टर, एक अच्छा इञ्जीनियर बनना उसके तकनीकी ज्ञान व योग्यता पर निर्भर करता है, परन्तु मनुष्य बनना वेद के ज्ञान पर निर्भर करता है। संसार के सारे कला-कौशल मनुष्य को अर्थोपार्जन के योग्य बनाते हैं, परन्तु वेद का ज्ञान मनुष्य को समाजोपयोगी बनाते हैं। आज हम बालकों को महंगी, ऊंची शिक्षा देकर समझते हैं कि हमने उन्हें योग्य बना दिया है, परन्तु आगे चलकर उन्हीं बालकों से माता-पिता असन्तुष्ट दिखाई देते हैं, क्यों? क्या हमारे बालकों की शिक्षा में कोई न्यूनता रही? नहीं, क्योंकि हमने जिस बालक को डॉक्टर बनने के लिए कहा वह अच्छा डॉक्टर बना, जिसे माता-पिता ने इञ्जीनियर बनाया वह इञ्जीनीयर बना, जिसे प्रशासक बनाया वह बढ़िया प्रशासक बना, फिर हम उनसे क्यों असंतुष्ट हैं? हमने उनको धनोपार्जन के योग्य बनाया परन्तु समाज के योग्य नहीं बनाया।

एक मनुष्य को विद्वान् बनाना आवश्यक है, परन्तु धार्मिक बनाना भी उतना ही आवश्यक है। मनुष्य केवल विद्वान् बनकर स्वार्थी और धूर्त बन जाता है। वह बुद्धि का उपयोग स्वार्थ के लिए करता है। केवल धार्मिक व्यक्ति ज्ञान के अभाव में मूर्ख बन जाता है। अत: स्वामी जी मनुष्य को विद्वान् और धार्मिक बनाने की बात करते हैं। वेद पढ़ाकर आचार्य अपने विद्यार्थी को जो उपदेश देता है, वह संसार का सर्वोच्च और सर्वोत्तम उपदेश है। वह बालक को व्यक्तिगत दृष्टि से माता-पिता, आचार्य, अतिथि आदि को देवतुल्य मानने का उपदेश करता है। आज माता-पिता को सबसे बड़ा कष्ट है कि उनके बालक उनका सहयोग नहीं करते, उनकी सेवा नहीं करते तथा उनका आदर नहीं करते। एक मनुष्य जीवन-यापन के साधन चाहता है, परन्तु आदर के बिना नहीं। सेवा शारीरिक आवश्यकता को पूर्ण करती है, वहीं आदर मनुष्य को मानसिक सन्तुष्टि देता है। इसलिए आचार्य, विद्वान्, अतिथि, माता-पिता को देव संज्ञा दी गई है। जो आदर की पराकाष्ठा का द्योतक है।

अन्य शिक्षाओं से वेद की शिक्षा में जो अन्तर है, वह है आज की पाश्चात्य शिक्षा का जो मनुष्य को मजदूर बनाती है, हम महंगे मजदूर बनकर सन्तुष्ट हो जाते हैं, वेद स्वामी बनाने की बात करता है। जो निर्देश पर कार्य करता है, उसे कितना भी धन मिले वह मजदूर ही रहता है। जो औचित्य से कार्य करता है, वह स्वामी होता है। मनुष्य विचारवान् होकर ही स्वामी बनता है। हम तकनीक सीखकर धन अधिक से अधिक कमा सकते हैं, परन्तु विचारवान् नहीं बन सकते, विचारवान् बनने के लिए वेदशास्त्र, दर्शन, व्याकरण पढ़ना होगा। भाषा हमें विचार करने की क्षमता देती है और शास्त्र विचार करने की दिशा देते हैं। संसार में मनुष्य के पास उसकी दो चीजें हैं, एक उसका शरीर, एक आत्मा। हमें शरीर के विषय में सोचना तो सिखाया जाता है, परन्तु आत्मा के विषय में सोचना हम नहीं जानते, क्योंकि इसके विषय में हमें कोई नहीं बताता। वेद दोनों के विषय में बताता है। हमारे ऋषियों ने मनुष्य के जीवन में वेदों को महत्त्व दिया। स्वामी जी ने हमको वेद से उसी प्रकार जोड़ा है, जैसे मनु आदि ऋषियों ने बताया था।

प्रात:काल कोई व्यक्ति उठता है तो वेदमन्त्रों का पाठ करते हुए उठता है, स्नान करता है तो मन्त्र पढ़ता है, संध्या हवन करता है तो मन्त्र पढ़ता है। भोजन करता है तो मन्त्र पढ़ता है। अपने कार्य को करता है तो तदुपयोगी मन्त्र पढ़ता है। रात्रि को शयन करता है तो वेद मन्त्रों का पाठकर सोता है। प्रात:काल से सायंकाल तक किये जाने वाले कार्यों में वेदमन्त्र रचने का कोई अभिप्राय तो होना चाहिए। क्या व्यर्थ ही किसी को इस जाल में उलझा दिया गया है? प्रत्येक समय किये जाने वाले कार्य में भी श्रेष्ठता प्रतिपादन करने वाले मन्त्र उस कार्य के समय पढ़े जाते हैं। भोजन करने वाला व्यक्ति जो मन्त्र पढ़ रहा है, उसमें वह कह रहा है, ''अन्न प्रभु का दिया है। जैसे वह मेरे जीवन की आवश्यकता है, उसी प्रकार सब प्राणियों के जीवन की आवश्यकता है, मुझे अपना भोजन करते हुए दूसरे के भोजन की भी चिन्ता करना चाहिए। मैं भोजन करूं यह स्वार्थ है, व्यक्तिगत है। सबको भोजन मिले यह धर्म है, परोपकार है।'' इसी कारण हम अपने प्रत्येक कार्य से वेद को जोड़ते हैं, जिससे वह कार्य सामान्य कार्य नहीं होकर उत्कृष्ट कार्य हो सके। वेद हमारी वैचारिक सम्पत्ति है। अन्य सम्पत्ति के नष्ट होने पर, खोने पर वह प्राप्त की जा सकती है। परन्तु ज्ञान की सम्पत्ति का पाना दुर्लभ है।

हजारों-लाखों वर्षों से मनीषियों ने जिस ज्ञान-विज्ञान की खोज की है, उसका आधार वेद है। अत: उसकी प्राप्ति और सुरक्षा वेद से ही संभव है। गत दिनों केरल यात्रा के प्रसंग में एक सज्जन के घर पर निवास करने का प्रसंग आया। वे एर्नाकुलम् में अलुवा ग्राम में रहते हैं। उनका नाम रघुनाथ है। उनकी इच्छा संस्कृत सीखने की और वेद पढ़ने की है। चर्चा के प्रसंग में उन्होंने बताया कि उनके मन में वेद पढ़ने की इच्छा क्यों उत्पन्न हुई। उन्होंने कहा कि वे एक बार अमेरिका गये हुए थे। वे वहीं पर थे, जहां अमेरिका का वैज्ञानिक केन्द्र है, जिसे नासा कहा जाता है। वे बता रहे थे, मेरे पास कुछ घण्टे का समय था, मैंने उसका सदुपयोग करने की दृष्टि से नासा की प्रदर्शनी देखने का विचार किया और चार-पांच घण्टे उस प्रदर्शनी के देखने में लगाये। एक स्थान पर एक सूचना पढ़कर सुखद आश्चर्य हुआ। वहां लिखा था-**डिजिटल का अनुसन्धान अथर्ववेद के मन्त्र से किया गया है।** यह पढ़कर मेरे मन में

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वेद को जानने की इच्छा हुई, इसलिए मेरा प्रयास संस्कृत सीखकर वेद पढ़ने का है। वेद हमारी सम्पत्ति है, उसकी रक्षा, उपयोग और उसका अनुसन्धान हम पीढ़ियों से करते आ रहे हैं। महाभारत के बाद एक सामाजिक षड्यन्त्र के परिणामस्वरूप हम से हमारी सम्पत्ति छीन ली गई। हमसे सम्पत्ति का अधिकार भी छीन लिया।

स्वामी दयानन्द इस इतिहास में ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने उस ज्ञान-विज्ञान को समझा और उसके अधिकार को मनुष्य मात्र के लिए पुनः प्रदान किया। मनु के शब्दों में वेद पितर, देव, मनुष्यों के सनातन चक्षु हैं। ये सब उन्हीं आखों से देखते हैं, जैसे मनुष्य आंख से देखकर कृतकार्य होता है, वैसे ही मनुष्य वेद के ज्ञान से कृतकार्य होता है। वेद समस्त कर्त्तव्य कर्मों का ज्ञान कराता है। उसके जाने बिना कार्य करने में सफलता प्राप्त नहीं होती। अतएव मनु महाराज ने कहा है-

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।

-धर्मवीर

आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखायाः परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधिः - १७-०५-२०१३ तः २६-०५-२०१३ (दश दिनात्मकम्)
(१६-०५-२०१३ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)
स्थानम् - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्गः, अजमेर-३०५००१, दूरभाषः- ०१४५-२६२१२७०
योग्यता - संस्कृते रुचिमन्तः संस्कृत-आचार्याः, अध्यापकाः, संस्कृतछात्राः, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।
शुल्कम् - ३०० रुप्यकाणि।
व्यवस्था - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिनः नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्रीः च आनयेयुः।
स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यासः,
विशेष - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीरः	**डॉ. बद्रीप्रसाद पंचौली**	**डॉ. निरञ्जन साहुः**
अध्यक्षः	कोषाध्यक्षः	सचिवः
	०१४५-२४२५६६४	०९५१४७०९४९४

संपर्क- **१.** श्री जितेन्द्र थदानी, प्रध्यापक (संस्कृतम्), राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, मो. ९२१४५२३५०५ **२.** डॉ. कृष्णराम महिया, प्राध्यापकः, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, मो. ८१०४८४६४३४ **३.** डॉ. आशुतोष पारीकः, प्राध्यापकः, मो. ९४६०३५५१७२।

मनुष्यों को सत्यविद्या, धर्म से संस्कार की हुई वाणी वा शिल्पविद्या से संप्रयोग की हुई बिजुली आदि विद्या को सब मनुष्यों के लिये उपदेश वा ग्रहण और सुख-दुःख की व्यवस्था को भी तुल्य ही जानके सब ऐश्वर्य्य को परोपकार में संयुक्त करना चाहिये और किसी मनुष्य को इस प्रकार का व्यवहार कभी न करना चाहिये कि जिससे किसी की विद्या-धन आदि ऐश्वर्य की हानि होवे।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२२।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

सतत साधना-उपासना

-सत्यजित्

प्रभुकृपा सदा विद्यमान है। प्रभुकृपा के साथ पुण्य कर्मों व शुभ संस्कारों का योग होने पर साधना के प्रयत्न फलवान् होने लगते हैं। साधना-उपासना में मन लगने लगता है, गहराई आने लगती है। साधना-उपासना की कामना बनी रहती है, इन्हें करके अच्छी अनुभूति होती है, शान्ति का अनुभव होता है। साधना-उपासना करने की इच्छा बनी रहने से, समय-समय पर साधना-उपासना करते रहते हैं। धीरे-धीरे साधना-उपासना का काल बढ़ाने की इच्छा तीव्र होती जाती है। इच्छा के बढ़ने के साथ काल भी धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। यथानुकूल यथाशक्य यह काल एक सीमा तक बढ़ता जाता है। एक सीमा के बाद यह काल बढ़ाना शक्य हीं रहता। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक कार्य भी करणीय होते हैं। इन कार्यों के न होने पर साधना-उपासना में भी बाधा आने लगती है। जीवन भी सहज नहीं चल पाता है।

प्रभुकृपा से आध्यात्मिक व्यक्ति में साधना-उपासना की इच्छा बनी रहती है। इस इच्छा की पूर्ति व लोक व्यवहार की पूर्ति के लिए उसे समय की न्यूनता प्रतीत होने लगती है। ध्यान-संध्या के समय जो प्रभुस्मरण, समर्पण, श्रद्धा आदि रहते हैं, वे व्यवहार काल में छूट से जाते हैं या उनका स्तर न्यून हो जाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति को यह स्थिति खटकती रहती है। वह चाहता है कि मेरी स्थिति व्यवहार काल में भी अच्छी बनी रहे। जपादि के छूटने से साधक को ईश्वर भी छूटा हुआ प्रतीत होता है। व्यवहार काल में जब वह यह स्थिति बनाना चाहता है, तो इसके लिए ध्यान-संध्या के समान प्रभुस्मरणार्थ जप करने लगता है। स्थिति बनती भी है, तो साथ में व्यवहार ठीक नहीं हो पाता।

प्रभुकृपा से आध्यात्मिक व्यक्ति के मन में इस समस्या के समाधान की इच्छा उठती रहती है, बनी रहती है। धीरे-धीरे उसे यह समझ बन जाती है कि एक ही समय में जप व व्यवहार दोनों को बनाये रखना संभव नहीं है। व्यवहार काल में जपादि भले ही संभव न हों, किन्तु ईश्वर को फिर भी जोड़े रखा जा सकता है। अपने को ईश्वर को जोड़े रखना मुख्य है। जपादि भी तो ईश्वर से जोड़े रखने के उपाय हैं, अत: ईश्वर से जुड़े रहना मुख्य है, जपादि मुख्य नहीं हैं। अपने को ईश्वर से जोड़े रखने के लिए ही तो जपादि कर रहे थे। यदि जपादि से भिन्न किसी उपाय से ईश्वर से जुड़ा रहा जा सके व व्यवहार भी न छूटे, तो ऐसे उपाय भी जपादि के तुल्य ही आदरणीय हैं।

प्रभुकृपा से साधक व्यवहार काल में भी अपने को सदा ईश्वर से जोड़े रख सकता है। जिस-जिस व्यवहार को करना है, उसके बारे में साधक यह विचारता है कि यह व्यवहार ईश्वर प्राप्ति में सहायक होगा? किस रीति से करने पर यह ईश्वर की प्राप्ति में बाधक बन जायेगा? इस प्रकार का विचार व्यवहार से पूर्व व व्यवहार करते समय भी किया जा सकता है। इस प्रकार के विचार से साधक जहां अपने को ईश्वर से जोड़े रखता है, वहां उस व्यवहार को भी अधिक अच्छी तरह व शुद्धता से कर पाता है। इस उपाय से साधक अपने को दिनभर ईश्वर से जोड़े रख सकता है, इससे ईश्वर का स्मरण सदा बना रहता है। सतत साधना-उपासना का यही उपाय है।

प्रभुकृपा से हम ध्यान-संध्या के काल में जो गहराई से जपादि करते हैं, उसका एक मुख्य प्रयोजन यह भी है कि हमारे दिनभर के व्यवहार मुमुक्षु की तरह होते रहें। ऐसे में जब प्रत्येक व्यहार को ईश्वर की प्राप्ति में सहायक जानकर ही किया जा रहा हो, तो साधक का व्यवहार मुमुक्षु की तरह ही होगा, साधक का व्यवहार योगानुरूप ही होगा, वेद व ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप ही होगा। ऐसा करते हुए यदि जप न भी चल रहा हो तो इसे कोई दोष नहीं समझना चाहिए। जप में किये जा रहे प्रभु स्मरण की तुलना में यह व्यवहार कालीन प्रभुस्मरण निम्नस्तर का नहीं माना जा सकता। व्यवहार काल में प्रत्येक कर्म ईश्वर की प्राप्ति के लिए विचार कर करते समय होने वाला प्रभुस्मरण अधिक ऊंचे स्तर का होता है। व्यवहार कालीन ऐसे प्रभुस्मरण के होने पर जप वाले प्रभुस्मरण की अनिवार्यता-आवश्यकता नहीं रहती। जब-जब व्यवहारकालीन प्रभुस्मरण में न्यूनता आये, तब-तब जप के द्वारा प्रभुस्मरण करना आवश्यक होता है। जप के प्रभुस्मरण द्वारा व्यवहार की ईश्वरानुकूल परिशुद्धता साधी जाती है। व्यवहार की यह परिशुद्धता ही सतत साधना-उपासना का स्वरूप है।

प्रात:-सायं की संध्या-उपासना का विस्तार व्यवहार की परिशुद्धता में करना ही होता है। यही सतत साधना-उपासना है। प्रभुकृपा से हमारे में यह सामर्थ्य है कि हम ऐसा कर सकते हैं। सतत साधना-उपासना का होना, एक बड़ी सफलता है, प्रभु की एक बड़ी कृपा है। **-ऋषि उद्यान, अजमेर।**

भूल-सुधार

मार्च प्रथम में जिज्ञासा-समाधान पृष्ठ ८, समाधान ८ में ''**अंकुरित** व सूखी अवस्था में जड़=निर्जीव होते हैं'' के स्थान पर ''**अनंकुरित** व सूखी अवस्था में जड़=निर्जीव होते हैं'' पढ़ा जावे। त्रुटि के लिए क्षमा चाहते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आदिमूल-परमेश्वर

-डॉ. वेदपाल

आर्यसमाज की स्थापना (मुम्बई १८७५ ई.) के समय अट्ठाईस नियम निर्धारित किए गए थे। लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना (२४ जून १८७७ ई.) के समय इन नियमों को पुनर्निधारित किया गया। यत: मुम्बई में निर्धारित नियम अधिकांशत: आर्यसमाज के उद्देश्य की अपेक्षा समाज के संगठन व सदस्यों के पारस्परिक व्यवहार के निर्देशक थे जो विषय उपनियमों के अन्तर्गत होने चाहिएं, वे भी इन नियमों में थे। अत: नियमों का पुनर्निर्धारण आवश्यक था। लाहौर में ही नियम एवं उपनियमों को पृथक्-पृथक् किया गया। नियम एवं उद्देश्य के रूप में वर्तमान में प्रचलित दस नियम निर्धारित किए गए। वर्तमान दस नियम महर्षि के गम्भीर चिन्तन से नि:सृत नवनीतवत् हैं। इनमें नियम तो क्या? अक्षर तक भी अनपेक्षित नहीं है। अत: एक सौ छत्तीस वर्ष बाद भी प्रासंगिक हैं। समय-समय पर अनेक विद्वान् इनकी व्याख्या भी लिखते रहे हैं, किन्तु कतिपय विश्वविद्यालयी विद्वान् मित्रों की पारस्परिक चर्चा के दौरान प्रथम नियम में अद्वैत की गन्ध सूंघने के कारण एक सम्मान्य मित्र की प्रेरणा पर अतिसंक्षेप में विचार प्रस्तुत है।

प्रथम नियम है-''सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।'' नियम पर उपस्थित शंका के समाधान तक पहुँचने के लिए आवश्यक है कि नियम पर प्रतिपद विचार कर लिया जाए। प्रकृत नियम के तीन खण्ड किए जा सकते हैं-**१.** सब सत्यविद्या। **२.** जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं। **३.** उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

प्रथम एवं द्वितीय खण्ड के मध्य पठित 'और' पद समुच्चयार्थक है। इसी कारण तृतीय खण्ड, प्रथम खण्ड के साथ व द्वितीय खण्ड के साथ अन्वित होकर दो बातें स्पष्ट करता है-**(अ)** सब सत्यविद्याओं तथा **(ब)** विद्या से ज्ञेय सभी पदार्थों का आदिमूल-स्रोत-आधार परमेश्वर है। वैसे तृतीय खण्ड को प्रथम एवं द्वितीय खण्ड के साथ पृथक्श: भी पढ़ा जा सकता है। तब यह खण्ड होंगे-**१.** सब सत्यविद्या का आदिमूल परमेश्वर है। **२.** जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हें, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

इस प्रकार वाक्य रचना करने पर अर्थ तो अपरिवर्तित रहता है, किन्तु शब्द गौरव बढ़ जाता है। महर्षि द्वारा निर्मित नियम मूलरूप में रहने पर ('और' इस समुच्चयार्थक पद के रखने मात्र से) अर्थ तो सुरक्षित है ही, शब्द लाघव के साथ पुररुक्ति भी नहीं होती है। अत: नियम निर्दुष्ट और अपरिवर्त्य है।

नियमस्थ '**सत्यविद्या**' इस समस्त पद में विद्या से पूर्व सत्य विशेषण है। इसका तात्पर्य है कि केवलमात्र सत्यविद्या का ही आदिमूल परमेश्वर है। महर्षि दयानन्द तृतीय नियम में वेद को सब सत्यविद्याओं का पुस्तक ('वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है') घोषित करते हैं। महर्षि का स्पष्ट अभिमत भी स्मरणीय है कि-वेद ईश्वरीय ज्ञान है। अत: तृतीय नियम में वेद को सत्यविद्या का पुस्तक कहने तथा प्रथम नियम में सत्यविद्या का आदिमूल परमेश्वर को मानने से यहां वेद का अपौरुषेयत्व भी ध्वनित हो रहा है। ऐसी विद्या जिसे सत्य कहना सम्भव न हो, परमेश्वर उसका आदिमूल नहीं होगा। क्योंकि विद्या-(विद्+क्यप्+टाप्) का अर्थ है-ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान (वा.शि.आप्टे, पृ. ९३५) तथा समझना (वही, पृ. १०६)।

विद्या का एक अर्थ 'शास्त्र' भी है। तद्यथा-

स्पृक्ज्ञानद्योश्च विद्या तु शास्त्रविज्ञानयोरपि।
शैवागम प्रसिद्धेषु तत्त्वभेदेषु केषुचित्।।
मन्त्रेषु चाप्यथासत्यां.....।

-नानार्थार्णव संक्षेपे, द्व्यक्षरकाण्डे स्त्रीलिंगाध्याये, ७६-९७।

विद्या जहां ज्ञान का बोधक है, वहीं अवगम-समझना का भी। इसी प्रकार 'विद्या' पद से सीखना, समझना, जानना का बोध होता है। लोक में देखा जाता है कि अनेक ऐसे ज्ञान हैं, जो दूसरों को प्रताड़ित करने धोखा देने, ठगने के लिए प्रयुक्त होते हैं, और इन्हें मनुष्य सीखते भी हैं। चोरी करना, जेब काटना, ताला-शटर काटना, गोली मारना आदि और वह भी इस प्रकार कि उनकी अंगुलियों आदि के निशान तक न उठाए जा सकें। यह सब सीखे और सिखाए जाते हैं। विद्या पद से ये भी गृहीत हो सकते हैं, किन्तु विद्या के पूर्व 'सत्य' इस पद के प्रयोग करने मात्र से इन सबका निषेध होकर अर्थ स्पष्ट होता है कि मात्र 'सत्यविद्या' का आदिमूल-आधार स्रोत या उद्गम परमेश्वर है। किसी भी प्रकार की ठगविद्या का मूल ईश्वर नहीं है। अत: नियम से सत्यपद को हटाया नहीं जा सकता।

इसी प्रकार 'सत्यविद्या' से पूर्व '**सब**' पद का प्रयोग है। इसका अभिप्राय है कि-कोई भी सत्यविद्या ऐसी नहीं है, जिसका आदिमूल परमेश्वर न हो यदि 'सब' पद को छोड़ दें, तब परमेश्वर सत्यविद्याओं का आदि मूल होते हुए भी आवश्यक नहीं कि समस्त सत्यविद्याओं का आदिमूल रहे। यह भी सम्भव है कि वह कुछ सत्यविद्याओं का तो आदिमूल हो तथा कुछ ऐसी भी सत्यविद्या होनी सम्भव हैं, जिनका आदिमूल परमेश्वर न हो अथवा आगे चलकर कुछ ऐसी सत्यविद्याएं प्रकट या अभिव्यक्त हों, जिनका आदिमूल-स्रोत-आधर परमेश्वर न हो। महर्षि द्वारा स्थापित-'**सब सत्यविद्या**' पद इस बात का ज्ञापक है कि कोई भी सत्यविद्या ऐसी नहीं है, जिसका आदिमूल परमेश्वर न हो। इस प्रकार 'सब' तथा 'सत्य' यह दोनों पद 'विद्या' से पूर्व प्रयुक्त किए जाने अपरिहार्य हैं। इसी से महर्षि

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

का अभिप्राय सुस्पष्ट होता है।

कतिपय विद्वान् **सत्यविद्या** पद से **ब्रह्मविद्या** का ग्रहण करते हैं। यहां विद्या का विशेषण ब्रह्म करने से अर्थ संकोच होकर मात्र ब्रह्म-विषयक विद्या का मूल ही वह परमेश्वर ठहरता है। जबकि सत्यविद्या से विविध विद्याओं के अन्तर्गत ब्रह्मविद्या भी परिगृहीत हो जाती है।

नियम का दूसरा भाग है-'**जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं।**' वैशेषिक दर्शन के अनुसार द्रव्य-गुण-कर्म-सामान्य-विशेष-समवाय ये छः पदार्थ हैं। पश्चवर्ती दार्शनिकों ने अभाव को सातवां पदार्थ माना है। अब सामान्यतः पदार्थ शब्द से उक्त सातों ही ग्रहण किए जाते हैं। पृथिवी-अप्-तेज-वायु-आकाश-काल-दिक्-आत्मा-मन ये नौ द्रव्य हैं। रूप-रस-गन्ध आदि गुण, उत्क्षेपण आदि कर्म हैं। वस्तुतः गुण आदि द्रव्याश्रित हैं। अतः पदार्थान्तर्गत द्रव्य ही मुख्य है।

यहां सर्वप्रथम विवेच्य है कि-'**पदार्थ विद्या**' पद समस्त पद है अथवा '**पदार्थ**' '**विद्या**' इस प्रकार व्यस्तपद। इसका निर्णय महर्षिकृत 'विद्या' पद के अर्थ को दृष्टिगत रखकर किया जाना उचित होगा। ''वेत्ति यथावत् तत्त्वं पदार्थस्वरूपं यया सा विद्या''-'जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या'-स.प्र.समु.९, पृ.१५३; तथा-''जिससे लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, उसका नाम विद्या है।'' आ.उ.रत्नमाला-१६।

महर्षिकृत वेदभाष्य में एक स्थल (यजु.१५.६) पर मन्त्र के भावार्थ में 'पदार्थविद्या' इस समस्त पद का प्रयोग उपलब्ध है-''विद्वद्भिर्यथा पदार्थ परीक्षणेन पदार्थविद्या विदिता कार्या तथैवान्येभ्य उपदेष्टव्या''। महर्षि ने प्रकृतमन्त्र भाष्य पदार्थ में भूगर्भविद्या, वृष्टिविद्या, अहर्विद्या, रात्रिविद्या का वर्णन किया है। मन्त्र के भावार्थ में उक्त किसी का भी उल्लेख न करके केवल 'पदार्थविद्या' समस्त पद प्रयुक्त है। इससे भावार्थ में प्रयुक्त 'पदार्थविद्या' यह समस्त पद उक्त सभी भूगर्भविद्या आदि का परामर्शक जानना चाहिए।

यदि नियमस्थ पदार्थ विद्या पद समस्त मान लें, तब इससे पूर्व प्रयुक्त 'जो' पद किसका परामर्शक है? पदार्थ विद्या से कौन जाने जाते हैं? उत्तर होगा-पदार्थ। इस स्थिति में यहां नियम के स्पष्टीकरणार्थ 'जो' के अनन्तर एक अन्य 'पदार्थ' इस पद का अध्याहार अपेक्षित है। तब अर्थ बनेगा-'जो पदार्थ पदार्थविद्या से जाने जाते हैं।' यदि पदार्थ (एक अन्य पद) का अध्याहार न करें, तब 'जो' यह पद अनपेक्षित हो जाता है और यदि 'जो' पद रखेंगे, तब अध्याहार अनिवार्य है। वस्तुतः 'पदार्थविद्या' (समस्त पद) से ज्ञेय तो पदार्थ ही होने सम्भव हैं। जब विद्या का अर्थ पदार्थ स्वरूप बोधन है (द्र०-उपर्युद्धृत सत्यार्थ प्र. की पंक्ति) तब पदार्थ विद्या समस्त पद मानने तथा एक अन्य 'पदार्थ' पद का अध्याहार करने से कौन सा अर्थ गौरव हुआ? अतः 'पदार्थ विद्या' इस रूप में व्यस्त पद रखने पर 'जो' पद 'पदार्थ' का परामर्शक होकर अर्थ को सुस्पष्ट कर देता है-**जो पदार्थ (ईश्वर से पृथिवी पर्यन्त) विद्या द्वारा ज्ञेय हैं।**

नियम के तृतीय खण्ड का अभिधेय है-परमेश्वर सब सत्यविद्या तथा विद्या से ज्ञेय सभी पदार्थों का आदिमूल है। यहां '**आदिमूल**' पद विशेषेध विवेच्य है-

आदि-(वि.) 'आ+दा+कि' का अर्थ है-प्रथम, प्राथमिक, आदिम (आप्टे पृ. १४६-७)। शब्दार्थ कौस्तुभ पृ. १८४ के अनुसार.....मूल कारण, मुख्य, प्रधान, सामीप्य.....।

मूल-मव बन्धने (भ्वादि.) धातु से 'मूशक्यबिभ्यः क्लः' (उणादि ४.१०८) 'क्ल' प्रत्यय होने पर 'मूल' शब्द निष्पन्न होता है। महर्षि दयानन्द उणादि व्याख्या में-'मवते बध्नातीति मूलम् इति प्रसिद्धम्' अर्थ करते हैं। इसका अभिप्राय है-जो बांधे रहता है। वृक्षादि की जड़ भी इसीलिए मूल कहलाती है, क्योंकि वह समग्र वृक्ष को बांधे रहती है, एक साथ संयुक्त बनाए रखती है। इससे स्पष्ट है कि **जिसमें पदार्थों के मूल परमाणुओं को एक साथ बनाए रखने का सामर्थ्य है, वह भी मूल कहा जा सकता है। परमेश्वर अपनी व्यवस्था से परमाणुओं को संयुक्त करता है, अतः मूल है।** मात्र उपादान ही मूल नहीं है। पुनरपि संशय का अवकाश न रहे, इसलिए **महर्षि ने आदि विशेषण लगाकर (आदिमूल) उसे उपादान से पृथक् कर दिया है।**

मूल-वृद्धि हेतु-'पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिँ सिषं०' (यजु. १.२५) मन्त्रस्थ 'मूलम्' पद का अर्थ महर्षि-'वृद्धिहेतुकम्'-वृद्धि का हेतु करते हैं।

मूल-प्रतिष्ठा-'मूल प्रतिष्ठायाम्' (भ्वादि.) से भी मूल शब्द सिद्ध होता है। इसका अर्थ है-प्रतिष्ठा या आधार।

मूल-आधार-स्रोत-'मूल+क'-जड़, आधार, नींव, स्रोत-(आप्टे, पृ. ८११)

मूल-कारण-मूल पद कारण अर्थ में भी व्यहृत होता है। तद्यथा-

द्रव्ये मूलं तु नप्यन्ये पुंस्यप्यादिसमीपयोः॥
नक्षत्रभेदे पादे च भूरुहाणां वशीकृतौ।
स्वीये च कारणे चाथ मूल्यं वेतनवस्त्रयोः॥
-नानार्थार्णवसंक्षेपे, द्व्यक्षरकाण्डे, नानालिंगाध्याये, १०१२-१३।

मूल-उपादान-शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. ९३३ में उपर्युक्त नींव, आधार आदि अर्थों के अतिरिक्त-किसी वस्तु का छोर, जिससे वह किसी अन्य वस्तु के साथ जुड़ी हो, तथा उपादान-कारण भी मूल का अर्थ है।

उपर्युद्धृत धातु तथा कोष के आधार पर-प्रतिष्ठा, आधार, स्रोत, जड़, नींव, कारण तथा उपादान-कारण ये मूल शब्द के प्रमुख अर्थ हैं।

यास्क ने मूल पद का निर्वचन-''मूलं मोचनाद्वा मोषणाद्वा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मोहनाद्वा'' (निरुक्त ६.३) किया है। एतदनुसार मूल पद 'मुच्लृ मोचने' (तुदादि), 'मुष स्तेये' (क्र्यादि), 'मूष स्तेये' (भ्वादि) तथा 'मुह वैचित्ये' (दिवादि) धातुओं से भी निष्पाद्य है।

किसी पदार्थ का आधार या कारण उसका मूल कहा जा सकता है तथा उस पदार्थ का प्रथम-प्राथमिक या आदिम आधार अथवा कारण (निमित्त) उसका आदिमूल होगा। जिस प्रकार घट-घड़े का आधार अथवा कारण/उसकी उत्पत्ति के निमित्त तीन कहे जा सकते हैं-**१.** घट का मूल मिट्टी। **२.** मिट्टी को घड़े का स्वरूप देने वाला कुम्भकार। **३.** मिट्टी का घड़े का स्वरूप देते समय कुम्भकार द्वारा प्रयुक्त साधन-दण्ड, चक्र आदि।

दार्शनिक दृष्टि से इन्हें क्रमशः उपादान, निमित्त तथा साधारण कारण कहा जाता है। इनमें घड़ा मिट्टी का ही रूपान्तरण है। मिट्टी के गुण ही घड़े के गुण हैं। घट परिमाणात्मक मिट्टी उससे पृथक् नहीं रह सकती। इसी प्रकार पट एवं तन्तु हैं। किन्तु मिट्टी को घड़े का स्वरूप देने वाला कुम्भकार दोनों से पृथक् है, उसके चेतना आदि गुण भी घड़े से पृथक् हैं। इसे निमित्त-कारण कहा गया है। दण्ड-चक्र आदि साधारण कारण हैं। वस्तुतः उपादान कारण व उत्पाद्य वस्तु में अभेद है, इसे अद्वैत कहना भी सम्भव है, क्योंकि दोनों उतने अंश में (परिमाणात्मक दृष्टि से) अभिन्न हैं, किन्तु कुम्भकार घड़े तथा जुलाहा कपड़े से सदैव भिन्न है। इस प्रत्यक्ष (भिन्नता) का अपलाप संभव नहीं है।

महर्षि द्वारा नियम में ईश्वर को सत्यविद्या तथा विद्या से ज्ञेय पदार्थों का आदिमूल कहने से ईश्वर तथा पदार्थ में अद्वैत की सत्ता देखना पूर्णतः भ्रान्तिमूलक/अतथ्यात्मक है। ईश्वर को यहां इन पदार्थों का मूल-मूलकारण अर्थात् उपादान नहीं कहा गया है। महर्षि के मन्तव्य अभिमत दार्शनिक दृष्टि को सामने रखकर ही परीक्षा के योग्य हैं। महर्षि के अनुसार इन **पदार्थों का मूल तो प्रकृति है।** इसे सत्त्व-रजस्-तमस् तथा कहीं परमाणु रूप कहा गया है। पदार्थों का मूल-परमाणु जड़ होने से स्वयं अक्रिय है। (विस्तार के लिए सांख्य एवं वैशैषिक द्रष्टव्य हैं।) सर्गारम्भ में इन परमाणुओं का द्व्यणुक, त्र्यणुक (त्रसरेणु) आदि रूप में आयोजन परमेश्वर के ईक्षण सामर्थ्य से उत्पन्न होता है। इसी परमाणु संयोगजनक कर्म से वायु (एक द्व्यणुक=१२० परमाणु), अग्नि (तीन द्व्यणुक=३६० परमाणु), जल (चार द्व्यणुक=४८० परमाणु) तथा पृथिवी (पांच द्व्यगुण=६०० परमाणु के संयोग से) की उत्पत्ति होती है। इन द्वित्वादि (दो से अधिक संख्या) की उत्पत्ति अपेक्षा बुद्धि (अयमेकः अयमेकः) से होती है। बिना अपेक्षा बुद्धि के एकत्वाश्रय अणु में द्वित्वादि की उत्पत्ति सम्भव न होने से द्व्यणुक आदि नहीं हो सकते। इन द्व्यणुक आदि के संयोगजनक कर्म से ही पदार्थ उत्पन्न होते हैं। सृष्टि से पूर्व केवल ईश्वर ही इस कर्म को करता है। अतः अणु आदि के जगत् का मूल (उपादान) होते हुए भी परमेश्वर आदि मूल (निमित्तकारण) है। महर्षि का एतद् विषयक मन्तव्य स.प्र.समु. ८ तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में देखना चाहिए।

'आदिमूल' पद से अद्वैत की गन्ध या ईश्वर के उपादान कारण की कल्पना करने वाले विद्वान् यह भूल जाते हैं कि **स्पर्शाश्रय द्रव्य ही द्रव्य को उत्पन्न कर सकते हैं।** जैसे-मृत्तिका (स्पर्शाश्रय है, अतः) घट (यह भी स्पर्शाश्रय है।) को उत्पन्न कर सकती है। इसी प्रकार तन्तु पट को उत्पन्न कर सकते हैं, किन्तु **परमेश्वर स्पर्शाश्रय न होने के कारण स्पर्शाश्रय पदार्थों को उत्पन्न नहीं कर सकता।** जैसे कि द्रव्य होते हुए भी मन स्पर्शाश्रय न होने से समान जाति के द्रव्य (मन) को उत्पन्न नहीं कर सकता। **अतः परमेश्वर मूल=उपादान न होकर आदिमूल (निमित्तकारण) है।**

निरुक्तकार द्वारा मूल पद के निर्वचन के सन्दर्भ में देखने पर भी स्पष्ट होता है कि परमाणुओं (उपादान) का संहत रूप (पदार्थ) तो दृश्य हैं, किन्तु परमेश्वर अन्तर्हित (छिपा हुआ), न दीखने के कारण अज्ञात सा तथा सृष्टि-वैचित्र्य को दृष्टिगत रखने पर (विद्वानों के लिए) मोहित-मुग्ध तथा (अविद्वानों के लिए) व्यामोहित करने वाला होने से मूल है। सर्गारम्भ से पूर्व प्रथम होने से आदिमूल है।

'मूल प्रतिष्ठायाम्' धात्वर्थ के आधार पर 'मूल' का अर्थ प्रतिष्ठा-आधार भी है। वेद का अन्तः साक्ष्य-''ओ३म्प्रतिष्ठ'' यजु. २.१३ भी है। इसमें ओ३म्-परमेश्वर को जगत् की प्रतिष्ठा-आधार कहा है। आदिमूल कहने का अभिप्राय एक अन्य मन्त्र के सन्दर्भ में भी द्रष्टव्य है-

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसत सदजायत।। ऋ. १०.७२.२

मंत्र में 'अजायत' क्रिया का कर्त्ता ही आदिमूल है, क्योंकि सत् (व्यक्त) का मूल (उपादान) तो असत् (अव्यक्त) है। इस असत् को सत्, अव्यक्त से व्यक्त अवस्था में लाने वाला परमेश्वर ही आदिमूल है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि प्रथम नियम महर्षि दयानन्द की सूक्ष्मेक्षिका का निदर्शन है। इसमें किसी अक्षर-मात्रा-शब्द परिवर्तन का अवकाश नहीं है। साथ ही यह **महर्षि के दार्शनिक आधार-त्रैतवाद का पोषक है।** इसमें जगत्-पदार्थ, पदार्थों का ज्ञाता जीव तथा इन पदार्थों अर्थात् जगत् को वर्तमान स्वरूप कारणावस्था से कार्यावस्था में पहुँचाने वाला **आदिमूल (निमित्तकारण)** परमेश्वर वर्णित है। विस्तारमय के कारण समर्थक मंत्र, महर्षि वचन तथा अन्य प्रमाण उद्धृत करने में अत्यधिक संकोचपूर्वक विषय प्रतिपादन का विनम्र प्रयास किया है।

-३०/२, सै. ४, जागृति विहार, मेरठ,
दूरभाष-९८३७३७७९३८

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

॥ ओ३म्॥

योग-साधना शिविर

(दि. १६ से २३ जून २०१३। १६ जून को शाम ४ बजे तक पहुँचना है।)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हों, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हों, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर के दिनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य संपर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अंदर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा।

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५००-१००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था उपलब्धता व पूर्व सूचना के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बरतन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएं साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अंतिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

Web Site :- www.paropkarinisabha.com : मार्ग : **E.mail address:- psabhaa@gmail.com**

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

हमारी केरल यात्रा-ऋषि मेला पर उससे भी कुछ पहले केरल में सोत्साह वैदिक-धर्म प्रचार तथा जाति-सेवा में जुटे आर्यवीरों ने श्री धर्मवीर जी आर्य को तथा मुझे केरल आने का निमन्त्रण दिया। मुझे तो वैसे ही ठण्डी अत्यधिक लगती है, परन्तु इस आयु में दूर की यात्रा और वह भी जनवरी मास में तो मेरे लिये अतिकठिन है, तथापि केरल वालों के प्रेमबन्धन, अनुरोध तथा श्रीयुत डॉ. धर्मवीर जी के साथ होने से मैंने भी उन्हें स्वीकृति दे दी। श्री धर्मवीर जी की जीवन सङ्गिनी भी साथ गईं। श्रीयुत राजवीर जी आर्य का भी आरक्षण करवा दिया था, परन्तु किसी विशेष कारण से वह साथ न निभा सके। श्री धर्मवीर जी की यह चौथी केरल यात्रा थी। हर बार ज्योत्सना जी भी साथ रहीं। केरल में वैदिक-धर्म प्रचार के लिए जाते हुए मुझे पचार वर्ष हो गये हैं। यह मेरे केरल से सम्बन्धों का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। धर्मवीर जी ने भी सदूर दक्षिण में प्रचारार्थ लम्बी यात्राओं पर बहुत समय लगाया है। धन तो फूँक ही रहे हैं। उनके त्याग तथा धर्मानुराग से आर्यजन विशेषरूप से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

दोनों ने यात्रा में मेरा बहुत ध्यान रखा। लौटते समय में वहाँ से अकेला आया। धर्मवीर जी छत्तीसगढ़ समय दे चुके थे। मैं वहाँ घायल हृदय लेकर गया। वहाँ नरेन्द्रभूषण और उसके परिवार की मैंने तथा मेरे कृपालु सहयोगियों ने सब प्रकार की सहायता की। बताने लगूँ तो आर्यजन चकित रह जायें। स्वामी आत्मानन्द जी के केरलीय शिष्य श्रीयुत परमेश्वरण जी ने उसके तथा उसके पुत्र के कर्मों के कारण उसे धृतराष्ट्र की उपाधि देकर सम्मानित किया। हमारे द्वारा क्रय किये गये धर्मस्थान 'महर्षि दयानन्द भवन' को ही उसने तथा उसके बेटे ने हड़प लिया है। यह कहानी तो फिर कभी बताई जावेगी। वहाँ से लौटने पर नरेन्द्रभूषण महोदय के विद्यार्थी जीवन के साथ व एक निष्काम सहयोगी आचार्य नन्दकिशोर जी ने वहाँ का यात्रा वृत्तान्त कुछ जानना चाहा। मैंने संक्षेप से उन्हें जानकारी दी, तो वह सन्तुष्ट होकर बोले कि भरपूर सहायता लेकर भी लेखनी व वाणी के धनी नरेन्द्रभूषण ने जानबूझकर किसी को भी आर्यसमाज से जुड़ने ही न दिया। जो उसे पढ़-सुनकर आर्यसमाज से जुड़े भी, उनमें से कुछ अब संगठित होकर धर्म-प्रचार करने में लगे हैं, परन्तु उनमें से आज एक भी उसके नाम की चर्चा नहीं करना चाहता। हम भी विवश थे। मुझे डर था कि यदि इसे कुछ खरी-खोटी सुनाई, तो मरने से पूर्व आर्यसमाज तथा जाति को हानि पहुँचाने के लिए कोई अनर्गल लेख या पुस्तक न लिख जावे। इस कारण को पहली बार मैंने केरल में प्रकट किया। उसकी पत्नी व बेटा तो अब एक और माता की एजेन्सी ले चुके हैं। हाँ! आर्यसमाज में भी एक-आध को शिकार बनाकर अपना खेल खेलने में लगे हैं।

आर्यजनता को यह जानकर बड़ा हर्ष होगा कि वायक्कुम सत्याग्रह तथा मोपला अत्याचारों, हत्याकाण्ड के पश्चात् पहली बार केरल में वहीं से धर्मप्रचार के लिए एक लाख रुपये की राशि से पं. लेखराम जी के मिशन का बिगुल आर्यवीरों ने बजा दिया है। हमसे एक पैसे की भी सहायता लिये बिना वे कई पुस्तकें आप अथवा प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित करवा चुके हैं। कुछ इस समय प्रेस में हैं। 'वेद विद्या प्रतिष्ठान' नाम के ट्रस्ट द्वारा प्यारे ऋषि का वेदभाष्य अगले ऋषि मेला तक छप जावेगा। इस मलयालम यजुर्वेद-भाष्य का विमोचन केरल में तथा लोकार्पण अजमेर में होगा। इस बार श्रीमान् राजू पुंजार जी वानप्रस्थी की पुस्तक 'वेद क्यों?' का विमोचन करने का गौरव मुझे ही प्राप्त हुआ।

परोपकारी में पहले यह जानकारी दी जा चुकी है कि वानप्रस्थी जी के सांख्य के मलयालम भाष्य को एक ही वर्ष में दो बार छापना पड़ा। इसे एक प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान ने प्रकाशित किया है। इसी संस्थान ने उनका मलयालय में योगदर्शन का भाष्य प्रकाशित किया है। अब तीसरे दर्शन का भाष्य वानप्रस्थी जी प्रेस में देने वाले हैं। छह उपनिषदों का वैदिक-भाष्य छप चुका है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पूज्य उपाध्याय जी ने केरल को अपने तप से सींचा। स्वामी सर्वानन्द जी के आर्शीवाद से केरल वैदिक मिशन ने वहाँ पूरी शक्ति से सेवा की। प्रभु कृपा से अब खेती लहलहाती दिखाई देगी।

स्वामी आत्मानन्द जी के वयोवृद्ध शिष्य श्री परमेश्वरन् नब्बे को पार करके थोड़ा समय पहले चल बसे। जाने से पूर्व यह आदेश देकर गये कि ऋषि दयानन्द जी के मिशन को फैलाओ। उनका संक्षिप्त जीवन परिचय तथा केरल में वैदिक धर्म प्रचार का इतिहास-आर्यसमाज की सेवाओं-खट्टे-मीठे अनुभवों पर लिखने की मुझे आज्ञा दी गई है। यहाँ यह बताना मेरा कर्त्तव्य बनता है कि वर्तमान में वहाँ पर कुछ आर्य सज्जन व युवक जो ठोस कार्य करने लगे हैं, उसका श्रेय आचार्य ज्ञानेश्वर जी, श्री स्वामी ऋतस्पति जी, श्री आचार्य सत्यजित् जी, श्री डॉ. राधाकिशन जी वर्मा, श्री सत्यव्रत जी, श्री डॉ. हरीशचन्द्र जी को भी प्राप्त है। वहाँ काम करने वालों को इन्होंने बहुत प्रेरणायें, सहयोग व समय दिया है।

शंकर की धरती पर अब देवियाँ वेद ऋचायें गाती हैं। एक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सभा में मान्या ज्योत्सना जी ने वेद ऋचाओं का मधुर गान किया। धर्मवीर जी तथा मैं देवियों से अधिक सम्पर्क नहीं कर सकते थे। हमें मर्यादा की रेखा का ध्यान था। इस कार्य को ज्योत्सना जी ने सम्भाला। मैंने तथा धर्मवीर जी ने वहां भाषण देने की बजाय सम्पर्क साधने, संगठन को सुदृढ़ करने तथा युवकों को खींचने में अधिक शक्ति लगाई। वहाँ यह टिप्पणी तो सुनने को मिलती ही रही ''जिज्ञासु जी को युवक खोजते हैं और यह युवकों को खोजते हैं।'' धर्मवीर जी के आने के एक दिन बाद मैं आया। एक दिन में भी बहुत कुछ प्राप्ति हुई।

परोपकारिणी सभा के साथ-परोपकारी परिवार वहाँ वृद्धि पर है। अब वे लोग श्रद्धा से सभा से जुड़ चुके हैं। 'वेद विद्या प्रतिष्ठान' भी परोपकारिणी सभा से जुड़कर कार्यरत हैं। वहाँ के एक आर्य पुरुष को दूषित प्रवृत्ति के कई समाज द्वेषियों ने यह कहा कि आप इस प्रतिष्ठान को आर्थिक सहयोग न करें, परन्तु वे जी जान से सहयोग कर रहे हैं। वहाँ हमारे कर्मठ समर्पित युवक श्री प्रशान्त स्वामी ऋक्षस्पति जी की देन हैं। आप आचार्य नन्दकिशोर जी के आर्शीवाद से जुटे हुए हैं। श्री आचार्य वेणुगोपाल जी ने आचार्य धर्मवीर जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी को तथा मुझे विश्वास दिलाया है कि मैं अब जी-जान से यहाँ के आर्यवीरों के साथ मिलकर कार्य करूँगा।

आई फ़ौज दयानन्द वाली-मैंने वहाँ एक-एक युवक को कहा कि क्षणिक जोश तथा थोथी बातें व भाषण नहीं चाहियें। निरन्तरता से समाज सेवा, जाति रक्षा व वेदप्रचार करो। प्रत्येक ऋषिभक्त को तथा परोपकारिणी सभा के प्रत्येक सेवक को यह सूचना पाकर हर्ष होगा कि वहाँ का एक उच्च शिक्षित युवक सर्विस छोड़कर ऋषि उद्यान में तीन वर्ष वेदाध्ययन करने आ रहा है। धर्मवीर जी ने सर्विस न छोड़ने को कहा। उसकी कम्पनी ने उसे कह दिया है कि वहाँ से वेद विद्या प्राप्त करने पर यहाँ अपनी सर्विस पर आ जाना और वेदसेवा करना। इस ग्रीष्म ऋतु में कई केरलीय युवक अपना ज्ञान बढ़ाने अजमेर आयेंगे। चार युवा अभियन्ता अपनी परीक्षा देकर अजमेर इसी लक्ष्य को लेकर आ रहे हैं। मैं आदरणीय सत्यजित् पर अधिक से अधिक भार (उनके पूछे बिना) लादने में लगा रहा। हमारे वानप्रस्थी श्री राजू जी भी अप्रैल के पश्चात् आयेंगे और कई मास सभा के विद्वानों का लाभ उठायेंगे। कालीकट से मुझे फोन तो कई आये। मिलने कोई नहीं आया। काम तो अपने ढंग से वे भी कर रहे हैं। सैंकड़ों व्यक्ति आबाल वृद्ध, स्त्रियाँ पुरुष मिलकर वैदिक सन्ध्या-यज्ञ करते हैं। विशाल वैदिक पुस्तकालय स्थापित हो चुका है। उनकी कार्यशैली अपनी है, परन्तु कार्य तो दीख ही रहा है। शेष अगले अंक में लिखेंगे।

'स्वामी दर्शनानन्द दर्शन-शताब्दी महापर्व'-यह वर्ष स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का निर्वाण शताब्दी वर्ष है। मैंने परोपकारिणी सभा को सुझाव दिया है। धर्मवीर जी ने सहर्ष स्वीकृति देते हुए कहा, आचार्य सत्यजित् जी से कहिये। वह योजना बनाकर इस कार्य को आगे बढ़ायें। अन्य-अन्य विद्वान् भी स्वामी जी के जीवन तथा साहित्य एवं शास्त्रार्थों के सम्बन्ध में व्यापक तथा प्रामाणिक जानकारी रखते हैं, उनकी सेवाओं का लाभ उठाना चाहिये। स्वामी जी के साहित्य की सूची प्रकाशित करके उनका तर्पण करने मात्र से शताब्दी नहीं मनाई जा सकती। जनोपयोगी व्याख्यान करवाये जायें। उनकी मौलिक युक्तियाँ, शास्त्रार्थ कला की विलक्षणता, पत्रकारिता को उनकी देन, त्याग, निडरता, प्रचार की धुन आदि पर विशेष व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तर, शंका समाधान हों। अजमेर में इस प्रकार के चिन्तन शिविर दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह दिन चलें। विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक ज्ञान देकर धर्मप्रचार करने के लिये स्वामी जी के नाम नामी पर पृथक् शिविर लगाया जावे। उनकी परीक्षा लेकर प्रमाण-पत्र दिये जावें। क्विज टेस्ट (प्रश्नावली देकर) भी छात्रों के लिये रखा जावे। मैं ऐसे १५० प्रश्न-उत्तर सहित किसी धर्मप्रेमी द्वारा छपवाकर नि:शुल्क उपलब्ध करवा दूँगा। दो मास तक निरन्तर ये ज्ञान यज्ञ चले। परोपकारिणी सभा के पास विद्वान् हैं, संन्यासी हैं, गुरुकुल है, समय देने वाले कई सदस्य हैं। मैं भी समय दूँगा। इस यज्ञ से ठोस परिणाम निकलेंगे। दूर-दूर से युवक शिविरों में आयेंगे।

गोविन्दराम हासानन्द ने शताब्दी के उपलक्ष्य में 'दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह' पिछले ऋषि मेला पर प्रकाशित करवाया था। इस ऋषि मेला पर वह भी स्वामी जी का विस्तृत जीवन चरित्र देंगे। आचार्य ज्ञानेश्वर जी दो-तीन भाषाओं में उपनिषद् प्रकाश निकलवा सकते हैं। मैंने कोलकाता आर्यसमाज का इसका बंगला अनुवाद निकालने के लिये लिखा है। परोपकारिणी सभा आचार्य नन्दकिशोर जी की सेवायें इस अवसर पर ले सकती है। श्री लाजपतराय की उपस्थिति से भी शिविर में लाभ होगा। मैं ऋषि जीवन का कार्य कुछ मास में पूर्ण करके इस काम में लग जाऊंगा। यत्न यही है कि कुछ नई खोज करके इस अवसर पर दूँ। आर्यजन इस भ्रान्ति को दूर करें कि स्वामी जी प्रतिदिन एक ट्रैक्ट लिख देते थे। मैंने ऋषि के बलिदान से लेकर सन् १९१३ तक के पत्रों का एक-एक अंक देख लिया है। यह कथन निराधार है।

'दर्शनानन्द प्रदर्शनी'-विदेशी मुस्लिम गवेषक ने स्वामी जी के कुछ पत्र देखने की उत्कट इच्छा प्रकट की। आर्यसमाज ने उन्हें कुछ उत्तर ही न दिया। मैंने कहा अबोहर आकर देख लें। मैं प्रयास करूँगा कि ऋषि मेला पर स्वामी जी के अलभ्य साहित्य की, पुस्तकों, ट्रैक्टों के प्रथम संस्करण की प्रदर्शनी लगाऊँ। मेरे ऐसे कुछ ट्रैक्ट स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द जी ने माँगे थे। अब उनके पुस्तकालय में हिण्डौन सिटी होंगे। आर्यजन कुछ नये रूप में इस शताब्दी को मनायें। दो लेख, चार भाषण देके ही न सन्तुष्ट हो जायें। मैं समझता हूँ कि इससे भावनाशील

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

युवकों को कुछ प्रेरणा मिलेगी ही। आर्यसमाज और देश में लम्बी-चौड़ी बातें बताने वाले युवक तो सर्वत्र मिलेंगे, परन्तु देश-जाति ठोस व निरन्तर सेवा माँगते हैं। इस समय हमारा एक भी ऐसा केन्द्र नहीं, जहाँ आर्यसमाज के आरम्भिक काल के ५० वर्षों के ५० पत्रों के एक-एक, दो-दो अङ्क मिल सकें। सम्भव है दिल्ली में किसी व्यक्ति या सभा के पास हों भी, परन्तु मुझे इसका पता नहीं। कुशलदेव जी भी भागदौड़ करके इसके लिये अबोहर आये थे।

यदि पंजाब में कोई साहसी युवक निकले तो-यदि पंजाब का कोई साहसी युवक निकले और दस और को साथ जोड़ ले, तो शताब्दी पर पंजाब के लिये भी मैं करणीय कार्य इस अवसर पर सुझा सकता हूँ। समय देने वाले सिद्धान्त प्रेमी चाहियें। स्कूलों की माया ने सबको जाल में ऐसा फँसा रखा है, जैसे मकड़ी का उसके द्वारा बुना गया जाल बन्दी बना लेता है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी विषयक लेख-दो सज्जनों ने स्वामी सत्यप्रकाश जी विषयक श्री डॉ. अशोक आर्य जी के एक लेख की दो बातों के बारे फोन करके पूछा है। लेख मैंने भी सुन लिया। लेख के कुछ अंश बहुत अच्छे हैं और दो-तीन बातें स्मृतिदोष के कारण सत्य नहीं, इससे भ्रम फैलता है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी की संन्यास-दीक्षा के समय श्री डॉ. अशोक उपस्थित थे। उदीयमान युवक थे। स्मृतिदोष से लिख गये कि सुमित्रानन्दन पन्त ने तब स्वयं बताया कि स्वामी जी उनके सहपाठी थे। उस दीक्षा समारोह का वृत्तान्त छपा था, मेरे पास है। पन्त जी का तब कोई भाषण नहीं हुआ था। मैं चरण स्पर्श करने गया तो स्वामी जी ने मुझे पास बिठा लिया। तब पन्त जी चरण स्पर्श करने आये। मुझे ऐसे लगा कि इन्हें कहीं देख रखा है, तब स्वामी जी से पूछा, इनका क्या नाम है?

स्वामी जी ने आवाज देकर पन्त जी को भी अपने पास बुलवाकर मेरा नाम बताया। कुछ बातें मैंने उनसे कीं। पन्त जी कहीं पढ़े और स्वामी जी कहीं। पन्त जी स्वामी जी से पाँच वर्ष बड़े थे। सहपाठी होने का प्रश्न ही नहीं। स्वामी जी ने १९२३ में इन्टर किया। तब तक पन्त जी ने बहिष्कार आन्दोलन में कॉलेज ही छोड़ दिया था। स्वामी जी विज्ञान के विद्यार्थी रहे। What life has taught me लेख में श्री स्वामी जी ने अपने सहपाठियों, साथी-संगियों के नाम दिये हैं। पन्त जी जैसे यशस्वी कवि का नाम उस लेख में नहीं। अशोक जी अपने विषय की एक रोचक बात पूरी नहीं दे पाये। स्वामी जी ने 'क्या अशोक जी हजामत बनाना भी जानते हैं' यह इस कारण से कहा कि स्वामी जी एक पुस्तक की जिल्द बनवाना चाहते थे। अशोक जी ने जिल्द बाँधकर दी। स्वामी जी को बहुत अच्छी लगी। उनको लंगोट सिलवाना था। अशोक जी लंगोट स्वयं सी लाये। स्वामी जी जैसा चाहते थे, अशोक जी ने एकदम वैसा ही सीकर दिया। हमें भी पता नहीं था कि यह काम वह स्वयं करके लायेंगे। स्वामी जी इससे बड़े प्रसन्न हुए सो कहा, तुम्हारा अशोक सब काम जानता है। क्या हजामत भी अशोक ही बनायेगा। हम यह सुनकर हँस-हँसकर लोटपोट हो गये। कर्मठ व सेवाभावी तो अशोक जी आरम्भ से ही हैं। 'प्रतिबिम्ब' छठी कक्षा में नहीं लिखा था। यहाँ अशोक जी भूल कर गये। अब आर्यसमाजी बिना जाँच के एक बात को दोहराने के अभ्यस्त हो गये हैं, सो मैंने प्रश्नकर्त्ताओं के समाधान का यहाँ कुछ प्रयास किया है। वास्तव में संस्मरण लिखने वाला या तो नित्य डायरी लिखता हो या फिर उसकी स्मृति बहुत अच्छी हो। ये दोनों गुण पं. इन्द्र जी में पाये जाते थे। वैसे बहुत अच्छी स्मरण शक्ति वाला भी कभी-कभी चूक कर जाता है। मेहता जैमिनि जी तथा पं. इन्द्र जी भी अपवाद रूप में चूक कर जाते थे। मुझसे जब कभी चूक होती है, तो मैं जताने पर निःसंकोच भूल स्वीकार करके सुधार करने के लिये तत्पर रहता हूँ।

मुजरम की काव्य-स्वर्गीय श्री हरबंसलाल जी 'मुजरम' पंजाबी के एक सिरमौर कवि और आर्यसमाज के यशस्वी कर्मठ विद्वान् सपूत हुए हैं। वे तीन भाषाओं के कवि तथा सिद्धान्त मर्मज्ञ थे। उनके तीन बेटे पक्के ऋषिभक्त-पितृभक्त निकले। विशेष जी तो बस विशेष ही हैं। प्राचार्य रमेशचन्द्र जीवन जी भी मुजरम जी के (Fan) दीवाने रहे हैं। विशेष से जीवन जी बड़ा स्नेह करते हैं। कुछ जीवन जी की प्रेरणा और कुछ स्वयं स्फूर्ति से विशेष जी ने अपने पिता श्री को आर्यसमाज की कविताओं का एक संग्रह (सभी नहीं) भव्य साज-सज्जा से प्रचारार्थ छपने दे दिया है। इसमें तीन भाषाओं की वैदिक धर्म विषयक चुनी कवितायें होगी। इसकी एक सौ प्रतियां वह भेंट स्वरूप परोपकारिणी सभा को देंगे। मेरी चाह है कि प्रतिभाशाली विशेष मुजरम जी के देश-धर्म सम्बन्धी सारे काव्य के तीन खण्ड और निकाल दें। जब जीवन जी जैसा प्रभावशाली आर्यविचारक उनके साथ हैं, तो फिर कार्य अधूरा क्यों रहे?

शास्त्रार्थ की ऊहा-महर्षि दयानन्द जी महाराज ने शास्त्रार्थ की विद्या का स्तर बहुत ऊँचा किया। मैंने लक्ष्मण जी लिखित ऋषि जीवन का सम्पादन करते हुए इसके कई ठोस प्रमाण दिये हैं। घोर निन्दक रहे लोगों व प्रतिपक्षी शास्त्रार्थ करने वालों ने भी माना व कहा तथा लिखा कि हम सब मिलकर भी जिस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते, स्वामी जी अनेक प्रकार से इसका उत्तर दे सकते हैं। पं. लेखराम जी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी की इस दृष्टि से अद्भुत देन हैं। कई व्यक्ति आर्यसमाज में बोलते लिखते तो बहुत हैं, परन्तु उन्हें विद्या का अनुभव व ज्ञान नहीं। प्रतिपक्षी का उत्तर देने की शास्त्रीय कला को वे जानते ही नहीं। मैंने श्रीराम शर्मा को उत्तर देते हुए महर्षि के विषपान पर लेख पर लेख देकर प्रमाणों व तर्कों के ढेर लगा दिये। तब ठाकुर अमरसिंह जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी को भी कुछ

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लिखने की प्रार्थना की, तो दोनों ने मुझे लिखा–हम ध्यानपूर्वक आपके सब लेख पढ़ रहे हैं। यदि सब लिखने लगेंगे तो हमारा पक्ष निर्बल पड़ सकता है। आप बहुत बढ़िया लिख रहे हैं और जहाँ कुछ सुझाना बताना पड़ेगा, हम आपको बतायेंगे। यह थी बड़ों की बड़ी बात। बड़ों की ऊहा तथा शैली को हम भी यदि अपनायेंगे तो यश व विजय पायेंगे। मैं कई भद्र पुरुषों को देखता हूँ कि वे गडमड तो बहुत करते हैं, परन्तु ऊहा की छाप छोड़कर आर्यसमाज से बीस–तीस कार्यकर्ता नहीं जोड़ सके।

दक्षिण भारत में विधर्मियों ने बड़ी चतुराई से एक कॉलेज में वेद की प्रशंसा करते हुए वेद को निरस्त कर दिया और कुरान को ईश्वर का अन्तिम व पूर्ण ज्ञान सिद्ध करने का प्रयास किया। भारी संख्या में हिन्दू श्रोता सुन रहे थे। निर्जीव निस्तेज सब सुन रहे थे। एक आर्यवीर उठ खड़ा हुआ, उसने उस वक्ता के कथन का प्रतिवाद करते हुए कहा–पढ़िये यह ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, इसमें कुरान की तर्कसंगत समीक्षा है।

मौलाना जो बोल रहा था, चौंका–Are you an Arya Samajist? क्या तुम आर्यसमाजी हो?

युवक बोला–Yes! I am a humble servant of the Arya Samaj हाँ मैं आर्यसमाज का एक छोटा सा सेवक हूँ। मौलाना ने आग उगलते हुए कहा, Arya Samaj is a Communal Organization आर्यसमाज एक कम्यूनल (साम्प्रदायिक) संस्था है। तपाक से पं. लेखराम, पं. रामचन्द्र का नामलेवा बोला, "Yes Arya Samaj is for the welfare of **Human Community, so** we are Communal." हाँ आर्यसमाज मानव जाति (Human Community) का भला करता है, इसलिये हम कम्यूनल हैं। सारे के सारे हिन्दू छात्र लोहे की दीवार बनकर दर्शनानन्द के दुलारे के समर्थन में बोले पड़े। मौलाना की बोलती बन्द हो गई। उस कार्यक्रम के आयोजकों का षड्यन्त्र विफल हो गया। हिन्दू छात्रों के भीतर वीरवर पं. धर्मभिक्षु के भव्य भावों की ज्वाला धधक उठी। इस उत्तर को फिर पढ़िये। यह पं. रामचन्द्र देहलवी की ऊहा का नया संस्करण है।

आज बड़ों से हम विनम्र बनकर कुछ सीखते नहीं। बड़ों का कभी नामोल्लेख तक नहीं करते। उन्हीं की सामग्री उठाकर उसको अपने नाम से परोसने से न तो अपना विकास होगा, न ही संगठन सुदृढ़ होगा। हाँ! लीडरी की दुकान कुछ दिन के लिये चल सकती है।

सोचकर–पढ़कर बोलिये, लिखिये–स्वामी विद्यानन्द जी मॉडल टाऊन तथा मान्य कुशलदेव जी के पश्चात् अब तक कई बार कुछ सज्जनों ने मुझसे पूछा है कि सीतारमय्या के कांग्रेस के इतिहास का नाम लेकर प्रायः यह कहने का फैशन सा हो गया है कि ८५ प्रतिशत आर्यसमाजी स्वाधीनता संग्राम में जेल में गये। अपने आप स्वामी को महात्मा लिखने वाले लेखक भी लेखों में ऐसा लिखते रहते हैं। क्या यह तथ्य है? मैंने सबको उत्तर में यही कहा कि इन्हीं लोगों से उस ग्रन्थ की पृष्ठ संख्या व प्रसंग पूछो। कालेपानी गये बन्दियों, फांसी पर चढ़ाये गये वीरों, आज़ाद हिन्द फौज के सेनापतियों की सूची पढ़ जायें, तब पता चलेगा कि इन दिनों के दिल्ली सम्मेलन तक बड़ी–बड़ी सभाओं में कही गई यह बात किसी चतुर व्यक्ति की गढ़न्त व शुद्ध गप्प है। आर्यसमाज की वेदी को मञ्च घोषित करने वालों ने वक्ताओं को अप्रामाणिक मिथ्या भाषण देने का लाईसैंस जारी कर दिया है। आर्यसमाजी अपनी संख्या के अनुपात से स्वराज्य संग्राम में दूसरों से बहुत आगे थे, यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है, परन्तु ८५ प्रतिशत आर्य जेलों में गये यह सत्य नहीं। आर्यसमाज की वेदी सत्य का प्रकाश करने के लिये है, न कि ताली पिटवाने की लालसा से झूठ का प्रचार करने वालों के लिये। मैं ८५ प्रतिशत के उपरोक्त कथन की अधिक विवेचना करूँगा, तो पाठक चौंक जावेंगे। मैंने आर्यसमाजी हुतात्माओं पर लिखते, बोलते व खोज करते हुए सर्वप्रथम वीर रामरखामल के जीवन पर प्रकाश डाला। वह कहाँ जन्मे, यह पंजाब में बताने वाला कोई न मिला। देश में अनेक उन्हें उ.प्र. का मानते थे। मैंने एक बंगाली क्रान्तिकारी के लेख से संकेत पाकर उसे पंजाब का घोषित किया। कालेपानी में यज्ञोपवीत के लिए प्राण देने वाले के जन्म स्थान का पता श्रीयुत धर्मेन्द्र जी ने खोजते–खोजते खोज लिया। मैंने जालन्धर में देशभक्त हाल की सूची न देखी, वैसे जालन्धर के पुराने आर्यों से भी सम्पर्क करके पूछा। धर्मेन्द जी ने जालन्धर की वह सूची भी जाकर देखी। स्वराज्य संग्राम में फांसी का दण्ड जिस साधु को सुनाया गया, वे प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी अनुभवानन्द जी थे। उनका चित्र बहुत खोजा, कहीं नहीं मिल रहा। शिक्षा संस्थाओं की डींग मारने वाले शिक्षा व्यापारियों की कोई संस्था आर्यसमाज के संन्यासी में क्यों रुचि ले?

दयानन्द ग्रन्थमाला–भाग तीन–दयानन्द ग्रन्थमाला का प्रकाशन पहले भी होता रहा है। परोपकारिणी सभा ने इसका एक नया अत्युत्तम संस्करण निकाला है। कागज टाईप, जिल्द सब प्रशंसनीय है। इसमें ऋषिकृत ग्रन्थों के साथ ऋषि के शास्त्रार्थ भी हैं। मैंने शास्त्रार्थ संग्रह के प्रूफ़ एक बार पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। प्रूफ़ तो पढ़े गये, परन्तु मुझे नहीं दिखाये गये। कारण कुछ और नहीं था। केवल तालमेल की कमी कहीं रह गई। इस संस्करण में रामलाल कपूर ट्रस्ट के शास्त्रार्थ संग्रह को ही पुनः मुद्रित करने की भूल से दोष रह गये। 'जालन्धर का शास्त्रार्थ संग्रह' को ही पुनः मुद्रित करने की भूल से दोष रह गये। जालन्धर का शास्त्रार्थ मौलवी अहमद हसन से हुआ था। यह मैंने तड़प–झड़प में दिया था, परन्तु इसमें अहमद हुसैन छपा है। मुसलमानों की ओर से हस्ताक्षर मौलवी मुहम्मद हुसैन महमूद ने किये थे। रामलाल कपूर ट्रस्ट के सम्पादक जी तथा कुछ पहले लेखकों ने यह गड़बड़ कर दी। जिस मुसलमान ने

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

इसे छपवाया उसका नाम भी अशुद्ध सा दिया है। वह मूल प्रति आचार्य सत्यजित् जी की सावधानी से मुझ तक पहुँच गई और नष्ट होने से बच गई। इस में ऋषि की प्रशंसा की गई? मैं इसे सभा में सुरक्षित करवा दूँगा। इसका अपना ही महत्त्व है। कुछ शास्त्रार्थों के नीचे टिप्पणियाँ भी हैं। ये किसने दी हैं? मैं प्रूफ़ देखकर बहुत कुछ बता सकता था। कारण बहुतों के मूल संस्करण मेरे पास हैं। मूल्य आज के युग में बहुत स्वल्प है। इसका विशेष प्रचार होना चाहिये। यदि महत्त्वपूर्ण स्थलों की ओर ध्यान खींचने के लिये टाईप वहाँ स्थूल कर दिया जाता तो बड़ा लाभ रहता। **-वेद सदन, अबोहर।**

मुख की स्वच्छता

एक शोध से पता चला है कि जो गर्भवती महिलाएं अपने दांतों व मसूढ़ों की देखभाल के लिए डेंटिस्ट के पास जाती हैं, उनके समय पूर्व प्रसव का खतरा कम हो जाता है, और इससे दांतों के रोग होने का खतरा भी कम हो जाता है। हांलाकि दांतों व मसूढ़ों के रोग तथा समय पूर्व प्रसव में क्या संबन्ध है, यह अभी पता नहीं चला है, पर पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि मुख की अंदरूनी स्वच्छता इस समय पूर्व प्रसव के खतरे को कम कर देती है। डॉक्टरों ने पूर्व में बताया है कि मसूढ़ों के रोग से प्रोस्टलैडिम और ट्यूमर नैक्रोसिस रसायन बनते हैं, जो कि प्रसव पीड़ा पैदा करते हैं। नए शोध के अनुसार मुंह की स्वच्छता से समय पूर्व प्रसव का खतरा ३४ प्रतिशत तक कम हो जाता है। **सौजन्य-राष्ट्रदूत-०३.०१.२०१२**

आई क्यू टेस्ट की औचित्यता

आई क्यू टैस्ट में फेल होने वालों के लिए राहत की खबर। इंटैलीजैंस अर्थात् बुद्धिमता के अब तक के सबसे बड़े अध्ययन के बाद शोधकर्ताओं ने पाया है कि आई क्यू टैस्ट असल में एकदम बेकार प्रक्रिया है। वैज्ञानिकों ने एक लाख दावेदारों पर १२ टैस्ट किए, जिसमें नियोजन, तर्क संगतता, याददाश्त व ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता पर विचार किया और पाया कि इंटैलीजैंस टैस्ट असल में तीन कारकों से प्रभावित है-अल्पकालिक याददाश्त, तर्क संगतता और वक्तव्य कला। इनमें से किसी एक में अच्छे होने का यह अर्थ नहीं है कि आप अन्य दोनों में भी उतने ही अच्छे हैं। कैनेडा के वैज्ञानिकों ने इस शोध में भागीदारों के मस्तिष्क की जांच भी की और पाया कि जब इन तीनों कारकों की जांच की गई तो मस्तिष्क के अलग-अलग भाग सक्रिय हुए। रिसर्च के अनुसार एक टैस्ट से यह कदापि पता नहीं लगाया जा सकता है कि व्यक्ति कितना होशियार है।

सौजन्य-राष्ट्रदूत-२५.१२.२०१२

बच्चों की भाषा सम्बन्धी समझ

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि बच्चे जन्म से पहले ही भाषा सीखने लगते हैं। अभी तक माना जाता था कि बच्चे जन्म के बाद पहले माह में भाषा की ध्वनि समझने लगते हैं। लेकिन नए अध्ययन से पता चला है कि बच्चे गर्भावस्था के अंतिम दस सप्ताह में भाषा संबन्धी ध्वनि को समझने लगते हैं। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि जन्म के कुछ घंटों में ही बच्चे मातृभाषा और विदेशी भाषा के फर्क को समझ जाते हैं। शोध टीम की प्रमुख व पैसेफिक लूथेरॉन विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रोफेसर क्रिस्टीन मून ने कहा कि ''अब तक यही माना जाता था बच्चे अपनी मां को सुनकर भाषा समझते हैं, पर अब पता चला है कि वे गर्भ में ही भाषा का ज्ञान लेना शुरु कर देते हैं। **सौजन्य-राष्ट्रदूत-०५.०१.२०१३**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सृष्टि संवत् और स्वामी दयानन्द

-शिवनारायण उपाध्याय

स्वामी दयानन्द सरस्वती के बाद उनके शिष्यों में प्रमुख पं. लेखराम आर्य पथिक ने 'तारीख-ए-दुनिया' दो भागों में लिखा। पहला भाग १८९० ई. में लिखा गया और दूसरा भाग १८९५ ई. में लिखा गया। दोनों भाग लिखने के एक-एक वर्ष बाद प्रकाशित भी हुए। बाद में श्री गोविन्दराम हासानन्द संस्था के संस्थापक श्री गोविन्दराम ने इसे 'सृष्टि का इतिहास' के नाम से उर्दू से हिन्दी में अनुवाद कराकर अमर स्वामी परिव्राजक से भूमिका लिखवाकर प्रकाशित किया। आर्य पथिक लिखते हैं कि आर्यावर्त के विद्वान् जिस प्रकार कि वे विद्या की उन्नति में तत्पर रहे, उसी प्रकार संवत् के नियत करने और ऐतिहासिक समाचारों की जांच पड़ताल में भी सबसे अधिक धन्यवाद और प्रशंसा के योग्य हैं।

उनके सम्पूर्ण निरीक्षण वैज्ञानिक मूल पर निर्भय होने से पत्थर की लकीर हुआ करते थे। उनके पास विद्वत्ता का एक स्रोत था, जिसे वेद कहते हैं। वेद के अनुसार सृष्टि प्रवाह से अनादि है। सृष्टि तथा प्रलय क्रम से होते रहते हैं। सृष्टि उत्पत्ति से एक कल्प अथवा एक सहस्र चतुर्युगी तक चलती रहती है। यह काल चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष का होता है।

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
अथर्व.८.२.२१

सृष्टि की स्थिति का हिसाब इस प्रकार है-दस हजार सैंकड़ा अर्थात् १० लाख तक शून्य देने के बाद २३४ क्रम से लगाते हैं। इस प्रकार यह संख्या ४३२०००००० वर्ष बनती है। फिर उन्होंने सूर्य सिद्धान्त के तीन श्लोक लिखकर बताया कि इकहत्तर चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है और एक सहस्त्र चतुर्युगियों तक यह सृष्टि विद्यमान रहती है। इस काल का नाम ब्रह्म दिवस है, इतने ही समय तक उसकी रात्रि भी होती है। यहाँ यद्यपि १५ संधियों के विषय में भी चर्चा है, परन्तु उन्होंने अपने द्वारा की गई काल गणना में उसे स्थान नहीं दिया है। महामुनि वेदव्यास ने भी इस विषय में भीष्म पर्व में लिखा है-

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद् ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रां तां तेऽहोरात्रविदो जनाः।
(महाभारत भीष्मपर्व अ० ३२ श्लोक १७)

एक हजार चतुर्युगी का ब्रह्मदिन होता है और उतनी ही उसकी रात्रि है, जिसे ब्रह्म अहोरात्र कहते हैं अर्थात् बड़ा दिन और बड़ी रात। राय बहादुर पं. श्री निवास जी ने भी इसे स्पष्ट रूप से प्रकाशित किया है। उन्होंने गणित द्वारा सृष्टि की आयु को विभाग द्वारा इस प्रकार लिखा है-

१.छः गत मन्वन्तरों का समय १,८४,०३,२०,००० वर्ष **२.** सातवें मन्वन्तर की २७ चतुर्युगियों का काल ११,६६,४०,००० वर्ष, **३.** अट्ठाईसवीं के गत तीन युगों का समय ३८,८८,००० वर्ष, **४.** वर्तमान कलियुग का गत समय (सन् १८९० ई. में) ४९९० वर्ष **५.** सर्वयोग सृष्टि संवत् (१८९० ई. में) १,९६,०८,५२,९९० वर्ष, सन् १८९० से २०१३ तक का काल १२३ वर्ष **६.** सर्वयोग सृष्टि संवत् (२०१३ ई. में) १,९६,०८,५३,११३ वर्ष।

पण्डित लेखराम ने इसे इस प्रकार बताया-

प्रथम सारणी ब्राह्मदिवस और शाकाशालिवाहन के गणितानुसार-१. ब्राह्मदिन का एक प्रहर १,०८,००,००,००० वर्ष, **२.** दूसरे प्रहर का आधा ५४००, ००, ००० वर्ष **३.** इस कलियुग के आरम्भ तक जो आधे प्रहर से ऊपर हो चुके ३४,०८,४८,००० वर्ष, **४.** कलियुग के आरम्भ से शालिवाहन तक ३,१७९ वर्ष, **५.** शालिवाहन से १८९० ई. तक १,८११ वर्ष, **६.** सर्वयोग अर्थात् आर्य संवत् १,९६,०८,५२,९९० वर्ष **७.** (१८९० ई. से २०१३ ई. तक का काल) १२३ वर्ष **८.** सर्वयोग अर्थात् आर्य संवत् २०१३ ई. तक १,९६,०८,५३,११३ वर्ष

द्वितीय-सारणी मन्वन्तर और शाक शालिवाहन के अनुसार-१. छः मन्वन्तर १,८४,०३,२०,००० वर्ष, **२.** वैवस्वत् के २७ चतुर्युग ११,६६,४०,००० वर्ष, **३.** अट्ठाईसवें के तीन युग ३८,८८,००० वर्ष, **४.** कलियुग के शालिवाहन तक ३,१७९ वर्ष, **५.** शालिवाहन से (१८९० ई. तक) १,८११ वर्ष, सर्वयोग अर्थात् आर्य संवत् १,९६,०८,५२,९९ वर्ष।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पं. लेखराम ने भी स्वामी दयानन्द की सृष्टिकाल गणना को ठीक मानकर उसका समर्थन किया है। इति।

-७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा , राज.

सब मनुष्यों को जिसकी कृपा वा प्रकाश से चोर-डाकू आदि अपने कार्य्यों से निवृत्त हो जाते हैं, उसी की प्रशंसा और गुणों की प्रसिद्धि करनी और परमेश्वर के समान समर्थ वा सूर्य्य के समान कोई लोक नहीं है, ऐसा जानना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.३५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

१४ मार्च को जयन्ती पर विशेष.....

हिन्दी तथा हिन्दुत्व के प्रचारक महात्मा वेदभिक्षु जी

–शिवकुमार गोयल

महात्मा वेदभिक्षु जी एक अनूठे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके हृदय में वैदिक-धर्म तथा हिन्दुत्व के प्रति अगाध निष्ठा ही नहीं थी, अपितु ऐसा तेज और ओज था, जो वैदिक-धर्म को चुनौती देने वाले तत्वों को भस्मीभूत कर डालने की क्षमता रखता था।

आदरणीय वेदभिक्षु जी जब विदेशी ईसाई मिशनरियों के हिन्दुओं के धर्मान्तरण के घातक षड़यन्त्र का समाचार किसी पत्र-पत्रिका में पढ़ते थे, तो उनका हृदय हाहाकार कर उठता था। जब देश के किसी भाग में कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने का समाचार उनकी आंखों के सामने आता, तो उनकी आंखें लाल हो उठती थीं। वे प्राय: कहा करते थे कि सेकुलरिज्म की आड़ में आज भारत के हिन्दू समाज को अल्पसंख्यक बनाने का षड़यन्त्र रचा जा रहा है। यदि हिन्दू संगठनों ने संगठित होकर इसका प्रतिकार नहीं किया, तो भारत का एक और विभाजन होकर रहेगा।

महात्मा जी चाहते थे कि आर्यसमाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा आदि सब हिन्दूवादी दल एकजुट होकर देश के ईसाईकरण व इस्लामीकरण के षड़यन्त्रों को असफल करने की रणनीति बनाएं। हिन्दू महासभा के तेजस्वी नेता प्रो. रामसिंह जी के बीडनपुर स्थित निवास स्थान पर पहुंचकर वे प्रोफेसर साहब से कहा करते थे ''आप ही इस दिशा में कुछ कीजिए। यदि हिन्दू अल्पसंख्यक हो गया, तो भारत दूसरा पाकिस्तान बन जाएगा। आप इस दिशा में पहल कीजिए, मैं इस योजना को सफल बनाने में प्राण-प्रण से जुट जाऊंगा।''

एक बार वे पिलखुआ पधारे तो मेरे पिताश्री भक्त रामशरण दास जी से उन्होंने कहा ''भक्त जी! स्वामी करपात्री जी तथा शंकराचार्यों से संपर्क करके इस समय सबसे पहले हिन्दू संगठन के राष्ट्रीय कार्य को आगे बढ़ाने की योजना बनाई जानी चाहिए।''

आद्य शंकराचार्य जी की जन्मस्थली केरल के कई जिले मुस्लिम बहुल बनाए जा चुके हैं। चारों पीठों के शंकराचार्यों को केरल के गांव-गांव में पहुंचकर इस्लामीकरण के षड़यन्त्र को असफल करना चाहिए।

उस दिन मैंने श्री वेदभिक्षु जी के हृदय में धधकती हिन्दूधर्म की रक्षा की ज्वाला को निकट से देखा था। आर्यसमाज का एक वर्ग 'हम हिन्दू नहीं आर्य हैं, हिन्दू विदेशी शब्द है, हिन्दू किसे कहते हैं'' जैसे प्रश्न उछालता तो वेदभिक्षु जी उन्हें समझाते कि प्राचीन आर्य और हिन्दू एक दूसरे के पर्याय हैं।

हिन्दू किसे कहते हैं, इसका विश्लेषण करते हुए महात्मा वेदभिक्षु जी ने एक बार लिखा था-''भारत के सभी वासी जो इस धरती का वन्दन करते हैं, भारत मां को पूज्य, वन्दनीय और पावन समझ वन्देमातरम् गाते हैं। गंगा-यमुना-सरस्वती की, वेद-गौ-गंगा-गायत्री के प्रति जिनकी निष्ठा है, जो समवेत स्वर में द्वारिका से निकोबार तक की सारी धरती पर फहराते राष्ट्रध्वज के प्रति समर्पित हैं, वे सभी हिन्दू हैं। राम-कृष्ण की गाथाएं सुन जिनका मस्तक गौरव से तन जाता है। प्रताप-शिवा का शौर्य वर्णन जिन्हें नवजीवन देता है। दर्शन-अध्यात्म-आत्मचिन्तन जिनके मानस में अमृत बरसाता है, जो भारत की मिट्टी के प्रत्येक कण पर हजार कोहिनूर न्यौछावर कर सकते हैं, वे सब हिन्दू हैं। हम उन्हें भी हिन्दू कहते हैं, जिनका मानस भारत-पाक युद्ध में भारत की विजय के समाचार से उछलता है, जो खेलों के प्रांगण में भारत की जय ध्वनि पर तालियां बजाते हैं, जिनके घर-आंगन में प्यार के गीत और मिलन के राग स्वयं मचलते हैं। जो गंगा की लहरों पर गूंजते संगीत के आरोहों-अवरोहों पर झूमते हैं, वे शीश कटा सकते हैं, अर्चना में सर्वस्व समर्पित कर सकते हैं, मां की पूजा में जो स्वयं को विस्मृत कर झूम-झूम जाते हों, जो हिमगिरि के मुकुट पर त्रैलोक्य का साम्राज्य भी न्यौछावर कर सकते हों, वे सब हिन्दू हैं।

ऐसे सभी राष्ट्रभक्तों को हम हिन्दू कहकर अपने को धन्य मानते हैं। जो हिन्दू हैं, वे राष्ट्र भक्त हैं। जो राष्ट्रभक्त हैं, वे हिन्दू हैं। हिन्दू शब्द अब न जातिवाचक है, न किसी मत का प्रतीक। भारतीयता का प्रतीक है। वह ध्वज है उस पावन संदेश का, जिसके पीछे मातृभूमि के प्रति सिर कटाने की भावना है।

किन्तु जो हिन्दू नहीं, वह देशभक्त नहीं। मत परिवर्तन होते ही राष्ट्रभक्ति में परिवर्तन आ जाता है। इसलिए हमने संकल्प किया है कि हम भारत में किसी भी देशभक्त को देशद्रोही बन कर नहीं बढ़ने देंगे। विदेशी शक्तियां भारत को हड़पने की चेष्टा में धन-बल से षड़यन्त्र कर रही हैं। किन्तु भारत के देशभक्त उनके कुत्सित चिन्तन को विफल करने के लिए कृत संकल्प होकर जुट गए हैं।

मेरी धरती की पावन माटी को कलुषित करने के लिए हिन्दू को हिन्दू का शत्रु बनाने का प्रयत्न सफल होना क्या हम

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सबके लिए कलंक नहीं है? क्या भौतिक साधनों से ईमान खरीदा जाएगा? क्या भारत का मानस चांदी के टुकड़ों पर बिक जाएगा? क्या देश की धरती के बेटे विदेशियों की गर्हित चालों से विद्रोही बन अपनी मां को मृत्यु की ओर धकेलेंगे?

इन प्रश्नों के साथ हम फिर यही संकल्प दोहराते हैं कि नहीं, अब हम और नहीं रुकेंगे और एक भी हिन्दू को ईसाई या यवन नहीं बनने देंगे। हम हिन्दू हैं-यह राष्ट्रीय स्वर है। हिन्दू सम्प्रदाय विशेष नहीं। हिन्दुत्व राष्ट्र को पवित्र करने वाली गंगाधारा है। यह वह स्वर है, जो मां का बेटा मां को पुकारते हुए कहता है, मां.... मां....! जो मां को मां कहता है, वह हिन्दू है। आओ, हम उसकी वन्दना करें-हम उसकी अर्चना करें। 'राष्ट्रं रक्षाम:' का मन्त्र हिन्दू ही गुंजा सकता है। वही गुंजाएगा और देश को बचाएगा।''

उनके एक-एक शब्द में ओज और तेज प्रस्फुलित होता था। जब वे भाषण देते थे, तो श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर सुनते थे। वे वाणी और लेखनी दोनों के धनी थे। महात्मा जी स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, बलिदानी महाशय राजपाल, स्वातंत्र्य वीर सावरकर, भाई परमानन्द जी के प्रति अनन्य श्रद्धा भावना रखते थे। कांग्रेसियों, कम्युनिस्टों तथा समाजवादियों की हिन्दू विरोधी तथा मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीतियों पर वे लेखनी और वाणी के माध्यम से प्रबल कुठार करने की क्षमता रखते थे। उनके लेखों व भाषणों को कई बार आपत्तिजनक करार देकर मुकदमे चलाए गए, किन्तु वे कभी विचलित नहीं हुए। उनकी सहधर्मिणी आदरणीया पण्डिता राकेश रानी उन्हीं की तरह धर्म व संस्कृति की रक्षा में पूरे दम-खम के साथ सक्रिय हैं।

राष्ट्रीयता के मुख्य प्रहरी, तेजस्वी, निर्भीक पत्रकार, चिन्तक तथा वेदों के अनन्य प्रचारक की पावन स्मृति में मेरा नमन है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

क्या बनाता है इंसान को बुद्धिमान्?

बड़ी खुशी होती होगी आपको जब कोई कहता है कि आप बड़े बुद्धिमान् हैं, आखिर अपनी तारीफ सुनना किसे पसन्द नहीं होता? पर क्या आपने कभी सोचा है कि ये जो बुद्धि है, वो आखिर आती कहां से है? क्या दिमाग के भीतर बुद्धि पहले से ही भरी होती है? इन दिनों हमें किसी भी तरह की जानकारी की जरूरत होती है तो हम फौरन गूगल या विकीपीडिया जैसी वेबसाइटों का सहारा लेते हैं। तो क्या इसका मतलब ये निकाला जाए कि सूचना के ये साधन हमारी बुद्धि को और सम्पन्न बनाते हैं? ये सारे सवाल इसलिए क्योंकि कुछ अध्ययनों से संकेत मिलता है कि हमारा अपना मस्तिष्क ही खुद को जितना प्रभावित करता है, अन्य लोग और गूगल जैसे इंटरनेट की दुनिया के औजार भी इस पर उतना ही असर डालते हैं।

-बी.बी.सी.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सुझाव विषयक विज्ञप्ति

परोपकारिणी सभा द्वारा सन् १९९२ में संशोधित सत्यार्थप्रकाश के रूप में जब ३७वां संस्करण प्रकाशित हुआ तो उससे पूर्व 'परोपकारी' पत्रिका के सन् १९८७ के अक्टूबर-नवम्बर अंक में एक सूचना प्रकाशित करके उसके लिए सभी आर्यजनों से सुझाव मांगे गये थे, किन्तु तब किसी भी व्यक्ति का कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ था। उसके उपरान्त ही परोपकारिणी सभा ने औचित्य के आधार पर उस संस्करण का प्रकाशन करने का निर्णय लिया था।

परोपकारिणी सभा आगामी संस्करण के प्रकाशन से पूर्व विद्वानों से व स्वाध्यायी आर्यजनों से सत्यार्थप्रकाश के सम्पादन के विषय में पुनः लिखित सुझाव आमन्त्रित करती है। **सुझाव तर्क, प्रमाण और तथ्यों पर आधारित तथा संक्षिप्त होने चाहिएं।** परोपकारिणी सभा आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ व्यक्तियों को संवाद हेतु भी सादर आमन्त्रित करेगी। उनकी दक्षिणा आदि का समस्त व्यय सभा वहन करेगी।

सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव परोपकारिणी सभा को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

-डॉ. वेदपाल (संयोजक)
चलभाष-०९८३७३७७९३८

कृपया ''परोपकारी'' पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा ''परोपकारी'' शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।**

-व्यवस्थापक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वरिष्ठ भजनोपदेशक पं. ओम्प्रकाश वर्मा के रोचक व प्रेरक संस्मरण

दयानन्द ने गंगा उलट दई

-इन्द्रजित् देव

सारा विश्व जानता है कि काशी में काशी नरेश ईश्वर नारायण सिंह की अध्यक्षता में कार्तिक सुदि, द्वादशी, १९२६ वि. के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वामी विशुद्धानन्द, पं. ताराचरण तर्करत्न, पं. बाल शास्त्री, पं. माधवाचार्य व पं. राजाराम आदि अनेक पौराणिक पण्डितों से ''मूर्तिपूजा'' विषयक एक ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। इसकी शताब्दी काशी में ही श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के नेतृत्व में धूमधाम व उत्साह से मनाई गई थी जिसमें मैं भी उपस्थित हुआ था। तब पं. प्रकाशवीर शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के प्रधान थे।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक विज्ञापन प्रकाशित करके दूर-दूर तक वितरित कराया गया था। इस शताब्दी के उत्सव पर आर्यसमाज के अनेक प्रतिष्ठित शास्त्रार्थ महारथी व उपदेशक विराजमान हुए थे, जिनमें सर्वश्री पं. बिहारीलाल शास्त्री, पं. ओम्प्रकाश शास्त्री (खतौली वाले), आचार्य ज्योतिस्वरूप जी, अमर स्वामी जी, आ. प्रज्ञादेवी जी, पं. रुद्रदत्त जी (देहरादून वाले), पं. शिवकुमार शास्त्री, सांसद व पं. प्रकाशवीर शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जो उपर्युक्त विज्ञापन वितरित किया गया था, उस में काशी के पौराणिक पण्डितों को सम्बोधित करते हुए लिखा था-''एक सौ वर्ष पूर्व तो यहाँ काशी में तुम्हारे पूर्वज यह न दिखा सके थे कि वेदों में मूर्तिपूजा करने व्यवस्था कहीं पर उल्लिखित है। अब एक शताब्दी पश्चात् तुम में से किसी ने कोई नई खोज कर ली हो व तुम्हें वेदों में मूर्तिपूजा की व्यवस्था कहीं मिल गई हो तो आओ! हम आर्यजन ४ दिन यहाँ काशी में ही रहेंगे। इस बीच शास्त्रार्थ करने की हम तुम्हें खुली चुनौती देते हैं।''

उत्सव में जो भी विद्वान् वेदी पर विराजमान् थे, वे बारी-बारी अपने भाषण में मूर्ति पूजा का इतिहास, इसके विरोध में तर्क व प्रमाण देकर इसकी निस्सारता व हानियों का सविस्तार वर्णन करते थे। वहाँ आ. प्रज्ञा देवी जी ने पौराणिकों को ललकारते हुए कहा-तुम्हें अपने संस्कृत ज्ञान पर बड़ा झूठा अभिमान है। मैं खुली चुनौती देती हूँ कि आप में कोई पण्डित यदि संस्कृत में भी शास्त्रार्थ करना चाहता हो तो संस्कृत में शास्त्रार्थ करने हेतु मैं तत्पर हूँ। ''तत्पश्चात् पं. ओम्प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी का जो प्रवचन हुआ, वह सराहनीय व उल्लेखनीय ही नहीं अद्भुत भी था।

जब मेरी बारी आई तो मैंने महर्षि द्वारा एक सौ वर्ष पूर्व किये एतिहासिक शास्त्रार्थ की बहुत लम्बी चर्चा की। जब ''आप अपना 'मास्टरपीस' गीत सुनाओ''-ये शब्द श्रोताओं की ओर से बार-बार सुनाई देने लगे तो मैंने वेदी पर विराजमान विद्वानों को सम्बोधित करके कहा-''आज पौराणिक शास्त्रार्थ करने आते तो अच्छा था परन्तु वे नहीं आए, न ही आएंगे परन्तु वैदिक धर्म की दुन्दुभि तो आपने भी इस नगरी में फिर सौ वर्ष बाद बजा' ही दी है।'' तत्पश्चात् मैंने पं. बुद्धदेव विद्यालङ्कार जी (=स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज) द्वारा रचित सुप्रसिद्ध गीत 'दुन्दुभि बाज गई' को थोड़ा सा बदलकर सुनाया। मूल गीत के कुछ शब्द इस प्रकार हैं-

दुन्दुभि बाज गई।
हिमगिरि से गंगा बहती है, सारी दुनियाँ यही कहती है-
आज किसी ने हरिद्वार में गंगा उलट दई।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सम्वत् १९२४ में कुम्भ के मेले में पाखण्ड-खण्डिनी पताका गाड़कर वर्तमान वैदिक मोहन आश्रम की तब खाली पड़ी भूमि पर हरिद्वार में पाखण्ड का खण्डन सत्य का मण्डन डटकर किया गया था। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी ने उस सन्दर्भ में यह गीत लिखा था। गंगा हरिद्वार में पीछे हिमगिरि चे चली आती है, परन्तु आज उसमें प्रदूषण है। पौराणिक मान्यताओं की गंगा को पीछे वैदिक मान्यताओं के आदि स्रोत वेद की होगर मोड़ने का शुभ उद्घाटन महर्षि ने हरिद्वार में ही तब किया था। लगभग अढ़ाई वर्ष पश्चात् महर्षि ने यही कार्य काशी में भी वही गंगा बहती है, जो हरिद्वार में बहती थी। महर्षि ने काशी में सन् १८६९ ई. में गंगा को उलट दिया था। क्योंकि पूर्वोक्त शताब्दी सम्मेलन काशी में आयोजित हो रहा था, अत: मैंने उक्त गीत में कुछ शब्दों का परिवर्तन करके यूँ गा दिया-

दुन्दुभि बाज गई।
गूँज उठे गिरि कानन सारे पल गति और भई,
चौंक पड़यो दल दम्भराज को सुन ललकार नई।
हिमगिरि से गंगा बहती है, सारी दुनियाँ यही कहती है-
आ ऋषि ने काशी आकर गंगा उलट दई।

-चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट, यमुनानगर, हरियाणा।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर में प्रीति व संसार में यज्ञ के अनुष्ठान को करते हैं, वैसा ही सब मनुष्यों को करना उचित है।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.३७।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

होली

-डॉ. नरेश चेतन भम्भानी

होली आई, होली आई।
रंग-बिरंगी होली आई।

पेड़ों में नये पत्ते आये।
पेड़ों में नये फूल छाये।
रंग बिरंगे फूल छाये।
धान का पकना हुआ शुरु।
होली आई, होली आई।

हवाओं में धूल सी गुलाल छाई।
मच्छर, मक्खी, रोग आदि भागे।
शंकाओं से मुक्ति पाई।
भूल-चूक की क्षमा मांगी।
प्रह्लाद को भी होलिका में झोंका।
होलिका ने भी प्रह्लाद को खरा सच्चा माना।
तब राजा ने भी क्षमा मांगी।
होली आई, होली आई।

ऋतु ने भी रंग बदला।
सर्दी से भी गर्मी आई।
बीच में भी पतझड़ लाई।
धूल भरी आंधी लाई।
भूल-चूक से बूंदा-बांदी लाई।
होली आई, होली आई।

आम, अमरूद, अनार, एरण्डी,
जंगल-जलेबी में फूल लाई।
वहां गेहूँ, चना, सरसों को।
सेक-सेक कर खाया, बड़ा मजा आया।
पक्षियों की चहचाहट छाई।
सब पढ़ाई में छाये।
मानो सारे रंग छाये।
होली आई-होली आई।

खेलो होली-खेलो होली
होली आई, होली आई।
आओ मिलकर गले लगें।
भूल सब गलतियों की राह।
अब ना करेंगे, फिर ना करेंगे गलतियाँ।
'नरेश' की होली सच्ची टोली।
न दिखती आंख से न सुनती कान से।
ना छुपाती ना खुशबू आती।
कैसी रुचि की होली।
सब जगह रहती सबसे मिल जाती।
सबको जिताती।
'नरेश' की होली में सच्ची होली
होली भोली, गोली चलाती विजय की।
होली आई-होली आई।

-२० आदर्श नगर, अजमेर।

ई-मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com **-व्यवस्थापक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएँ

–रामनिवास गुणग्राहक

मंगलमय सबको सदा, ये भारतीय नववर्ष हो।
भारत में वैदिक संस्कृति का नित्यप्रति उत्कर्ष हो॥
अन्धश्रद्धा से रहित हो धर्म-चिन्तन आज का।
व्यवहार हो परिवार जैसा, भारतीय समाज का।
राजनैतिक पतन रोके, राष्ट्रवादी चेतना।
पीड़ितों के हित हृदय में, सब रखें संवेदना॥
आतंक-नक्सलवाद जैसी क्रूरताएँ दूर हों।
देशद्रोही जनों के सब स्वप्न चकनाचूर हों॥
जातिवादी, क्षेत्रवादी लुप्त हों दुर्भावना।
संकीर्ण स्वार्थों के लिए कोई दे किसी को घाव ना॥
घर-घर रचायें यज्ञ तो, पर्यावरण परिशुद्ध हो।
राष्ट्र के सुविकास का सन्मार्ग ना अवरुद्ध हो॥
वञ्चित-विकल भी उन्नति के शिखर पर चढ़ता रहे।
विश्व में इस देश का गौरव सदा बढ़ता रहे॥
सब आर्यजन रक्षा करें, ऋषिराज के अभियान की।
व्यवहारमय वाणी ही है आधार जन कल्याण की॥
सिद्धान्तजीवी बन जगत् के पथ-प्रदर्शक आर्य हों।
वैदिक मनन, वैदिक वचन, वैदिक हमारे कार्य हों॥
सिरमौर इस संसार का, मेरा ये भारत देश हो।
पूरी करो आर्याभिलाषा आप तो विश्वेश हो॥

–०९९७११७१७९७

ऋषि बोध दिवस पर

–आर.एस.कोठारी

ऋषि के अनगिन उपकारों का,
ध्यान आज मैं धरता हूँ,
'ऋषि बोध दिवस' के अवसर पर,
एक विनम्र आग्रह करता हूँ।

मूर्तिपूजा उन्मूलन हित,
संघर्ष को जारी रखना है,
निराकार ब्रह्म के ध्यान में,
सबको प्रेरित करना है।

वेद-स्वाध्याय अनमोल सम्पदा,
कभी न इसको खोना,
संघर्षों के झोंकों में भी,
कभी न विचलित होना।

जीवन के इस कर्मक्षेत्र में,
अन्धानुकरण मत करिये,
धवल धर्म को धारण करके,
सदा अग्रणी रहिये।

–५० देवी पथ, तख्तेशाही रोड़, जयपुर।

नये संस्करण बिक्री हेतु उपलब्ध

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक का नाम	मूल्य
१. दयानन्द ग्रन्थमाला-३ भागों का १ सैट	५५०.००
२. ऋग्वेद भाष्य भाग-५	२५०.००
३. यजुर्वेद भाष्य भाग-२	३५०.००
४. यजुर्वेद भाष्य भाग-३	२५०.००

उपरोक्त पुस्तकें नई छपकर बिक्री हेतु आ गई हैं, जो पाठकगण पुस्तकें मंगाना चाहें तो कृपया वैदिक पुस्तकालय, केसरगंज, अजमेर से सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, दूरभाष: ०१४५-२४६०१२०

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्मृतिशेष गुरुवर स्वतन्त्रानन्द जी

घटना भारत विभाजन से पूर्व की है। आर्यसमाज स्यालकोट की स्वर्ण जयन्ती मनाई जा रही थी। वक्ताओं का नाम बोलने का विषय तथा समय श्यामपट्ट पर लिखा हुआ था। पूज्यवर स्वामी जी महाराज से पूर्व एक प्रसिद्ध भजनोपदेशक बोल रहे थे, वे बोलते-बोलते पच्चीस मिनट अधिक ले गये। पूज्यवर स्वामी जी महाराज ने पौन घंटा उपदेश करना था, किन्तु समय शेष रह गया था बीस मिनट, अत: पूज्यवर स्वामी जी महाराज ने बीस मिनट ही उपदेश देकर कहा कि जो समय मुझे बताया है तदनुसार भाषण समाप्त कर रहा हूं। यह सुनकर प्रधान तथा मन्त्री ने प्रार्थना की कि महाराज आप पच्चीस मिनट और बोलिये परन्तु पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज यह कहकर बैठ गये कि नियम पालने के लिये बनाए जाते हैं, तोड़ने को नहीं।

दूसरी घटना है इन्दौर नगर की। पूज्यवर स्वामी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा की प्रार्थना पर एक मास का समय प्रदान किया था, सेवक भी साथ था। इन्दौर पहुंचने पर एक प्रतिष्ठित आर्य पुरुष ने पूज्यवर श्री स्वामी जी महाराज से भोजन करने की प्रार्थना की, पूज्यवर स्वामी जी महाराज ने स्वीकार कर ली। मैंने उस आर्य पुरुष को बता दिया कि भोजन १२ बजे करवा देना पश्चात् नहीं करते, यह अवश्य ध्यान रखना। वह विश्वास दिलाकर चला गया, परन्तु वह १२.३० बजे कार लेकर आया, मैंने कहा अब तो नहीं करेंगे। इस पर वह स्वयं जाकर कहने लगा, महाराज थोड़ी सी देर हुई है, भोजन न करना तो अच्छा नहीं है। इस पर स्वामी जी महाराज हंस कर बोले कि कोई व्यक्ति भोजन को कहकर मुकर जाये तो क्या अच्छी बात है? यह सुनकर वह सज्जन भूल अनुभव करके चला गया। पश्चात् आर्यजन समय का पालन दृढ़ता से करने लगे।

तीसरी घटना भारत विभाजन के पश्चात् रोहतक नगर की है। उन दिनों नगर में एक योगी आये हुये थे, उनकी समाधि लगाने की चर्चा चल रही थी। योजनानुसार उसने नगर के दुर्गा मन्दिर के अन्दर एक स्थान में चारों ओर ऊपर भी शीशे लगा मिट्टी से बन्द करके समाधि के लिये एक चौखटा बनवा कर उसमें समाधि लगाई। नगर के सहस्रों नरनारी दर्शन करने जाने लगे। मेरा भी विचार जाने का था, उसी समय दयानन्द मठ में पूज्यवर स्वामी जी ने कहा मेरा जाना ठीक नहीं, इससे पाखण्ड को प्रोत्साहन मिलेगा, लोग प्रमाण देंगे कि आर्यसमाज के संन्यासी भी दर्शन करने जाते हैं, इस प्रकार अन्धविश्वास की परम्परा चलने लगती है। दूसरे दिन ही योगी की पोल खुल गई, जब दम घुटने पर उसने संकेत करके चौखटे के एक कोने में सुराख करवाया। बात यह थी कि उस तथाकथित योगी ने एक सज्जन को प्रलोभन दिया था कि लाउड स्पीकर से प्रचार करने शामियाने लगाने आदि का व्यय वहन करके मेरी समाधि का प्रबन्ध कर दो और जो चढ़ावे आदि से आय होगी वह सब आपकी होगी, परन्तु पाखण्ड की पोल खुलने से उस सज्जन को घाटे का सौदा रहा। तीसरे दिन वही आर्यसज्जन मठ में आये और मुझे कहने लगे कि स्वामी जी महाराज बड़े दूरदर्शी हैं, ऐसे अवसरों पर आर्यों का जाना पाखण्ड को ही प्रोत्साहन देना है।

-स्वामी सदानन्द, दयानन्द मठ, दीनानगर।

डाइटिंग

डाइटिंग के लिए सलाद खाने वाले लोग दूसरों को चॉकलेट, केक और फ्रैंच फ्राइज़ खाते देख अवश्य दु:खी होते हैं। लेकिन अब एक शोध से यह भी पता चला है कि डाइटिंग करने के लिये अधिक वसायुक्त भोजन छोड़ने पर दिमाग पर वही असर होता है, जो नशीली दवाओं के आदी व्यक्ति के दिमाग में नशीली दवा छोड़ने पर होता है। शोधकर्ता स्टेफनी फुलटन ने चूहों पर किए गए अध्ययन के आधार पर बताया कि जो लोग ज्यादा तेल, घी व चीनी वाला खाना खाते हैं, उनके मस्तिष्क की न्यूरो कैमिस्ट्री उन लोगों से अलग होती है, जो स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन खाते हैं। खानपान में अचानक बदलाव करने से अवसाद की संभावना होती है। इतना ही नहीं, इससे तनाव के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। कम वसा वाले भोजन में मौजूद वसा में मात्र ११ कैलरी होती है, वहीं ज्यादा तेल-घी वाले भोजन में मौजूद वसा में ५८ कैलरी होती है।

सौजन्य-राष्ट्रदूत-१ जनवरी, २०१३

मनुष्यों को विद्वानों के सङ्ग वा उत्तम शिक्षा से विद्या को प्राप्त होकर अच्छे प्रकार परीक्षित, शुद्ध किये हुए, शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाने और रोगों को दूर करने वाले जल आदि पदार्थों का सेवन करना चाहिये, क्योंकि विद्या वा आरोग्यता के बिना कोई भी मनुष्य निरन्तर कर्म करने को समर्थ नहीं हो सकता। इससे इस कार्य्य का सर्वदा अनुष्ठान करना चाहिये।-
महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१२।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वैदिक-आध्यात्मिक न्यास का वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं संगोष्ठी

-आचार्या शीतल

पूज्य स्वामी सत्यपति जी के शिष्यों व प्रशिष्यों के द्वारा स्वामी जी की शैली से वैदिक-आध्यात्मिक सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार हेतु आचार्य ज्ञानेश्वर जी की अध्यक्षता में तथा आचार्य सत्यजित् जी के सचिवत्व में नवीन संगठन **'वैदिक-आध्यात्मिक-न्यास'** का गठन किया गया है। वर्तमान में १०० से अधिक सदस्यों वाले इस न्यास का प्रथम स्नेहमिलन २३, २४ फरवरी, ऋषि-उद्यान, अजमेर में आयोजित किया गया था, जिसमें विभिन्न विषयों पर रसप्रद चर्चा-विचारणा हुई। दो दिन चलने वाला यह कार्यक्रम प्रातः-सायं सामूहिक उपासना व सामूहिक यज्ञ के साथ ५ सत्रों के विभक्त था। दूसरे, तीसरे व चौथे सत्र में सत्र-सम्बन्धित विषय के लिये मुख्य-वक्ता के रूप में कुछ वक्ता पूर्व निर्धारित थे। उन्होंने सम्बन्धित विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उनके वक्तव्यों पर श्रोता-वक्ता के बीच प्रश्नोत्तर हुए। पश्चात् श्रोताओं को भी (जो अपने विचार रखना चाहते थे) सत्र-सम्बन्धित विषय पर अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्रदान किया गया। सम्पूर्ण चर्चा-विचारणा बहुत ही सरस व ज्ञानवर्द्धक रही। प्रत्येक सत्र का आरम्भ व अन्त ५ मिनट के मौन-प्रभुस्मरण के साथ हुआ।

प्रथम सत्र के अध्यक्ष आचार्य ज्ञानेश्वर जी तथा संचालक आचार्य सत्यजित् जी थे। इस सत्र में पत्र के माध्यम से न्यास को पू. स्वामी सत्यपति जी के आशीर्वाद प्राप्त हुए। स्वामी जी ने न्यास के गठन को सराहनीय प्रयास बताया तथा न्यास के प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। आ. ज्ञानेश्वर जी ने न्यास का परिचय व उद्देश्य रखे तथा आ. सत्यजित् जी ने दो दिन चलने वाले इस कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। न्यास के कोषाध्यक्ष आ. सत्येन्द्र जी ने आर्थिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सदस्यों के परस्पर परिचय के बाद अन्त में स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती (आचार्य अभयदेव जी, गुरुकुल आमसेना) के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

दूसरे सत्र के अध्यक्ष स्वामी ऋतस्पति जी तथा संचालक आ. भद्रकाम जी थे। सत्र की संगोष्ठी का विषय था-**''कैसे ज्ञात हो कि हमारे पाप-पुण्य कितने-कितने प्रतिशत हैं और कितने-कितने प्रतिशत हो रहे हैं''**? इस विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में आचार्या शीतल जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य आनन्दप्रकाश जी, आचार्य अर्जुनदेव जी तथा आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने अपने विचार रखे।

तीसरे सत्र के अध्यक्ष थे आचार्य आनन्दप्रकाश जी तथा संचालिका थीं आचार्या शीतल जी। संगोष्ठी का विषय था-**''आर्ष विद्वानों का निर्माण अधिक व शीघ्र कैसे हो''**? विषय के मुख्य वक्ता थे-आनन्द जी, आचार्य सन्दीप जी, आचार्य सत्यप्रकाश जी, स्वामी विष्वङ् जी, आचार्य भद्रकाम जी, आचार्य रवीन्द्र जी तथा स्वामी ऋतस्पति जी।

चौथे सत्र के अध्यक्ष आचार्य अर्जुनदेव जी थे तथा संचालक ब्र. अरुण जी। संगोष्ठी का विषय था-**''चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की सृष्टि के बाद होने वाली प्रलय समस्त कार्यजगत् की होती है या उसके कुछ अंशों की''**? विषय के मुख्य वक्ता थे-ब्र. श्रीधर जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी, आचार्या शीतल जी, आचार्य रवीन्द्र जी, आचार्य सत्यजित् जी तथा आचार्य आनन्द प्रकाश जी।

पांचवें सत्र की अध्यक्षता आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने संभाली तथा संचालन आचार्य सत्यजित् जी ने किया। इस सत्र में न्यास की भावी योजनाओं पर विचार किया गया। सदस्य न्यासियों को कार्य वितरित किया गया। आगामी सम्मेलन का स्थान-वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ व समय २१-२३ फरवरी, २०१४, निश्चित हुए।

कुछ सदस्यों ने दो दिन के इस कार्यक्रम में हुए अपने अनुभव व्यक्त किये और अपने अमूल्य सुझावों से न्यास का मार्गदर्शन किया। आचार्य सत्यजित् जी के द्वारा न्यास के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए शान्तिगीत व शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का सुखद समापन हुआ।

वैचारिक क्रान्ति हेतु सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की योजना

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों, आर्यसमाजों व संस्थाओं से निवेदन है कि इस कार्य को सफल बनाने हेतु शीघ्रता से अपना आर्थिक सहयोग परोपकारिणी सभा को भिजवायें ताकि तदनुरूप कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। सहयोग भिजवाते समय **सत्यार्थप्रकाश का प्रचार-प्रसार** शीर्षक लिखना ना भूलें। धन्यवाद।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-आचार्य दिनेश शास्त्री, ऋषि उद्यान, अजमेर। चल दूरभाष-०७७३७९०४९५०, ०९६०२९२१३७३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से २८ फरवरी २०१३ तक)

१. रजनीश कपूर, पीतमपुरा, नई दिल्ली, २. पद्मसिंह चौहान, जालौर, ३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर, ४. राज, अजमेर, ५. सुमेर सिंह राठौड़, जोधपुर, ६. मनोहर कंवर, जोधपुर, ७. सुशीला आर्य, दिल्ली, ८. विश्वास पारीक, अजमेर, ९. रामनिवास झालनी, जलपाई गुड़ी, पश्चिम बंगाल, १०. वीनू प्रकाश मूंदड़ा, भीलवाड़ा, ११. दीपक व साथीगण, रोहतक, हरियाणा, १२. ब्रजमोहन सिंघला, जालंधर केन्ट, १३. अमित सिंघला, जालन्धर केन्ट, १४. गायत्री देवी सरावगी, सिकंदराबाद, १५. नविता अग्रवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़, १६. कमल कान्ता आनन्द, जालन्धर, १७. सुशीला भगत, जालन्धर, १८. गोकुलचन्द भगत, जालन्धर, १९. आशीष सोनम, लुधियाना, २०. ऋषभ भगत, जालन्धर, २१. मनोज कपूर, जालन्धर, २२. नीरू कपूर, जालन्धर, २३. रोहित अग्रवाल, जालन्धर, २४. अवनीश कपूर, पीतमपुरा, नई दिल्ली, २५. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से २८ फरवरी २०१३ तक)

१. राधेश्याम, अजमेर, २. यशोदा देवी, रोहतक, हरियाणा, ३. सुधा मेहरा, अजमेर, ४. बद्रीप्रसाद शर्मा, अजमेर, ५. विरेश सिन्हा, अजमेर, ६. पूनम देवी शर्मा, अजमेर, ७. वेदप्रकाश शर्मा, अजमेर, ८. भूदेव प्रसाद, अजमेर, ९. राधेश्याम गुप्ता, अजमेर, १०. देवकीनन्दन शर्मा, अजमेर, ११. देवदत्त शर्मा, अजमेर, १२. शिवनन्दन शर्मा, अजमेर, १३. ज्ञानदत्त शुक्ल, अजमेर, १४. जगदीश प्रसाद शर्मा, अजमेर, १५. सुभाष गर्ग, अजमेर, १६. रमेश चन्द्र, अजमेर, १७. रमेश चन्द्र शुक्ल, अजमेर, १८. सुरेश चन्द्र गर्ग, अजमेर, १९. राजेन्द्रप्रसाद भटनागर, अजमेर, २०. डॉ. रामजी लाल सिंह, अजमेर, २१. शिशुपाल सिंह भील मीणा, अजमेर, २२. सुरेन्द्र गोयल, अजमेर, २३. ओम प्रकाश दाधीच, अजमेर, २४. मनोज गुप्ता, अजमेर, २५. राम जयसवाल, अजमेर, २६. रामगोपाल सैन, अजमेर, २७. बाबूलाल, अजमेर, २८. कौशल कुमार शर्मा, अजमेर, २९. भूदेव प्रसाद शर्मा, अजमेर, ३०. ललित लोकेश, अजमेर, ३१. श्री धनराज भावी, जोधपुर, ३२. अनिल शर्मा, अजमेर, ३३. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, ३४. रेणु शर्मा, अजमेर, ३५. अनिल गुप्ता, अजमेर, ३६. दयानन्द वर्मा, भीलवाड़ा, ३७. आशीष गुप्ता, सहारनपुर, ३८. सत्यदेव, गुड़गांव, हरियाणा, ३९. राधेश्याम, गुड़गांव, ४०. हरिसिंह, गुड़गांव, ४१. प्रेमलता, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 **बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 **बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
IFSC - SBIN0007959

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नैष्ठिक अग्निव्रत के पत्र का उत्तर एवं लेख की समीक्षा-२

-सत्यजित्

[नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने अपने एक पत्र में परोपकारिणी सभा पर गंभीर आक्षेप किये हैं। यह पत्र उन्होंने आर्यजगत् के अधिकांश विद्वानों व अन्य अनेक अधिकारियों को भी भेजा है। अग्निव्रत जी की आलोचनाओं का इस लेख में उत्तर दिया जा रहा है। एक अन्य लेख में दो मन्त्रों के अन्यों के वेद भाष्य पर आलोचना के साथ उन्होंने उन मन्त्रों का अपना भाष्य भी भिजवाया है। उनका यह लेख आर्य पत्रिकाओं (**सर्वहितकारी** ७-१४ जनवरी २०१३, **सत्यार्थ-सौरभ** फरवरी-२०१३ व **नूतन निष्काम पत्रिका** फरवरी-२०१३) में '**वेदभाष्य की मेरी शैली**' शीर्षक से छप भी चुका है। अतः उनकी आलोचना का उत्तर देना व उनके लेख की समीक्षा करना अपरिहार्य हो गया है। इस लेख पर प्रतिक्रिया व सम्मति सादर आमन्त्रित है।-**संपादक**]

गताङ्क से आगे.....

अपनी बात की सिद्धि के लिए नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। इन प्रमाणों को और अधिक प्रमाणित करते हुए वे इनके अन्त में लिखते हैं, ''**यहां सभी प्रमाण महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के वेद-भाष्य से ही लिए गये हैं।**'' आइये इनके लिखे प्रमाणों की प्रामाणिकता देखें, दयानन्द के अनुकूल रहने की उनकी प्रतिज्ञा की प्रामाणिकता भी देखें। ये प्रमाण महर्षि के वेदभाष्य में मिलते हैं या नहीं यह भी जानें।

१. नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने '**इन्द्र**' शब्द के तीन अर्थ उद्धृत किये हैं, कालविभागकर्त्ता**सूर्यलोकः** (भाष्य ऋ. १.१५.१), विद्युदाख्यो**भौतिकाऽग्निः** (भाष्य ऋ. १.१६.३), महाबलवन्तो **वायुः** (भाष्य ऋ. १.७.१)। ये तीनों अर्थ यद्यपि महर्षि के भाष्य में हैं, पर ये तीनों भिन्न-भिन्न मन्त्रों में भिन्न-भिन्न सन्दर्भों में किये गये हैं। नई वैज्ञानिक शैली में इन्हें एक साथ मिला दिया गया है। अपने आधिदैविक भाष्य १ में नैष्ठिक जी लिखते हैं ''**वह इन्द्र तत्व अर्थात् सूर्य में स्थित बलवान् वैद्युत वायु,**'' क्या महर्षि ने कहीं तीनों को मिलाकर लिखा है? देखिए मिलाने में भी हेरफेर कर दी। ऋ. १.१६.३ में 'इन्द्र' का भाष्य करते हुए जिस विद्युत् अग्नि का कथन है, वह मानव के उपयोग वाली पृथिवी वाली विद्युत् है, इसे ले गये सूर्यलोक में। यहां महर्षि ने स्वयं विद्युत् को कहा है, ये इसे वायु का विशेषण बना रहे हैं-'**वैद्युत वायु**'। क्या महर्षि ने कहीं 'वैद्युत वायु' का उल्लेख किया है? महर्षि के ऋ. १.१६.३ में आये 'इन्द्र' शब्द के भाष्य के नाम पर जो पंक्ति नैष्ठिक जी ने दी है, वह महर्षि के वेदभाष्य में नहीं मिलती। नैष्ठिक जी ने लिखा-''इन्द्रः=विद्युदाख्योभौतिकाग्निः''। महर्षि की पंक्ति है-''(इन्द्रम्) परमैश्वर्यसाधकं भौतिकमग्निम्'', ''विद्युदाख्योऽग्निः'', इन्होंने दोनों को मिलाकर ऐसे प्रस्तुत किया जैसे महर्षि ने भी वैसा ही लिखा हो। किसी के नाम से जब प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं, तो उन्हें वैसे के वैसे लिखना होता है।

नैष्ठिक जी ने विद्युत व वायु को मिला दिया-'बलवान् वैद्युत वायु'। इसी ऋ. १.१६.३ में महर्षि ने विद्युत् के अलावा वायु का भी उल्लेख किया है। दोनों को अलग-अलग माना है-''**भावार्थ**-मनुष्यों को..... **बिजुली तथा जो प्राणरूप वायु** है, उसकी विद्या से पदार्थों का भोग करना चाहिए।'' जिस मन्त्र के भाष्य का प्रमाण नैष्ठिक जी ने दिया, उसी में ये दोनों स्पष्ट ही अलग-अलग कहे हैं, फिर उन्हें मिलाकर इसे महर्षि के अनुकूल कहना कैसे उचित कहा जा सकता है? इसे महर्षि का प्रमाण तो नहीं कह सकते। ऋ. १.७.१ भाष्य में '**इन्द्रं**' शब्द है व महर्षि ने उस का अर्थ '**महाबलवन्तं वायुम्**' किया है। नैष्ठिक जी ने लिखा-'**महाबलवन्तो वायुः**' यद्यपि शब्द वे ही हैं, पर विभक्ति परिवर्तन कर दिया गया। इस मन्त्र में '**इन्द्रः**' शब्द नहीं है, '**इन्द्रम्**' है। प्रमाण देते समय नैष्ठिक जी ने न तो वेद के शब्द को यथावत् रखा न महर्षि के वचन को, दोनों जगह हेरफेर कर दी। यद्यपि तात्पर्य ठीक है, किन्तु इस तरह का लेखन पाठक के मन में यही भाव पैदा करता है कि ये शब्द ज्यों के त्यों वेद व महर्षि के भाष्य में हैं, जो कि मिथ्या है।

ऋ. १.७.१ में तीन बार '**इन्द्रम्**' शब्द आया है। तीनों बार पृथक् अर्थ हैं-**परमेश्वरम्, सूर्य्यम्, महाबलवन्तं वायुम्**। महर्षि यहां भी सूर्य व वायु को पृथक् मान रहे हैं, उन्होंने यहां 'सूर्यस्थ वायु' नहीं कहा। महर्षि ने तीनों के गुणों के ज्ञान से स्तुति करने की बात लिखी। ऐसे में भले ही नैष्ठिक जी ने इन्द्र शब्द के अर्थ महर्षि के वेदभाष्य से लिए हों, पर इनका जो स्वमति से मिश्रण कर दिया, वह महर्षि से प्रमाणित नहीं होता। महर्षि का नाम लेकर अपने मिश्रण को प्रमाणित करना, उसे महर्षि के अनुकूल कहना, उचित नहीं है।

२. नैष्ठिक जी ने दूसरा शब्द लिया '**इन्द्राणी**', यह तो इन मन्त्रों का देवता=प्रतिपाद्य विषय भी नहीं है। देवता '**इन्द्र**' है। ऐसे में 'इन्द्राणी' शब्द का महर्षि कृत अर्थ यहां देना अप्रासंगिक होने से अप्रामाणिक है, व्यर्थ है। इन्द्राणी के अर्थ को फिर वेद मन्त्रों के अर्थ में प्रविष्ट करा देना, मनमानी है, अप्रामाणिक है। दोनों वेद मन्त्रों में 'इन्द्राणी' शब्द नहीं आया है। यदि यहां इन्द्राणी का अर्थ लेना है तो उसका कोई आधार होना चाहिए, प्रमाण होना चाहिए।

३. '**वृषाकपिः**' शब्द का अर्थ भी नैष्ठिक जी ने अपने

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रमाणों में दिया है। इस शब्द पर भी बिन्दु २ वाली बातें लागू होती हैं, अत: यह भी प्रमाण नहीं माना जा सकता। वैसे भी 'वृषाकपि:' शब्द महर्षि के वेदभाष्य में कहीं नहीं आया है। नैष्ठिक जी ने जो महर्षि के नाम से लिखा–''वृषाकपि:=वृषा चाऽसौ कपि:'' यह महर्षि ने कहीं नहीं लिखा। यदि कहीं लिखा होता तो नैष्ठिक जी द्वारा कोष्ठक में उसका उल्लेख कर दिया गया होता। किन्तु यहां संज्ञावाची समस्त शब्द को तोड़कर उसको महर्षि के अनुकूल करने का प्रयास किया गया है। वृषाकपि:=वृषा+कपि। नैष्ठिक जी ने '**वृषा:**' शब्द लिखा है, **विसर्ग युक्त** '**वृषा:**' शब्द न तो इन तीन मन्त्रों के महर्षि भाष्य में है, न ही इन तीन मन्त्रों में। 'वृषा:' के तीसरे अर्थ 'पराशक्तिबन्धक:' को यजुर्वेद भाष्य २.१६ में बताया गया है, किन्तु यहां महर्षि भाष्य में वह नहीं मिलता है, मूल वेदमन्त्र में भी वृषा: या वृषा शब्द तक नहीं है। मिलते-जुलते वृष्ट्या, वशा, वृष्टिम् शब्द तो इस मन्त्र में हैं, पर इन्हें 'वृषा:' या 'वृषा' मानना भ्रान्ति है। जाने-अनजाने यहां भी कुछ हेर-फेर हो गई है।

४. नैष्ठिक जी ने चौथे शब्द '**कपृत्**' का अर्थ लिखा–''कृपृत्=क+पृत् 'पदादिषु मांस्पृत्स्नूनामुपसंख्यानम् (वा. अष्टाध्यायी ६.१.६३) से पृतना को पृत् आदेश। पृतना=सेना (आप्टे शब्दकोष) संग्राम (महर्षि दयानन्द), क:=प्राण: (प्राणो वाव क:-जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण)।'' प्रथम तो महर्षि ने कहीं 'कपृत्' शब्द का अर्थ नहीं किया, ऐसे में इस शब्द को तोड़कर क+पृत् के पृथक्-पृथक् अर्थ करके उसे महर्षि अनुकूल बनाने का असफल प्रयास किया गया। महर्षि ने 'कपृत्' शब्द को इस प्रकार तोड़कर कहीं व्याख्या नहीं की। नैष्ठिक जी द्वारा 'कपृत्' शब्द के '**पृत्**' से '**पृतना**' अर्थ लिया गया, वह भी मनमानी है। व्याकरण का जो वार्तिक प्रमाण रूप में दिया गया, उसे भी बिना समझे मनमानी से बलात् लागू कर दिया गया। वार्तिक में स्पष्ट लिखा है, '**पदादिषु**' **जब पृत् शब्द पदादि में हो।** विचारणीय शब्द '**कपृत्**' **में** '**पृत्**' **पदादि में नहीं है**, ऐसे में इस वार्तिक से पृतना को पृत् आदेश नहीं हो सकता। पर क्या करें? वैज्ञानिक अर्थ करने के आवेग में विवेक टिक नहीं पाता। विज्ञान के चमत्कार से पदादि में न होते हुए भी पृतना को पृत् आदेश हो जाता होगा। नैष्ठिक जी वैदिक साहित्य में कोई एक भी स्थल बतावें जहां पदादि न होते हुए भी पृतना को पृत् आदेश हुआ हो।

जब यहां 'कपृत्' के 'पृत्' से 'पृतना' का ग्रहण हो ही नहीं सकता, तो फिर पृतना के अर्थ बताना व्यर्थ है। पृतना का जो अर्थ किया गया है-सेना व संग्राम, यह क्रमश: आप्टे व महर्षि का अर्थ लिखा है। दोनों अलग-अलग अर्थ हैं, पर विज्ञान की प्रयोगशाला में मिश्रण बनते रहते हैं, अत: भाष्य कर दिया-''प्राणों की सेना अर्थात् धारा Stream एवं उनका संघर्ष interaction"। क=प्राण, पृत्=**पृतना=सेना+संग्राम**। ठीक है, उन्हें पृतना के दो अर्थ दिख रहे हैं, पर क्या कहीं एक ही स्थान पर दोनों अर्थ मिले हुए किसी ने लिखे हैं? यहां प्रमाण क्या है? '**क**' का अर्थ भी जो '**प्राण**' किया गया, वह महर्षि दयानन्द ने कहीं किया है? यदि नहीं तो इसे महर्षि अनुकूल कैसे कह रहे हैं? क्या महर्षि ने अपने वेदभाष्य में कहीं '**क**' का अर्थ '**प्राण**' किया है? यदि नहीं तो फिर 'क' का 'प्राण' अर्थ महर्षि के भाष्य से लिया गया, यह कहना अनुचित है। हां, किसी वैज्ञानिक दृष्टि से यह महर्षि के भाष्य में मिल गया हो, खोज लिया गया हो, तो बात अलग है।

'कपृत्' शब्द को नैष्ठिक जी ने सूर्य-लोक में प्राणों की सेना-धारा व उनके संघर्षण पर घटाया है, इसकी पुष्टि में कोई प्रमाण नहीं दिया। नैष्ठिक जी ने महर्षि के '**संग्राम**' अर्थ को **संघर्षण**-interaction के रूप में ग्रहण किया। क्या महर्षि ने 'संग्राम' शब्द को कहीं इस अर्थ में प्रयुक्त किया है? वास्तविकता तो यह है कि महर्षि ने '**पृतना**' शब्द का '**संग्राम**' अर्थ भी कहीं नहीं किया है। पहले तो यह सिद्ध हो कि महर्षि ने 'पृतना' का 'संग्राम' अर्थ किया है, फिर यह परीक्षा होगी कि क्या **संग्राम** का अर्थ **संघर्षण** किया है? इसे कहते हैं हवाई किले बनाना, बिना तिल के ताड़ बना देना।

प्रथम तो 'कपृत्' शब्द का 'पृत्' अंश 'पृतना' से नहीं बना, अर्थात् यहां 'पृतना' शब्द है ही नहीं। **दूसरा** 'पृतना' शब्द का 'संग्राम' अर्थ महर्षि दयानन्द ने कहीं किया ही नहीं है, उसे महर्षि के नाम से मिथ्या कथन करना, **फिर** संग्राम का कल्पित अर्थ कर देना-**संघर्षण** और इस प्रकार वैज्ञानिक भाष्य की भूमिका बना लेना, इस वैज्ञानिक भाष्य पर महर्षि का ठप्पा लगा देना, विज्ञान का चमत्कार है यह। विज्ञान की नई खोज है यह, यह है वैज्ञानिक शैली। यहां न केवल बिना नींव के मकान बनाया गया है, बल्कि बिना भूमि के नींव भी खड़ी कर दी गई है। बिना नींव का मकान बनाने वाले लोग सुने जाते हैं, पर यहां तो पहले बिना भूमि के नींव भी बना दी गई व फिर उस कल्पित नींव पर बिना नींव का मकान भी खड़ा कर दिया गया। यह है इस भूमिका व पृष्ठभूमि का स्वरूप। यह जनसामान्य को महर्षि दयानन्द के नाम पर मूर्ख बनाने की भूमिका है, ठगने की पृष्ठभूमि है, अपने को वैज्ञानिक चिंतक कहलवाने की चतुराई है।

ऐसा मिथ्या कथन चाहे ज्ञानपूर्वक हुआ हो या अज्ञानता से दोनों ही स्थितियों में ऐसे व्यक्ति का शोधकार्य/भाष्य विश्वास के योग्य नहीं हो सकता। नैष्ठिक जी के कार्य को विद्वानों का समर्थन न मिलने में एक कारण यह भी है। जो कुछ वैज्ञानिक उनका समर्थन कर रहे हैं, उन्हें क्या पता कि ये वेद या वैदिक साहित्य के शब्दों के साथ कैसा खिलवाड़ कर रहे हैं? वैज्ञानिकों को संस्कृत नहीं आती, न वैदिक परम्परा की समझ है। उन्हें इनकी भूमिका व पृष्ठभूमि की वास्तविकता का आभास तक

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नहीं हो सकता, पर सत्य कब तक छुपा रह सकता है?

'**कपृत्**' शब्द को नैष्ठिक अग्निव्रत जी ने सूर्य के सन्दर्भ में घटाया है, अन्य अनेक भाष्यकारों ने मनुष्य=पुरुष के सन्दर्भ में। नैष्ठिक जी ने उन अन्य भाष्यकारों का खण्डन बड़ी कठोरता से किया है। अब देखते हैं कि 'कृपत्' शब्द को स्वयं वेद किस सन्दर्भ में बता रहा है, वेद के अन्त:साक्ष्य क्या कहते हैं? 'कपृत्' शब्द ऋग्वेद के इन दो मन्त्रों के अतिरिक्त अथर्ववेद २०.१२६.१६ व १७ में भी इन्हीं दो मन्त्रों में आया है, वहां ये दोनों मन्त्र ज्यों के त्यों हैं। 'कपृत्' शब्द इनके अतिरिक्त ऋग्वेद १०.१०१.१२ व अथर्ववेद २०.१३७.२ में भी आया है। दोनों स्थानों पर यह मन्त्र ज्यों का त्यों-समान है। मन्त्र है-"**कपृन्नर: कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।.....**" यहां '**कपृत्**' के साथ '**नर:**' शब्द भी आया है। ऐसे में 'कपृत्' शब्द को नर=पुरुष (मनुष्य) के सन्दर्भ में लगाना संगत प्रतीत होता है। चारों वेदों में और कहीं 'कपृत्' शब्द नहीं आया है।

आध्यात्मिक व आधिभौतिक पक्ष में 'कपृत्' का अर्थ बताने के लिए नै. अग्निव्रत जी ने प्रमाण दिये-"कपृत्=कम् सुखनाम (निघंटु), अन्ननाम (निघंटु), उदकनाम (निघंटु) सुखस्वरूप: परमेश्वर: (भाष्य यजुर्वेद ५.१८)। पृत्=संग्रामनामा (निघंटु), सेना=सिन्वन्ति....." यहां भी नैष्ठिक जी ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के नाम पर ऋषि भक्त आर्यों के सामने असत्य परोस कर भ्रमित करने का प्रयास किया है। महर्षि दयानन्द ने अपने भाष्य में 'कम्' का अर्थ अन्न व उदक कहीं भी नहीं किया है, तथा 'कम्' के अर्थ को समझाने के लिए निघण्टु के ये प्रमाण कहीं भी नहीं दिये हैं। निघण्टु के इन अर्थों को महर्षि के वेदभाष्य से लिया गया बताना अनुचित व असत्य है। 'पृत्=संग्रामनामा (निघंटु)' यह अंश भी महर्षि के भाष्य में नहीं मिलता। महर्षि की छोड़िये, यह तो निघंटु में भी नहीं मिलता। निघंटु में संग्राम नामों में 'पृत्' नाम ही नहीं लिखा है। वहां '**पृत्सु**' शब्द है, न कि 'पृत्'।

अत: मनमाना अर्थ करने के लिए इस प्रकार से असत्य लिखना, आधुनिक विज्ञान को पढ़कर उन बातों को येन-केन प्रकारेण हेराफेरी करके वेद में दिखाना, कैसे मान्य हो सकता है? ऐसे प्रयास अनेकों हो चुके हैं, हो रहे हैं, उसी प्रकार का एक प्रयास नैष्ठिक अग्निव्रत जी का भी है। इस प्रकार की भाष्य शैली से कभी भी वेद में विज्ञान सिद्ध नहीं हो सकता, उलटा वेद व वेदानुयायियों का उपहास होगा। हां, इससे हम अपनों के बीच अपनी पीठ ठोक व ठुकवा कर संतुष्ट हो सकते हैं, अस्वाध्यायशीलों के बीच अपने भाष्य को महर्षि के नाम का आवरण चढ़ाकर अपने कुछ प्रयोजन सिद्ध कर सकते हैं, किन्तु ईश्वर व अन्य ज्ञानी समझदारों की दृष्टि में ऐसी भाष्य शैली महत्त्वहीन है।

५. अब पांचवें शब्द '**सक्थि:**' को मनमाने अर्थ में ढालने के लिए की गई उनकी कसरत को देखिए। प्रमाण देते हुए वे लिखते हैं-"सक्थि:=सजतीति (उणादि कोष:), षञ्जि संगे=आलिंगन करना, सटे रहना, सक्थिक्यां क्रौञ्चौ (अजायेताम्) (जै. २.२६७), क्रौञ्च:=रज्जु: (तां.ब्रा.), रज्जु:=रश्मि:, अत्र प्रमाणानि-रश्मय:=रज्जव: किरणा वा (भाष्य यजुर्वेद २९.४३), रश्मेव=(रश्मा+इव)=किरणवद् रज्जुवद् वा (भाष्य ऋग्वेद ६.६७.१), प्राणा: रश्मय: (तै.सं.)"।

वेद मन्त्रों में '**सक्थ्या**' शब्द है, उसे सूर्य में घटाने के लिए उन्होंने '**सक्थि:**' शब्द को पकड़ा। इसका महर्षि सम्मत अर्थ खोजते हुए वे उणादि कोष में पहुंचे। वहां के उद्धरण को अधूरा उठाकर यहां रख दिया, क्योंकि शेष छोड़ा गया अर्थ उन भाष्यकारों के अनुकूल था, जिनका इन्होंने खण्डन किया है। उणादि कोष का पूरा व अपरिवर्तित पाठ है-"**सजतीति सक्थि, ऊरुदेशो वा**"। **प्रथम तो** यहां विसर्ग रहित '**सक्थि**' शब्द है, जिसे उन्होंने विसर्ग युक्त '**सक्थि:**' बना दिया। वेद में कहीं भी ऐसा विसर्गयुक्त 'सक्थि:' शब्द नहीं आया, न महर्षि ने कहीं प्रयोग किया, लगता है विज्ञान की नई खोज है। खैर, इसे मुद्रण दोष कहकर अपने को सरलता से बचाया जा सकता है।

विसर्ग की ऐसी त्रुटि इनके प्रस्तुत ६ भाष्यों में तीन स्थानों पर और है। विसर्ग रहित '**सक्थ्या**' शब्द जो कि दोनों मन्त्रों में है, इसको इन्होंने दोनों आधिदैविक भाष्यों व प्रथम आधिभौतिक भाष्य में विसर्ग युक्त '**सक्थ्या:**' कर दिया है। संभवत: महर्षि ने कहीं विसर्ग युक्त प्रयोग किया हो, या नैष्ठिक जी की यौगिक अर्थ प्रक्रिया में कहीं विसर्ग लगता हो। इन दो मन्त्रों के वैद्यनाथ जी वाले प्रथम मन्त्र के भाष्य में विसर्ग युक्त 'सक्थ्या:' छपा है व दूसरे मन्त्र के भाष्य में विसर्ग रहित 'सक्थ्या' छपा है। वैचित्र्य प्रिय नैष्ठिक जी को वैद्यनाथ जी की विसर्ग वाली इस नई बात में विज्ञान दिखा होगा, दो में से एक स्थान पर विसर्ग, एक स्थान पर विसर्ग का अभाव, विज्ञान की दृष्टि से यह ५०-५० प्रतिशत हुआ। उनकी वैज्ञानिक दृष्टि ने इस विज्ञान को पकड़ लिया व उसका तदनुरूप ५० प्रतिशत प्रयोग अपने भाष्य में भी कर डाला। ६ में से ३ स्थानों अर्थात् ५० प्रतिशत में विसर्ग को अपना लिया और ३ स्थानों अर्थात् ५० प्रतिशत में विसर्ग रहित प्रयोग किया। बिना शुद्धता-यथार्थता-एक्यूरेसी के विज्ञान चल नहीं सकता। कितना परिशुद्ध अनुकरण है। **विषादप्यमृतं ग्राह्यम्, अमेध्यादपि काञ्चनम्**, के आचरण का यह एक अच्छा उदाहरण है।

दूसरा उणादि कोष के प्रस्तुत प्रमाण में नैष्ठिक जी ने '**ऊरुदेशो वा**' इतने अंश को निकाल फेंका। जब वैज्ञानिक भाष्य में महर्षि का अर्थ बाधक बन रहा हो, तो वह कैसे स्वीकार हो सकता है? वैज्ञानिक भाष्य में कोई भी रुकावट नैष्ठिक जी को स्वीकार्य नहीं है, विज्ञान के प्रति यह निष्ठा प्रशंसनीय है, ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रशंसनीय है। 'सक्थि'

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

शब्द वाले जिन पदों का महर्षि ने अपने भाष्य में प्रयोग किया, उनका अर्थ किया, वे भी वैज्ञानिक दृष्टि में नहीं आ पाये, उनका उल्लेख तक नहीं किया गया। क्या महर्षि ने 'सक्थि' का अर्थ अपने भाष्य में नहीं किया था? महर्षि ने 'सक्थि' का वह अर्थ कहीं नहीं किया जो नैष्ठिक जी ने किया, अत: इसे महर्षि के भाष्य से लिया गया बताना असत्य है। नैष्ठिक जी को कहीं दिखा हो तो कृपया बतावें। महर्षि के तीन स्थानों पर मिले अर्थ में यह शब्द सदा मनुष्य के सन्दर्भ में, उसके शरीरावयव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पर नैष्ठिक जी ने इससे मुख फेर लिया, क्योंकि इससे उन अन्य भाष्यकारों के अर्थ की पुष्टि होती थी जिनका वे खण्डन कर रहे हैं व नैष्ठिक जी का वैज्ञानिक अर्थ भी नहीं निकल पा रहा था।

उन्होंने **सक्थि** शब्द को खोलने के लिए धातुपाठ का उल्लेख किया–'**षञ्जि संगे**', यहां भी इकार की नई खोज दिख रही है। पाणिनि के धातुपाठ में तो इकार रहित '**षञ्ज संगे**' पाठ मिलता है। अब इन्हें '**सक्थि**' के साथ इच्छित अर्थ 'प्राण' भी जोड़ना था, तो वैज्ञानिक शैली ने उपाय खोजा। शास्त्र में सक्थि के साथ आये '**क्रौञ्चौ**' शब्द पर इनकी दृष्टि पड़ी। 'क्रौञ्च:' का '**रज्जु**' अर्थ भी तां.ब्रा. में ढूंढ निकाला और वैज्ञानिक अर्थ कर दिया '**रज्जु:=रश्मि:**'। क्या यह अर्थ ताण्ड्यब्राह्मण में दिया है? जिसने क्रौञ्च: का रज्जु अर्थ किया, वह रज्जु शब्द से क्या अर्थ ग्रहण कर रहा है, उसका कोई उल्लेख नहीं। मात्र रज्जु शब्द पकड़ा और 'रश्मि' अर्थ कर दिया। अब अपने इस कल्पित अर्थ की पुष्टि में महर्षि के प्रमाण दे दिये। यहां भी हेराफेरी कर दी। प्रमाण ये देने थे कि महर्षि ने '**रज्जु**' **शब्द का** '**रश्मि**' अर्थ यहां-यहां किया है। लेकिन प्रमाण वे दे दिये जहां '**रश्मि**' **शब्द का** '**रज्जु**' अर्थ किया गया था। ठीक है महर्षि ने 'रश्मि' शब्द का अर्थ 'रज्जु' किया है, किन्तु 'रज्जु' शब्द का अर्थ कहीं भी 'रश्मि' नहीं किया है। यदि महर्षि ने कहीं रज्जु का अर्थ रश्मि किया हो, या अन्य किसी ऋषि ने किया हो, तो यह अर्थ महर्षि या अन्य ऋषियों के अनुकूल कहा जा सकता था। अन्यथा यह कलाबाजी मात्र है, आर्यों को भ्रमित करना मात्र है।

अब आगे देखिए। रज्जु का **रश्मि** अर्थ लेकर, रश्मि का इच्छित अर्थ '**प्राण**' ले लिया। इस प्रकार सक्थि के साथ 'प्राण' को जोड़ने की वैज्ञानिक अनुसंधान यात्रा समाप्त हुई। क्या नैष्ठिक जी बता पायेंगे कि "**प्राणा: रश्मय: (तै.सं.)**" यह अंश महर्षि ने अपने भाष्य में कहां दिया है? क्या महर्षि ने कहीं भी अपने भाष्य में 'रश्मि' का अर्थ 'प्राण' किया है? यदि नहीं तो '**रज्जु=रश्मि=प्राण**' इस अर्थ को महर्षि के वेदभाष्य से लिये जाने का कथन किस व्रत की ओर संकेत कर रहा है? क्या यही ऋषि भक्ति है? सत्य के पुजारी महर्षि की महिमा बढ़ाने की प्रतिज्ञा क्या ऐसे असत्य उपायों से पूरी होगी? क्या महर्षि के प्रति असत्य की श्रद्धाञ्जलि देना चाहते हैं? क्या महर्षि के प्रति ऐसी ही निष्ठा है?

प्राण! प्राण! प्राण! सब कुछ प्राण। वेद भी प्राण, छन्द भी प्राण, प्राणों को ही ऋषियों ने ग्रहण किया और प्राण के ही अर्थ का साक्षात् किया, ऋक् भी प्राण, मन्त्र भी प्राण, क्रौञ्च भी प्राण, रज्जु भी प्राण, रश्मि भी प्राण, सेना भी प्राण की, संग्राम भी प्राण का, प्राण ही प्राण। ठीक है, प्राण महत्त्वपूर्ण है, सब को उसकी आवश्यकता है, पर हर मार्ग व प्रयास प्राण की ओर ही जाता है क्या? ऐसी खींच तान से कहीं बेचारे प्राण के प्राण ही न निकल जायें। प्राण का एक विस्तार जयपुर के **श्री मधुसूदन ओझा व मोतीलाल जी शास्त्री** ने भी किया था। बड़ा विस्तार किया गया, कुछ वैसा ही विस्तार नैष्ठिक जी भी करने में लगे हैं। आर्यसमाजी को किसी भी क्षेत्र में पौराणिकों से पीछे नहीं रहना चाहिए।

श्री मधुसूदन ओझा व मोतीलाल जी शास्त्री के प्रयास अन्यों को कम ही समझ में आते हैं, पता नहीं उन्हें भी समझ में आते हैं या नहीं? एक जंजाल खड़ा कर दिया है, एक भूल-भुलैया बना दी है, जिसमें घुसकर व्यक्ति उलझ जाता है, खो जाता है निष्प्राण हो जाता है। यह ऋषियों की शैली नहीं है। नैष्ठिक अग्निव्रत जी के भाष्य इसी तरह के हो रहे हैं। उनके इन दो मन्त्रों के भाष्य की थोड़ी समीक्षा से उसकी कुछ झलक मिल ही गई होगी। इनके किस-किस भाष्य की समीक्षा करें? इन दो मन्त्रों के भाष्य पर इतना सा लिखना ही पर्याप्त होगा। नैष्ठिक जी की पूर्व प्रकाशित वैज्ञानिक पुस्तकों की भी यही दशा है। नैष्ठिक जी के ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य में भी यही शैली अपनाई गई है। जो इनकी पुस्तिका 'ऐतरेय ब्राह्मण विज्ञान' में दिये नमूनों से ज्ञात होती है। उन्होंने इस पर विद्वानों की सम्मति मांगी थी व उन्हें चर्चा/शास्त्रार्थ के लिए अपने स्थान पर आमन्त्रित किया था। पर जब उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर मैंने वहां चर्चा/शास्त्रार्थ हेतु आना चाहा, उनके समय-स्थान-निर्णायक-न्यायाधीश व जनता के बीच में भी, तो अनुमति देने से मना कर दिया। अन्य मतभेद-वाले स्थलों पर भी चर्चा का प्रस्ताव ठुकरा दिया। यदि अपने पर इतना विश्वास नहीं है, तो चुनौतिपूर्ण आमन्त्रण क्यों प्रचारित करवाया था? क्या मात्र मक्खन लगवाना चाहते थे? मैं चाहता था कि इन्हें प्रेम से समझाया जाये कि आप जिस शैली से चल रहे हैं उसमें आपको अपना लक्ष्य पूरा करने में सफलता नहीं मिलेगी। आपका इतना पुरुषार्थ व आर्य जनता का सहयोग व्यर्थ हो जायेगा। पर वे सुनने-समझने को तैयार ही नहीं हैं। उन्होंने मान लिया है कि मैं सबसे अधिक ज्ञानी हूँ, मेरे जैसा अनुसन्धान किसी ने नहीं किया है, अत: कोई मुझे सुझाव कैसे दे सकता है? वे अयोग्य व्यक्तियों से सुझाव नहीं चाहते, ठीक है, तो फिर अपने कार्य की प्रशंसा व अनुमोदन इन अयोग्य व्यक्तियों से क्यों चाहते हैं? आत्मगौरव-आत्मस्वाभिमान से स्वयं में संतुष्ट

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

क्यों नहीं रह पा रहे हैं? अपने को सर्वोच्च वैदिक शोधकर्ता सिद्ध करने के लिए वैसाखियों की चाह क्यों है?

अग्निव्रत जी नैष्ठिक की मेहनत-लगन प्रशंसनीय है, किन्तु उन्होंने दिशा-शैली गलत पकड़ ली है। उन्होंने आर्यसमाज का बहुत कार्य किया है, आर्यसमाज व आर्यजनता उनके ऋणी हैं, आर्यजनता व विद्वान् इसके लिए उनके प्रति आदर रखते हैं। वे भविष्य में आर्यसमाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं, उनसे आर्यसमाज को बहुत आशाएं हैं। अच्छा हो कि वे अपनी वेदभाष्य शैली का पुनरावलोकन कर लेवें। वे आर्यजगत्, वैदिक-जगत् के हीरे के रूप में स्मरण किये जायें, वे आर्यसमाज के गौरवशाली इतिहास में एक गौरवपूर्ण स्थान पर स्मरण किये जायें, यह हार्दिक कामना है, शुभकामना है। प्रभुकृपा।

-ऋषि उद्यान, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की ध्यान पद्धति' तृतीय**, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए) १३-१५ मार्च २०१३, ऋषि उद्यान, अजमेर।

२. **आर्यसमाज की ध्यान पद्धति-ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर**। ११ से १७ अप्रैल २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर नि:शुल्क है। **१० अप्रैल सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी**। शिविर का समापन १७ को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००६९६१, समय-रात्रि ८ से ८.३०। पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

३. १७ से २६ मई-**संस्कृत संभाषण शिविर**, सम्पर्क : ९४१४७०९४९४

४. २८ मई से ४ जून-**आर्यवीर दल शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

५. ६ से १३ जून-**आर्य वीरांगना शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

६. १६ से २३ जून-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

७. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की यज्ञपद्धति**' तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।

मनुष्यों को, जिसकी अग्नि संज्ञा है उस ब्रह्म को जान और उसकी उपासना करके उत्तम बुद्धि को प्राप्त करना चाहिये। विद्वान् लोग जिस बुद्धि से यज्ञ को सिद्ध करते हैं, उससे शिल्पकारक यज्ञों को सिद्ध करके, विद्वानों के सङ्ग से विद्या को प्राप्त होके स्वतन्त्र व्यवहार में सदा रहना चाहिये क्योंकि बुद्धि के विना कोई भी मनुष्य सुख को नहीं बढ़ा सकता। इससे विद्वान् मनुष्यों को उचित है कि सब मनुष्यों के लिए ब्रह्मविद्या और पदार्थविद्या और बुद्धि की शिक्षा करके निरन्तर रक्षा करें और वे रक्षा को प्राप्त हुए मनुष्य परमेश्वर वा विद्वानों के उत्तम-उत्तम प्रिय कर्मों का आचरण किया करें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.११।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सामवेद की मूल संहिता-कौथुमीय या राणायनीय

-ब्र. राजेन्द्रार्यः

वेद भारतीय संस्कृति की मूल धरोहर हैं। सृष्टिकर्ता परमपिता परमात्मा ने मानवोत्थान के लिए सृष्टि के आदि में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा ऋषियों के अन्तःकरण में एक-एक वेद का प्रकाश किया।[१] संसार के समस्त विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं।[२] भारतीय विद्वानों के समान ही पाश्चात्य विद्वानों ने भी वेदों के महत्त्व को स्वीकार किया है। फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् लुई जैकॉलिएट ने अपने ग्रन्थ The Bible in India में लिखा है-"Astonshing fact! The Hindu Revelation (Veda) is of all revelation's the only one whose ideas are in perfect hormony with Modern Science."'अर्थात् आश्चर्य की बात है! सभी ईश्वरीय ज्ञानों में केवल हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान (वेद) ही है, जिसके विचार आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण रूप से मिलते हैं।'[३]

प्रो. फ्रेडरिक मैक्समूलर के वेदगुरु प्रो. रोनाल्ड राय ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा था-''नवयुवक! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि इस समय तुम उस ग्रन्थ पर काम कर रहे हो जो मानवता की बहुमूल्य सम्पत्ति है, विश्व-आर्यजाति का पावन धर्मग्रन्थ है और सृष्टि के आदिकाल में प्रादुर्भूत ज्ञान का विश्वकोष है। तुम इस पवित्र कार्य को करते समय सिगरेट फूंककर इस पवित्र साहित्य का अपमान कर रहे हो।'' मैक्समूलर ने वेदों की महत्ता और गौरव को समझकर धूम्रपान तुरन्त बन्द कर दिया।[४] ऋग्वेद पर अपने जीवन का अत्यधिक समय लगाने वाले प्रो. फ्रेडरिक मैक्समूलर ने लिखा है-**यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले। तावद्ऋग्वेदमहिमा लोकेषु प्रचरिष्यति।।** अर्थात् जब तक पृथिवी पर नदियाँ व पर्वत रहेंगे, तब तक संसार के मनुष्यों में ऋग्वेद का प्रचार रहेगा।

महर्षि मनु महाराज ने 'वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।' (मनुस्मृति २/७) कहकर वेद को समस्त ज्ञान-विज्ञान का आधार माना है। धर्म-जिज्ञासुओं के लिए परम प्रमाण वेद है-'धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' (मनु ०२/१३) 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' (मनु ०२/६)। वेद-विरुद्ध वचनों का कोई प्रमाण नहीं है-**'विरोधे त्वनपेक्ष्यं स्यादसति ह्यनुमानम्'। -मीमांसा १/३/३**

महर्षि मनु महाराज ने वेद की निन्दा करने वाले को नास्तिक बतलाया है-

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः।।

-मनुस्मृति २/११

अर्थात् जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्त ग्रन्थों का अपमान करे, उसको श्रेष्ठ लोग जातिबाह्य कर दें। क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहाता है।-**सत्यार्थप्रकाश दशम समुल्लास**

तैत्तिरीय ब्राह्मण में एक कथा आती है कि-भारद्वाज ऋषि ने तीन जन्मों में आजन्म ब्रह्मचर्य का धारण करके वेदों का ही अध्ययन किया। जब वे वृद्ध होकर मृत्यु शय्या पर पड़े थे तब इन्द्र ने उनसे कहा कि अगर मैं तुम्हें चौथा जन्म और दे दूँ तो तुम क्या करोगे? भारद्वाज ने उत्तर दिया उस जीवन में भी मैं आजन्म ब्रह्मचारी रहकर वेदों का ही स्वाध्याय करूंगा। इस पर इन्द्र ने उसे तीन बड़े-बड़े अज्ञात पहाड़ से दिखाये और प्रत्येक से एक-एक मुट्ठी लेकर कहा-''भारद्वाज! आओ, देखो, ये वेद हैं। ये ज्ञान की दृष्टि से अनन्त हैं। तू तो तीनों जन्मों में भी इतना थोड़ा-सा ही पढ़ पाया है। अधिकांश तो तेरे लिए अज्ञात ही पड़ा है। आओ, इसे जानो, इसमें सब विद्याएं हैं।''[५]

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु दण्डी विरजानन्द सरस्वती को गुरुदक्षिणा में जो वचन वैदिक धर्म, वेद तथा आर्ष ग्रन्थों के पुनः प्रचार का दिया था, उसे श्रद्धापूर्वक जीवन पर्यन्त निभाया। ऐसी अद्भुत गुरु दक्षिणा चुकाने वाला मेरी दृष्टि में तो अभी तक कोई ज्ञात नहीं हो सका है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं वेदों का अध्ययन किया तथा यजुर्वेद का सम्पूर्ण एवं ऋग्वेद के ७वें मण्डल के ६१वें सूक्त के २ मन्त्र तक सर्वप्रथम आर्यभाषा में भाष्य किया। स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कार विधि जैसे अनमोल मानवोपयोगी ग्रन्थों का प्रणयन किया। वेदों की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने चैत्र शुक्ला पञ्चमी १९३२ विक्रमी शनिवार तदनुसार १० अप्रैल सन् १८७५ को मुम्बई के गिरगाँव मुहल्ले में प्रार्थना समाज के निकट एक पारसी सज्जन डॉ. माणेक अदेरजी की वाटिका में सायं साढ़े पाँच बजे एक सभा आयोजित कर आर्यसमाज की विधिवत स्थापना की।[६] वर्तमान में यह विश्व की प्रथम आर्यसमाज काकड़वाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में महर्षि पतञ्जलि के महाभाष्य के पस्पशाह्निक के प्रमाणानुसार ऋग्वेद की २१, यजुर्वेद की १०१, सामवेद की १००० और अथर्ववेद की ९ शाखाओं की चर्चा की है।[७] स्वामी जी ने इस विषय को 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' ग्रन्थ के 'प्रामाण्याप्रामाण्यविषयः' तथा 'सत्यार्थप्रकाश' सप्तम-समुल्लास

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में और स्पष्ट किया है। स्वामी जी लिखते हैं–'मन्त्र भाग की चार संहिता कि जिनका नाम वेद है, वे स्वत:प्रमाण कहे जाते हैं। और उनसे भिन्न ऐतरेय, शतपथ आदि प्राचीन सत्य ग्रन्थ हैं, वे परत:प्रमाण के योग्य हैं। तथा ग्यारह सौ सत्ताइस (११२७) चार वेदों की शाखा भी वेदों के व्याख्यान होने से परत:प्रमाण हैं।'–**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका।**

इसी प्रकार स्वामी जी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं–

प्रश्न–वेदों की कितनी शाखा हैं?

उत्तर–एक हजार एक सौ सत्ताइस।

प्रश्न–शाखा क्या कहाती है?

उत्तर–व्याख्यान को शाखा कहते हैं।

प्रश्न–संसार में विद्वान् वेद के अवयवभूत विभागों को शाखा मानते हैं।

उत्तर–तनिक सा विचार करो तो ठीक है। क्योंकि जितनी शाखा हैं वे आश्वलायन आदि ऋषियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसा चारों वेदों को परमेश्वरकृत मानते हैं वैसे आश्वलायनी आदि शाखाओं को उस-उस ऋषिकृत मानते हैं और सब शाखाओं में मन्त्रों की प्रतीक धर के व्याख्या करते हैं। जैसे तैत्तिरीय शाखा में 'इषे त्वोर्जे त्वेति' इत्यादि प्रतीक धर के व्याख्यान किया है। और वेद संहिताओं में किसी की प्रतीक नहीं धरी। इसलिये परमेश्वरकृत चारों वेद मूलवृक्ष और आश्वलायनादि सब शाखा ऋषि-मुनिकृत हैं, परमेश्वरकृत नहीं। जो इस विषय की विशेष व्याख्या देखना चाहें वे ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में देख लेवें।

जैसे माता-पिता अपने सन्तानों पर कृपा दृष्टि कर उन्नति चाहते हैं वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है। जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार भ्रमजाल से छूटकर विद्या विज्ञानरूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द में रहें और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें।

प्रश्न–वेद नित्य हैं वा अनित्य?

उत्तर–नित्य हैं। क्योंकि परमेश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञानादि गुण भी नित्य हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण, कर्म, स्वभाव नित्य और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।

प्रश्न–क्या यह पुस्तक भी नित्य हैं?

उत्तर–नहीं, क्योंकि पुस्तक तो पत्रे और स्याही का बना है, किन्तु जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध हैं वे नित्य हैं।

प्रश्न–ईश्वर ने उन ऋषियों को ज्ञान दिया होगा और उस ज्ञान से उन लोगों ने वेद बना लिये होंगे?

उत्तर–ज्ञान ज्ञेय के विना नहीं होता। गायत्र्यादि छन्द षड्जादि और उदात्ताऽनुदात्तादि स्वर के ज्ञान पूर्वक गायत्र्यादि छन्दों के निर्माण करने में सर्वज्ञ के विना किसी का सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार का सर्वज्ञानयुक्त शास्त्र बना सके। हाँ वेद को पढ़ने के पश्चात् व्याकरण निरुक्त और छन्द आदि ग्रन्थ ऋषि मुनियों ने विद्याओं के प्रकाश के लिये किये हैं। जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न बना सके। इसलिए वेद परमेश्वरोक्त हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन में वेदों की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए जो अभूतपूर्व कार्य किया, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यूरोप के उदार विचार के विद्वान् रोमां रोलां ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस की जीवनी में लिखा है–It was truth an epoch making date for India when a Brahmin not only acknowledged that all human beings have the right to know the vedas, whose study had been previously prohibited by orthodox Brahmins, but insisted that their study and propaganda was the duty of every Arya. [Roman Rolland : Life of Ram Krishna P-59 Nov. 1974]

वस्तुत: भारत में एक युगारम्भ का दिन था, जब एक ब्राह्मण स्वामी दयानन्द सरस्वती ने केवल यह स्वीकार ही नहीं किया कि सब मनुष्यों को वेदों के अध्ययन का (जिसे कट्टरपन्थी ब्राह्मणों ने वर्जित कर रखा था) अधिकार है, प्रत्युत उसने इस बात पर भी बल दिया कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और इनका पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

वैदिक वाङ्मय के ख्याति प्राप्त विद्वान्, कई पुरस्कारों से सम्मानित तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति पूज्य आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार का एक लेख 'अथर्ववेद: परिचय तथा वैशिष्ट्य' 'वैदिक पथ' मासिक पत्रिका के मार्च २०१२ अङ्क में प्रकाशित हुआ है। जिसमें पूज्य आचार्य जी लिखते हैं कि-"स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद-शाकल संहिता, यजुर्वेद-वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल संहिता, सामवेद-राणायनीय संहिता, अथर्ववेद-शौनकीय संहिता को मूल माना है। सामवेद की कौथुमीय और राणायनीय शाखाओं में मुख्य भेद गणनापद्धति का है। कौथुमीय शाखा का विभाजन अध्याय, खण्ड और मन्त्र के रूप में है तथा राणायनीय शाखा का विभाजन प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति और मन्त्र के रूप में है। स्वामी जी ने 'चतुर्वेद-विषय सूची' में प्रपाठक के क्रम को ही लिया है तथा परोपकारिणी सभा द्वारा वैदिक यन्त्रालय अजमेर से मुद्रित यजुर्वेद में प्रपाठक वाला राणायनीय विभाजन ही लिखा गया है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी द्वारा मुद्रित सामवेद में दोनों विभाजन दिये गये हैं। भूमिका में उन्होंने यह भी लिखा है कि दोनों पद्धतियों में क्वचित् स्वरभेद तथा पाठभेद भी दृष्टिगोचर होता है। कौथुमीय में 'हाउ, राइ, वाजेषु

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नो' पाठ उपलब्ध होते हैं, किन्तु राणायनीय में 'हावु, रायि तथा वाजेषुणो' पाठ हैं।''

मेरी दृष्टि में उपर्युक्त लेख डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी ने पूज्य आचार्य जी की कृति 'अथर्ववेद परिचय' की भूमिका से संकलित कर प्रकाशित किया है। मान्य डॉ. साहब की कृति 'वेद और वेदार्थ' तथा 'महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज' भाग-१(सिद्धान्त खण्ड) के पृष्ठ संख्या ८१ एवं ६२ में सामवेद की मूल संहिता (राणायनीय) ही लिखा है। जो कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं के अनुकूल नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी कृतियों में ऋग्वेद (शाकल संहिता), यजुर्वेद (वाजसनेयि-माध्यन्दिन शुक्ल संहिता), सामवेद (कौथुम संहिता), और अथर्ववेद (शौनक संहिता) को प्रामाणिक मूल वेद माना है।

पूज्य आचार्य जी के उपर्युक्त लेख में निम्न बातें ऋषि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं के अनुकूल नहीं है-**१.** सामवेद राणायनीय संहिता। **२.** कौथुमीय शाखा का विभाजन अध्याय, खण्ड और मन्त्र के रूप में तथा राणायनीय शाखा का विभाजन प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति और मन्त्र के रूप में है। **३.** परोपकारिणी सभा द्वारा वैदिक यन्त्रालय अजमेर से मुद्रित यजुर्वेद में प्रपाठक वाला राणायनीय विभाजन लिखा गया है।

पूज्य आचार्य जी की इन मान्यताओं का अन्तर्विरोध (Contradiction) उनकी ही कृतियों ऋग्वेद ज्योति, यजुर्वेद ज्योति तथा सामवेद भाष्य में देखने को मिलता है। आचार्य जी ने जहाँ ऋग्वेद ज्योति एवं सामवेद भाष्य में सामवेद की मूल संहिता कौथुम एवं राणायनीय को लिखा है, वहीं पर यजुर्वेद ज्योति में कौथुमीय संहिता को ही प्रामाणिक सामवेद स्वीकार किया है। कौथुमीय शाखा का विभाजन प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति और मन्त्र के रूप में एवं राणायनीय शाखा का विभाजन अध्याय, खण्ड और मन्त्र के रूप में माना है। आचार्य जी के 'सामवेद भाष्यम्' (पूर्वार्चिकः) ग्रन्थ का एतद्विषयक अंश उद्धृत है-''कौथुम एवं राणायनीय दोनो सामवेदों में मन्त्र-संख्या एक समान १८७५ है, विशेष अन्तर विभाजन का है। कौथुम के पूर्वार्चिक में प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति एवं मन्त्रों का क्रम है, तो राणायनीय के पूर्वार्चिक में 'अध्याय, खण्ड एवं मन्त्रों का', इसी प्रकार कौथुम के उत्तरार्चिक में प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, सूक्त एवं मन्त्रों का विभाजन है, तो राणायनीय के उत्तरार्चिक में 'अध्याय, खण्ड, सूक्त एवं मन्त्रों का क्रम है। स्वामी दयानन्द प्रपाठक वाले क्रम को आदर देते हैं, यतः उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के ग्रन्थ संकेत-विषय में सामवेद का ग्रन्थ-संकेत देने के लिए इसी क्रम को स्वीकार किया है। कौथुम तथा राणायनीय में क्वचित् स्वल्प पाठभेद भी है, यथा कौथुम में ऋग्वेद के समान 'वाजेषु नो' तथा राणायनीय में 'वाजेषु णो' पाठ मिलता है।''[८]

परोपकारिणी-सभा द्वारा वैदिक यन्त्रालय से जो वेद संहिताएं प्रकाशित हैं-यजुर्वेद-वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल संहिता है तथा सामवेद की प्रपाठक वाली कौथुमी संहिता के पाठ हैं। यही स्वामी दयानन्द सरस्वती का 'चतुर्वेद विषय सूची' में अभिमत है। यजुर्वेद की राणायनीय कोई शाखा है भी नहीं। मेरी समझ से 'अथर्ववेद ज्योति' ग्रन्थ के मूल हस्तलेख-जो मुद्रण के लिए भेजे गये हैं, उनके प्रूफ ठीक ढंग से न देखने के कारण तथा 'वैदिक-पथ' पत्रिका के सम्पादक की अन्यत्र व्यस्तताओं के कारण पूज्य आचार्य जी के महत्त्वपूर्ण लेख की त्रुटियों को संशोधित नहीं किया जा सका है। आर्यजगत् के वेदों के विद्वान् एवं प्रसिद्ध अनुसन्धानकर्ता (Research Scholar) पूज्य पण्डित रघुनन्दन शर्मा ने वैदिक सम्पत्ति, पूज्य आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने अपनी कृति 'वेद और उसकी वैज्ञानिकता-भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य में', श्रद्धेय डॉ. भवानीलाल भारतीय[९] जी ने 'सामवेद परिचय' तथा सम्माननीय डॉ. सोमदेव शास्त्री[१०] जी के 'सामवेद-सार' में सामवेद की मूल संहिता कौथुम ही बतलायी गई है।

पण्डित रघुनन्दन शर्मा के ग्रन्थ का प्रमाण यहाँ पर उदधृत है-''सामवेद की किसी जमाने में एक हजार तक शाखाएं हो गई थीं, परन्तु इस समय उनका कहीं पता नहीं है। चरणव्यूह की टीका में महीदास ने लिखा है-'आसां षोडशशाखानां मध्ये तिस्रः शाखा विद्यन्ते, गुर्जरदेशे कौथुमी प्रसिद्धा, कर्नाटके जैमिनीया प्रसिद्धा, महाराष्ट्रे तु राणायनीया' अर्थात् इसकी सोलह शाखाओं में अब केवल तीन ही शाखा विद्यमान हैं। इनमें कौथुमी शाखा गुजरात में, जैमिनीय शाखा कर्नाटक में, राणायनीय शाखा महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है। परन्तु स्वामी हरिप्रसाद 'वेद सर्वस्व' के पृष्ठ १७४ में कहते हैं कि 'सम्भव है महीदास के समय में गुर्जर आदि देशों में उक्त तीनों शाखाओं की प्रसिद्धि हो, पर इस समय तो वे नहीं पाई जाती.....मुद्रणालयों में तो अब तक जितनी संहिता मुद्रित हुई हैं वे सब कौथुमी शाखा संहिता ही हैं'। तात्पर्य यह है कि अब केवल एक कौथुमी शाखा ही पाई जाती है और वह ऋग्वेद और शुक्ल यजुर्वेद के साथ ही सनातन से पठन-पाठन में चली आ रही है। मद्रास और महाराष्ट्र में सामवेदी ब्राह्मण शायद ही कहीं ढूंढने से निकल आवें, किन्तु गुर्जर प्रान्त के उदीच्यों में सामवेदियों की अधिकता है। उदीच्य निस्सन्देह उत्तरीय ब्राह्मणों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं और उत्तरीयों में सामवेदियों की संख्या बहुत अधिक है, इसलिए उत्तर भारत से सम्बन्ध रखने वाली और गुर्जर तक फैली हुई कौथुमी शाखा ही आर्यशाखा है और आर्यशाखा ही मौलिक है, अतएव कौथुमी शाखा के आदिम अर्थात् अपौरुषेय होने में कुछ भी सन्देह नहीं है।''[११]

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आचार्य सायण ने कौथुमी शाखा पर भाष्य लिखा है।[१२] अत: उपर्युक्त प्रमाणानुसार सामवेद की मूल संहिता कौथुमीय ही है। पूज्य आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार जी ने भी अपनी कृति 'यजुर्वेद ज्योति' में कौथुमीय संहिता को ही प्रामाणिक सामवेद संहिता स्वीकार किया है। इस विषय में विद्वज्जन अपने अनुसन्धानपूर्ण लेखों द्वारा यथार्थ सत्य का जो प्रतिपादन करेंगे, वह मुझे मान्य रहेगा। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती का कथन है–''सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए''[१३]

सन्दर्भ–

१. (क) यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतम: स्विदेव स:॥ –अथर्व.। कां. १०। प्रपा. २३ अनु. ४। मं. २०, **(ख)** अग्नेर्वा ऋग्वेदो जायते वायोर्यजुर्वेद: सूर्यात्सामवेद:। शतपथ ब्राह्मण ११/५/८/३, **(ग)** अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजु: सामलक्षणम् ॥ मनु. १/२३।

२. (क) वेदश्चक्षु: सनातनम्। मनुस्मृति १२/९४ **(ख)** 'सर–विलियम जोन्स' लिखते हैं–"We can not refuse to the vedas the honour of an antiquity the most distant" वेदों को ही अति प्राचीन होने का यश प्राप्त है। इसमें इन्कार नहीं हो सकता। [स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली खण्ड ६, पृ.सं.१०, सम्पादक–डॉ. भवानीलाल भारतीय] **(ग)** मौलाना सैयद मन्सूर अहमद आगा जी ''वैदिक धर्म और इस्लाम'' पुस्तक के प्राक्कथन में लिखते हैं–''वैदिक धर्म का आविर्भाव तथा वेदों की विद्यमानता इतिहास–पूर्व युग की घटनायें हैं।'' माननीय मौलाना जी स्पष्ट शब्दों में वेदों को प्राचीनतम ग्रन्थ मानते हैं।–(वेद क्यों? और क्या? पृष्ठ सं. १७, लेखक–प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु)

३. वेद विमर्श पृष्ठ ३१, लेखक: डॉ. रामप्रकाश

४. ऋग्वेदीय अध्यात्म शतक पृ. ६, लेखक: डॉ. भवानीलाल भारतीय।

५. भरद्वाजो ह त्रिभिरायुर्भिर्ब्रह्मचर्यमुवास। तं ह जीर्णं शयानमिन्द्र उपव्रज्योवाच, भरद्वाज यत्ते चतुर्थमायुर्दधां किमेतेन कुर्या इति। ब्रह्मचर्यमेवैतेन चरेयमिति होवाच। तं ह त्रीन् गिरिरूपानिवाज्ञातानिव दर्शया चकार तेषां ह एकैकस्मान् मुष्टिमाददे स होवाच भरद्वाजेत्यामन्त्र्य, वेदा वै एते। अनन्ता: वै वेदा:। एतावद्वै त्रिभिरायु–भिरन्ववोचेथा:। अथ ते इतरदननूक्तमेव। एहि इमं विद्धि। अयं वै सर्वाविद्या इति॥ तै. ३/१०/११/३–४

६. नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती (प्रथम भाग) पृ. ४६०, ले. डॉ. भवानीलाल भारतीय।

७. एकविंशतिधा बाह्वृच्यम् एकशतमध्वर्युशाखा, सहस्रवर्त्मा सामवेद: नवधाऽऽथर्वणो वेद:।–महाभाष्य पस्पशाह्निक।

८. 'वाजेषु' और 'नो (या णो)' दोनों शब्द इकट्ठे केवल साम क्रम संख्या ७९८ तथा १५४५ में आये हैं। वैदिक यन्त्रालय अजमेर तथा स्वाध्याय मण्डल औंध (या पारडी) दोनों से प्रकाशित सामवेद में 'वाजेषु नो' पाठ मिलता है।

९. दयानन्द सरस्वती के अनुसार चारों वेदों की ११२७ शाखाएं हैं, इनमें ऋग्वेद की शाकल, यजुर्वेद की माध्यन्दिन, सामवेद की कौथुम तथा अथर्ववेद की शौनक संज्ञक शाखाओं को व्यवहारत: मूलवेद माना जाता है।–(सामवेद एक सरल परिचय पृ.सं.१२, लेखक–डॉ. भवानीलाल भारतीय)

१०. 'कौथुम संहिता सामवेद के नाम से जानी जाती है। इस संहिता में १८७५ मन्त्र हैं। इसमें मन्त्रों का विभाजन प्रपाठक–अर्धप्रपाठक–दशति और मन्त्र के रूप में हैं। ऋषि दयानन्द के अनुसार कौथुम संहिता ही सामवेद है, कौथुम संहिता को थियोडोर बेन्फे ने जर्मन भाषा में अनुवाद करके सन् १८४८ में प्रकाशित किया था।'–(सामवेद सार–पृ.सं. ८, लेखक: डॉ. सोमदेव शास्त्री)

११. वैदिक सम्पत्ति पृ. सं. ४५०, लेखक: पण्डित रघुनन्दन शर्मा, (सम्पादक: आचार्य ब्र. नन्दकिशोर)।

१२. प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास पृष्ठ ८५ ले.–कृष्णकुमार

१३. आर्यसमाज का चतुर्थ नियम।

–आर्यसमाज शक्तिनगर, जनपद–सोनभद्र (उ.प्र.)

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यसमाज सांचोर की उस भूमि का पट्टा जिस पर अन्यों ने अनधिकृत कब्जा कर रखा है।

ग्राम पंचायत कोर्ट,
जिला–जालोर, राजस्थान

भूमि विक्रय विलेख श्री ग्राम पंचायत कोर्ट सांचोर पंचायत समिति सांचोर, जिला–जालोर।
(नियम २६६ रा–पं–एवं न्याय पं–सा–नियम १९६१ के अन्तर्गत)

मिसल सं. १६१/६४ पट्टा बही ०३, पट्टा नं. १८४
तारीख दायरा

श्री आर्य प्रतिनिधि समाज राजस्थान शाखा सांचोर।

निवासी सांचोर का प्रार्थना पत्र वास्ते कब्जाशुदा मकान व मोहल्ला सुनारों का बास सांचोर में वाके है का प्राप्त होने पर राजस्थान पंचायत एवं न्याय पंचायत सा नियम १९६१ के नियम २६६ के अन्तर्गत इसमें जो लाल स्याही से वर्णित भूमि बताई है, स्थाई रूप से माने जाते हैं तथा

भूमि विक्रय नियम के अनुरूप मनोनीत सदस्यों द्वारा मौके पर पर्यवेक्षण किए जाने व लाल स्याही से वर्णित भूमि का मूल्य ११.०० अक्षरे ग्यारह रुपये सिर्फ आँके जाने पर पंचायत के संकल्प सं. **१६ स १९६६/५** दिनांक १६.०५.१९६६ द्वारा पंचायत समिति (जिसका कि क्षेत्र अधिकार है।)

की आज्ञा सं. दिनांक श्रीमान् कलेक्टर साहब
की आज्ञा सं. दिनांक

द्वारा और राजस्थान सरकार की आज्ञा सं. दिनांक द्वारा स्पष्ट कर दी गई है। लिहाजा नियम २६६ के अनुसरण में रकम ११/– अक्षरे ग्यारह रुपये पंचायत हाजा ने क्रेता द्वारा जरिये रसीद संख्या ४० दिनांक २४.०५.१९६६ को जमा होने पर विक्रय विलेख क्रेता के पक्ष में सम्पादित किया जाता है एतद् द्वारा मनाया गया है कि पद क्रेता के सम्बन्ध में उसके अधिकारी भी सम्मिलित है जो इसे विशिष्ट रूप से उपयोग में लाएंगे तथा सम्पादित भूमि में मौजूदा दरवाजा पूर्व उत्तर तरफ का है व नया दरवाजा निकालने हेतु सुकराने की रकम का जमा हो जाने पर तरफ को निकालने की आज्ञा प्रदान करते हैं। व सिब्त मेरे हस्ताक्षर व मोहर के आज दिनांक ०१–१०–१९६६ को जारी किया।

ह. सरपंच
ग्राम पंचायत–सांचोर

जमीन के पड़ौस
उत्तर–आम रास्ता
दक्षिण–मीक्षीमल रुगनाथमल की पट्टा शुदा
पूर्व–खालसा व चौक
पश्चिम–भोपाल चन्द जी का मकान

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

१. नाम-आप महान् हैं, **लेखक**-आचार्य वेदमित्र वैयाश, **प्रकाशक**-प्रभुराज प्रकाशन, ग्राम-मालदेता, डाक-गिड़ा, तह.-बायतु, जिला-बाड़मेर (राज.)-३४४०३७, **चलभाष**-०९४१३६०९००३, **संस्करण**-प्रथम (सं.-२०६९), **मूल्य**-५० रूपये, **पृष्ठ सं**-४८

लेखक ने अपनी पुस्तक द्वारा एक गम्भीर अर्थ को प्रकट करने का प्रयास किया है कि किस प्रकार व्यक्ति अपने नाम में ही छुपे अर्थों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को निराश व हतोत्साहित होने से बचा सकता है तथा किस प्रकार व्यक्ति इस आत्मावलोकन के द्वारा अपने अन्दर आध्यात्मिक गुणों का सृजन कर सकता है। साथ ही लेखक ने अपनी पुस्तक के इन रत्नों को अंग्रेजी में अनुवाद करके अपनी पुस्तक को और भी विशेषित कर दिया है। पुस्तक में नामों के प्रारम्भ का आधार अंग्रेजी वर्णमाला को बनाया है। 'वाई' वर्ण से प्रारम्भ होने वाले नामों की व्याख्या में लेखक ने योग को अपने कई दृष्टिकोणों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। पुस्तक के अन्त में लेखक ने अपने व्यावहारिक अनुभवों को साथ में सम्मिलित करते हुए पुस्तक पढ़ने के लाभ, सद्वचन, संस्कृत की कुछ सूक्तियों का भी उल्लेख किया है। अपने गुरु के प्रति समर्पण-भाव व लोक कल्याण के भाव लेखक ने अपनी पुस्तक में सुन्दर श्लोकों के माध्यम से प्रकट किए हैं।

आवरण पृष्ठ पर प्रार्थना के श्लोक व लेखक का परिचय दिया गया है। पुस्तक का मुद्रण सुन्दर व स्पष्ट है। बन्धन भी दृढ़ है।

२. नाम-(क) गर्भाधान, पुंसवन व सीमन्तोन्नयन संस्कार (हिन्दी) **(ख)** अन्त्येष्टि संस्कार (हिन्दी), **सम्पादक व अनुवादक**-श्री भीमाशंकर चन्दप्पा साखरे, **प्रकाशक**-ज्ञानकुमार आर्य, सुभारती प्रकाशन, प्रमोद गैस एजेन्सी के पूर्व में, सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र) ४१३५३१, चलभाष-०९६२३८४२२४०, **संस्करण**-प्रथम (नवम्बर २०१२), **मूल्य**-१५ रुपये (प्रथम पुस्तक), १० रूपये (द्वितीय पुस्तक) **पृष्ठ सं**-७२ (प्रथम पुस्तक), ४४ (द्वितीय पुस्तक)

दोनों पुस्तकों का आधार महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'संस्कार विधि' है। अन्य वैदिक-ग्रन्थों को भी यथास्थान संदर्भ-ग्रन्थों के रूप में ग्रहण किया गया है। दोनों पुस्तकों में वर्णित संस्कारों पर विवेचन उनकी विधि, संस्कार के लिए उपयोगी पदार्थ, उस संस्कार से सम्बन्धित सामान्य व विशेष होम की विधि व प्रकार, यथास्थान विशेष मन्त्रों के सरल भाषा में संक्षिप्त भावार्थ आदि को एक वैज्ञानिक व व्यावहारिक रीति से प्रस्तुत किया गया है। तथा संस्कार की परिभाषा को सार्थक बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। संस्कारों के विषय में संक्षिप्त व्याख्या करने वाली दोनों पुस्तकें मानव-जीवन के महत्त्वपूर्ण अंगों को प्रभावित करने वाली हैं।

पुस्तकों का मुद्रण व प्रकाशन सुन्दर व सरलतया पठनीय है। सम्पादक व अनुवादक की मराठी, हिन्दी तथा कन्नड़ भाषा में की गई अन्य कृतियों व उनका संक्षिप्त जीवन परिचय भी इन पुस्तकों में प्रकाशित है। बन्धन व आवरण भी अच्छा है।

-वेदपति, ऋषि उद्यान, अजमेर।

सब मनुष्यों को उचित है कि जैसे सत्यस्वरूप सब जगत् को उत्पन्न करने और सकल सुखों के देने वाले जगदीश्वर ही की उपासना को करके सुखी रहें, इसी प्रकार कार्यसिद्धि के लिये अग्नि को संप्रयुक्त करके सब सुखों को प्राप्त करें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१६।**

वैवाहिक

बिलासपुर (छ.ग.) के प्रतिष्ठित आर्य गुप्ता परिवार की २७ वर्षीया ५'४'' गौर वर्ण, बी.ई., साफ्टवेयर इंजीनियर, बहुराष्ट्रीय संस्था बैंगलोर में कार्यरत, वार्षिक आय ८.४० लाख, सुशील एवं सुसंस्कृत कन्या हेतु, समकक्ष योग्यता वाले लम्बे, शाकाहारी निर्व्यसनी आर्य युवक के विवाह हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है। बायोडाटा एवं फोटो भेजें।

संपर्क-राममाधव गुप्ता। मो-९५८९६८७५५७, ईमेल-gupta.rammadhaw@gmail.com

आवश्यकता

आर्यसमाज मॉडल टाऊन यमुनानगर, हरियाणा में एक सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति धार्मिक वृत्ति का, शाकाहारी हो। मदिरा पान (शराब) व धूम्रपान से रहित हो। जो लगभग ८वीं पास हो। मासिक वेतन-४०००/- चार हजार रुपये, परिवार वाले (विवाहित) को प्राथमिकता दी जाएगी। आवास-निवास की सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है।

सम्पर्क-९४१६४४६३०५, ९८९६२९३३९३

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. परोपकारी पाक्षिक पत्रिका 'फरवरी प्रथम व द्वितीय २०१३' प्राप्त हुई। वास्तव में डॉ. धर्मवीर जी का **सम्पादकीय** लेख ही पत्रिका की जान है। अन्य लेख न तो सामयिक होते हैं व न ही प्रेरणादायक। जिनको आम व्यक्ति पढ़कर प्रभावित हो सके। श्री सत्यजित् का **जिज्ञासा-समाधान** पाठकों को क्या बताना चाहता है? इसके अतिरिक्त श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी का लेख **कुछ तड़प-कुछ झड़प** अपनी कथा-कहानी ही व्यक्त करता है। अगर पत्रिका में महर्षि का कोई शास्त्रार्थ जो पाखण्डों को दूर करने तथा अज्ञानता को मिटाने सम्बन्धी दिया जाये, तो पाठकों के ज्ञानचक्षु भी खुलेंगे तथा नये पाठक पत्रिका के पाठक भी बनना चाहेंगे।

फरवरी-प्रथम २०१३ में स्वामी विवेकानन्द और उन का हिन्दुत्व सम्पादकीय लेख उन व्यक्तियों और संस्थाओं को जो विवेकानन्द के अनन्य भक्त हैं, सोचने-समझने की प्रेरणा देगा। पत्रिका के **फरवरी द्वितीय** में श्री धर्मवीर जी का सम्पादकीय लेख ''सर्वखाप पंचायत का विचार अनुचित, अवैधानिक व निन्दनीय है'', प्रमाणों के साथ वर्णित किया है। महर्षि के अनुयायियों ने हिन्दु-धर्म को बहुत बचाया है। पोंगा-पण्डितों ने तो हिन्दु-धर्म को गर्त में पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आज भी तथाकथित हिन्दु, हिन्दुत्व में वैमनस्य फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। जन्मजात जातिप्रथा, क्षेत्रवाद, भाषावाद, भाई-भतीजावाद देश को विघटन करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। व्यक्तिवाद राष्ट्रवाद पर हावी है। अगर देश को कोई नई दिशा दे सकता है, तो वह मात्र आर्यसमाज ही है। परन्तु खेद है कि आर्यसमाज मर चुका है, इसका साहित्य ही इसे जिन्दा रखे हुए है। **-डॉ. लक्ष्मणसिंह टांक, पूर्व प्राचार्य, ५१-देवपुरम्, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.।**

२. निवेदन है कि आपने ''परोपकारी'' के अनेक अंकों में लेखकों को निर्देश दिया है कि वे ''परोपकारी में पूर्व प्रकाशित लेख न भेजें। तथा परोपकारी में छपने के बाद ही अन्यत्र उस लेख को भेजें पहले नहीं। यह निर्देश मुझे उचित नहीं लगा, अच्छा लेख या अच्छी बात कहीं भी भेजें या कहें, इसमें कोई बुराई दिखाई नहीं पड़ती। आप जो लेख लिखते हैं, वह ज्यादा से ज्यादा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो तो अच्छा है, जिससे आपकी एक प्रेरक बात सब जगह पहुंच सके। सभी को उसका लाभ मिल सके। एक जगह छपने की शर्त से प्रचार में कमी रहेगी। यदि दूसरी पत्रिकाओं में ''परोपकारी'' में छपने के बाद भेजेंगे, तो वे भी शर्त लगाते हैं कि पूर्व प्रकाशित न हों। अर्थात् सभी सम्पादक कहते हैं कि अन्यत्र न भेजें। इसमें स्वार्थ छलकता है। वैदिक सिद्धान्त में ऐसा उचित नहीं माना जा सकता है। आप व पत्रिका वैदिक-मत के प्रचारक हैं। विचार करें। **-भालोत बाला-महावीर शास्त्री, २१/१२२७, प्रेमनगर, रोहतक, हरियाणा।**

निवेदन-परोपकारी वैदिक मत के प्रचारार्थ कार्य कर रही है, वह अपने उत्तरदायित्व को निभाने का पूरा प्रयास कर रही है। उसका पाठकों के प्रति भी कर्त्तव्य है। जो पाठक अन्य आर्य पत्रिकाएं भी मंगवाते हैं, उन्हें एक ही लेख/कविता अनेक पत्रिकाओं में मिलना उचित नहीं है। आर्य पत्रिकाओं में यदि भिन्न-भिन्न लेख छपेंगे, तो पाठकों तक अधिक प्रचार सामग्री पहुंचेगी। पिष्टपेषण में श्रम-धन व्यर्थ नहीं होगा। यदि किसी आर्य या आर्यसमाज या आर्यसंस्था को कोई लेख विशेष प्रचार योग्य लगता है, तो वे उसकी प्रतियां यथासामर्थ्य बंटवा सकते हैं। यदि हर सामग्री हर पत्रिका में छपेगी तो अन्य पत्रिकाओं को कोई क्यों मंगवायेगा, एक से ही काम चला लेगा।

३. आपका अङ्क '**फरवरी-प्रथम**' पढ़ा। यह अङ्क सबसे बढ़िया है। सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं। आपने **पाठकों के विचार** सही छापे हैं। मनसा-वाचा कर्मणा होकर सत्याधार बांट रही हैं। समाजों की हालत बहुत खराब चल रही है। सब चोर इकट्ठे हो गये हैं। मैं दु:खी हूँ। छ: माह से आर्यसमाज जाना बन्द कर दिया। नौबतराम जी जानते हैं। नौबतराम जी ने आर्यसमाजों के लिए खून-पसीना बहाया, हमने भी बहाया। क्या करें? मर जायें, गुण्डों से कब तक लड़ें? न कोई सुनने वाला है। आर्यसमाज में जाना बन्द कर दिया।

-महेन्द्रपाल वार्ष्णेय,कोषाध्यक्ष-आर्यसमाज, नि. २००, सराय सुल्तानी, अलीगढ़, उ.प्र.।

४. महोदय। मैं पं. उपेन्द्रराव जी द्वारा उल्लिखित ऋ. १-५१-८ वे मन्त्र का अनुवाद भेज रहा हूँ। जो कि निम्नलिखित है- ''हे मनुष्यों सद्गुणों के लिये सदैव प्रयत्नरत रहो। परोपकार आपका स्वभाव हो, आप ईश्वर को समझने वाले हों, विद्वान् हों, दूसरे की पीड़ा जानने वाले हों, हम धर्म के अनुसार चलें, हमारा धर्म, दूसरों पर दया करता है, दुष्टवृत्ति के मनुष्यों को जो दूसरों को कष्ट देते हैं, उनकी बुरी वृत्तियों को साम, दण्ड, भेद नीति से दूर करें। हम ऐसा यज्ञ (उपदेश) करें, जो सभी मनुष्यों को लाभकारी हो, हमारे उपदेशों से मनुष्यों को प्रेरणा मिले, वे अपने कर्मों को सुधारें'' आशा है पं. उपेन्द्रराव जी इससे संतुष्ट होंगे। साथ ही पं. उपेन्द्रराव जी से कहें कि वेदों का सही अर्थ बिना ईश्वरीय साक्षात्कार के केवल ज्ञान के आधार पर नहीं किया जा सकता है, कुछ न कुछ त्रुटि अवश्य होगी।

-राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, सेवानिवृत्त प्रवक्ता, हवेली दरवाजा, महोबा, उत्तरप्रदेश। चलभाष-८८५३८७२०४९

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

-१६ से २८ फरवरी तक

संगच्छध्वं संवदध्वम्-बहुत समय से आर्यसमाज संगठन के अभाव को अनुभव कर रहा है। यूं तो आर्यसमाज स्वयं में एक संगठन है, परन्तु इस संगठन का कार्य भी एक केन्द्र से संचालित हो और आर्यसमाज के विद्वान् एक दूसरे से जुड़कर कार्य करें, इसके लिये **स्वामी सत्यपति जी** की परम्परा के विद्वानों ने एक संगठन बनाया **''वैदिक आध्यात्मिक न्यास''**। इस न्यास का **प्रथम वार्षिक स्नेह सम्मेलन** दिनांक २३-२४ फरवरी को ऋषि उद्यान में हुआ। न्यास के **अध्यक्ष आचार्य ज्ञानेश्वर जी व सचिव आचार्य सत्यजित् जी** हैं। **स्वामी सत्यपति जी** न्यास के **आजीवन संरक्षक** हैं। इस न्यास का प्रधान कार्यालय ऋषि उद्यान अजमेर व उपकार्यालय वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ को बनाया गया है।

इस द्विदिवसीय सम्मेलन में १०० से अधिक दार्शनिक विद्वानों व अध्ययनरत ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। प्रथम दिन तीन सत्र हुये। पहले सत्र में सभी ने अपना-अपना परिचय व कार्य के बारे में बताया। स्वामी सत्यपति जी अस्वस्थता के कारण सम्मेलन में नहीं आ पाये, उन्होंने इस कार्यक्रम के प्रति अपने विचार व आशीर्वाद लिखकर भेजे, जिनको कि प्रथम सत्र के प्रारम्भ में ही पढ़कर सुनाया गया। आचार्य सत्येन्द्र जी ने इस न्यास का आर्थिक प्रतिवेदन भी सुनाया। सत्र की अध्यक्षता आ. ज्ञानेश्वर जी ने व संचालन आ. सत्यजित् जी ने किया। दूसरे सत्र का विषय था-''कैसे ज्ञात हो कि हमारे पाप-पुण्य कितने-कितने प्रतिशत हैं कितने-कितने प्रतिशत हो रहे हैं?'' इस विषय में आचार्या शीतल जी, आचार्य सत्यजित् जी, आचार्य आनन्द प्रकाश जी, आचार्य अर्जुनदेव जी व आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने अपने-अपने विचार रखे। उसके बाद श्रोताओं को वक्ताओं से प्रश्न पूछने का अवसर भी दिया गया। तीसरे सत्र में एक महत्त्वपूर्ण विषय रखा गया-''आर्ष विद्वानों का निर्माण अधिक व शीघ्र कैसे हो?'' विषय गम्भीर था, इसलिये चर्चा भी गम्भीर रूप से चली। वक्ताओं के अतिरिक्त अन्य सदस्यों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सत्र के अध्यक्ष आचार्य आनन्दप्रकाश जी व संचालक आचार्या शीतल जी थीं।

दूसरे दिन दो सत्र हुए। पहले सत्र का विषय था-''चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की सृष्टि के बाद होने वाली प्रलय समस्त कार्यजगत् की होती है या उसके कुछ अंशों की?'' इस विषय में ब्र. श्रीधर जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी, आचार्या शीतल जी, आचार्य रवीन्द्र जी व आचार्य सत्यजित् जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। सत्र के अध्यक्ष आचार्य अर्जुनदेव जी ब संचालक ब्र. अरुण जी थे। अन्तिम सत्र आचार्य ज्ञानेश्वर जी की अध्यक्षता व आचार्य सत्यजित् जी के संचालकत्व में हुआ, जिसमें न्यास की भावी योजना, कार्य वितरण आदि विषयों पर चर्चा की गयी। अन्त में सभी ने अपने-अपने अनुभव सुनाये व न्यास की योजनाओं की प्रशंसा की।

आ. सानन्द जी का प्रचार-कार्य-५ से २३ जनवरी तक बून्दी जिले के अन्तर्गत विद्यालय, आर्यसमाज आदि स्थलों पर चरित्र-निर्माण, ईश्वर का निराकार स्वरूप, नशा-मुक्ति आदि विषयों से सम्बन्धित व्याख्यान हुए। कापरेण में दो दिन के प्रचार कार्यक्रम में चार विद्यालयों में नशामुक्ति पर व्याख्यान हुए और दर्शनशास्त्र की लगभग १०-१५ छात्राओं में पांच वैदिक-दर्शनों के स्वरूप पर विषयानुसार चर्चा हुई। दो दिनों तक ग्रामीण पौराणिक भाइयों के बीच ईशोपनिषद् एवं अन्धविश्वास निर्मूलन पर व्याख्यान दिया। देई ग्राम में नशामुक्ति प्रचारक श्री अध्यापक लादूलाल सेन के माध्यम से रात्रि में जनसमूह को सम्बोधित किया। २१ जनवरी को ग्राम दूणी जिला टोंक के चार विद्यालयों में नशामुक्ति आदि विषयों पर व्याख्यान दिया।

अजमेर में वेदप्रचार के अन्तर्गत कैलाशपुरी कॉलोनी में ४-६ दिन श्री भूपेन्द्र जी माहेश्वरी के निधनोपरान्त शोकाकुल परिवार में यज्ञ एवं प्रवचन। दिनांक ११ फरवरी से अजमेर के गंज स्थित संस्कृत विद्यालय में प्रतिदिन विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं के बीच विद्या, विद्यालय, विद्यार्थी, सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद, नशामुक्ति इत्यादि विषयों पर चर्चा हुई एवं व्याख्यान दिये। १८ व १९ फरवरी को ग्राम राजगढ़ अजमेर में पारिवारिक सत्संग के अन्तर्गत वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में गृहस्थ के उद्देश्य, वर्णाश्रम व्यवस्था, अनुव्रत:पितु:पुत्रो आदि विषयों पर व्याख्यान दिया एवं दम्पती को आशीर्वाद दिया।

आचार्य सोमदेव जी का वेदप्रचार कार्यक्रम-पिछले दिनों आ. सोमदेव जी ने हरयाणा व उत्तरप्रदेश के निम्नस्थानों पर जाकर वेदप्रचार किया-दिनांक १५ से १६ फरवरी तक आपने आर्यसमाज गुड़मण्डी पानीपत के वार्षिकात्सव में व्याख्यान दिये। १७ फरवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिकोत्सव में भाग लिया व प्रवचन दिये। १८, १९, २० फरवरी को आर्यसमाज चंदैना सहारनपुर के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान व वेदप्रचार।

-ब्र. प्रभाकर।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर में १ से ५ अप्रैल २०१३ तक **विशेष ध्यान योग शिविर** का आयोजन श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में किया जा रहा है। इस शिविर में आसन, प्राणायाम, ध्यान और समाधि का अभ्यास गंगा के पावन तट पर कराया जायेगा। साथ ही आयुर्वेदिक ओषधियों द्वारा आरोग्यता प्रदान की जायेगी। भोजन-निवास की समुचित व्यवस्था रहेगी। साधक संख्या निश्चित है। अत: शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराकर स्थान सुरक्षित करें। विशेष शिविर शुल्क-रु. १२००/- प्रति साधक। सामान्य वार्षिक ध्यान योग शिविर ६ से १२ अप्रैल तक पूर्ववत् ही रहेगा। शुल्क ३००/- रुपये है। (सम्पर्क सूत्र-९८९७८०४१३३, ८००९४९७१३३)

२. पन्द्रहवाँ वैदिक राष्ट्रकथा शिविर सम्पन्न-३० दिसम्बर २०१२ से ०६ जनवरी २०१३ तक प्रांशला में चौदह हजार बच्चों के संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार बनाने हेतु देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए विद्वानों, शिक्षाविदों, सेनानायकों, राजनीतिज्ञों द्वारा नाना विषयों पर जीवनोपयोगी विषयों पर अपने-अपने वक्तव्य दिये गये। इस शिविर में थल सेना, वायु सेना, सीमा सुरक्षा बल, आ.ए.एफ. आदि रक्षा बलों के एक हजार जवानों एवं अधिकारियों ने अलग-अलग गुर एवं कर्तव्य सिखाये, उन्होंने अपने-अपने क्षेत्र के रक्षा उपकरणों को दिखाते हुए उनके संचालन के कौशल को प्रदर्शित किया।

इस महान् आयोजन में प्रतिदिन प्रात:काल ५ बजे दिनचर्या का आरम्भ प्रात: जागरण के मन्त्रों से हुआ एवं शारीरिक कार्यक्रम के बाद संध्या, हवन, प्रातराश के पश्चात् बौद्धिक कार्यक्रम मध्याह्न १२ बजे तक चलते रहे। अपराह्न २.३० बजे से सायंकाल बौद्धिक एवं शारीरिक कार्यक्रम ७.०० बजे तक होते रहे। पश्चात् शयन से पूर्व मनोरंजन के विविध कार्यक्रम चलाये गये। समस्त कार्यक्रम के दौरान पूर्ण अनुशासन का अद्भुत दृश्य सराहनीय एवं अनुकरणीय रहा। इस अनूठे कार्यक्रम में अनेक वैदिक मनीषियों के उद्बोधन हुए एवं प्रत्येक कार्यक्रम के बाद शिविर के आयोजक एवं संयोजक स्वामी धर्मबन्धु जी द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन विलक्षण ढंग से किया जाता रहा, जिसमें शिविरार्थियों के हृदय पर वैदिक-धर्म की अमिट छाप पड़ती रही। सत्रह हजार की संख्या में उपस्थित जन समूह की भोजन व्यवस्था उत्तम रही, जो देखते ही बनती थी।

शिविर में राज्यपाल गुजरात कमला जी, राज्यपाल उत्तरप्रदेश श्री बी.एल.जोशी, माननीय मुख्यमन्त्री हरियाणा श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, पूर्व थलसेनाध्यक्ष जनरल वी.पी.मलिक, जनरल वी.के.सिंह, जनरल दीपक कपूर, एअर चीफ मार्शल पी.वी.नायक, वाइस एडमिरल कपिल काक, लेफ्टिनेंट जनरल पी.सी.कटोच, श्री जी.डी. बक्शी, श्री निर्भय शर्मा, श्री जी.एस.ओवान, श्री कामाडोर उदय भास्कर, पूर्व सचिव विदेश नीति श्री जी पार्थ सारथी, पूर्व चुनाव आयुक्त एच.एस.ब्रह्मा, मुख्य चुनाव आयुक्त श्री सत्यानन्द मिश्रा, यू.पी.एस.सी. मेम्बर श्री प्रशांत मिश्रा एवं श्री मनवीर सिंह, एम्स के डायरेक्टर श्री आर.सी.डेका, सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री जे.एस.राजपूत, एन.सी.ई.आर.टी. श्री जी रविन्द्रा, चेअरमैन यू.पी.एस.सी. डॉ. वेदप्रकाश, चेयरमैन यू.जी.सी. डॉ. अरुण निगवेकर, वैज्ञानिक आभाष मित्रा, स्पेस साइंटिस्ट डॉ.एच.सी प्रधान, डॉ. होमी भाभा, अर्थशास्त्री प्रो. आर.वैद्यनाथन, प्रोफेसर आई.आई.एम. बंगलौर, श्री प्रकाश सिंह भूतपूर्व डी.जी.वी.एस.एफ. एवं एम.पी. नायर, डी.जी.एन.सी.आर.एस.एफ. श्री विजय कुमार, सलाहकार गृह मंत्रालय एवं वीरप्पन के मारने वाले अभियान प्रमुख श्री संतोष हेगड़े आदि अनेक महान् हस्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में बरेली उत्तरप्रदेश के भजनोपदेशक श्री पं. भानुप्रकाश शास्त्री के मनोहारी राष्ट्रभक्ति एवं ऋषि महिमा के भजन होते रहे।

३. समाज सुधारक श्रीचन्द आर्य जन्म शताब्दी सम्पन्न-लाडनूं, १७ फरवरी २०१३-समाज सुधारक श्री चन्द आर्य जन्म शताब्दी समारोह की अध्यक्षता कर रहे डांग विकास क्षेत्र बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण सिंह ने स्व. श्रीचन्द आर्य को सामाजिक क्रान्ति का नेता बताते हुए उनके गुणों का अनुसरण करने का आह्वान किया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व मन्त्री राजस्थान सरकार राजेन्द्र गहलोत ने कहा कि सामाजिक जीवन में प्रतिभा का विशिष्ट योगदान होता है। प्रतिभाओं का सम्मान कर उन्हें प्रोत्साहन देने की प्रवृत्ति समाज को नई राह दिखा सकती है। उन्होंने स्व. श्रीचन्द आर्य को महान समाज सुधारक बताते हुए उनके पद चिह्नो पर चलने का आह्वान किया। समारोह के मुख्य वक्ता बीसूका क्रियान्वयन समिति के अध्यक्ष एडवोकेट आशाराम सैनी ने कहा कि स्व. श्रीचंद आर्य का जन्म शताब्दी वर्ष मनाना समाज के लिए एक नया चिन्तन है। इससे सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एक नई लहर पैदा होगी। इस अवसर पर स्व. श्रीचन्द आर्य के जीवन दर्शन पर प्रकाशित पुस्तक-''कल्याण पथ के पथिक' का विमोचन चूरु

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

के साहित्यकार बैजनाथ पंवार एवं अतिथियों द्वारा किया गया।

४. आर्यसमाज, सागरपुर का ३३वाँ वार्षिकोत्सव आयोजित–चैत्र शुक्ल अष्टमी, नवमी व दशवीं सं. २०७० वि. तदनुसार दिनांक १९, २० व २१ अप्रैल २०१३ दिन शुक्रवार, शनिवार व रविवार को मनाया जाना निश्चित किया गया है, जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं।

५. माधव मुनि जी के उत्तराधिकार ग्रहण से परबतसर में खुशी की लहर व्याप्त–परबतसर–०३ फरवरी ०१३–निरंजन निराकार बगीची (रेलवे स्टेशन के पास) में वैदिक आश्रम की छवि दृष्टिगत हुई, जब उसमें नेपाली बाबा (जगन्नाथ जी) के निधन के पश्चात् उत्तराधिकारी हतु समारोह आयोजित हुआ। नेपाली बाबा का परबतसर में बहुत प्रभाव था। वे गायत्री मन्त्र की ही शिक्षा देते थे। उनकी देखरेख श्री योगेश त्रिपाठी एवं श्रीमती चन्द्रकान्ता ने पूरे समर्पण व निष्ठा से की। इस आश्रम (बगीची) में दिनांक ०२ फरवरी की रात भजन सत्संग का कार्यक्रम हुआ, जिसमें चेतनमुनि वानप्रस्थ, यशमुनि, किशनाराम आर्य, पं. रामस्वरूप रक्षक, माधव मुनि ने प्रवचनों के माध्यम से वैदिक संस्कृति के प्रचार का संकल्प दिलाया।

०३ फरवरी प्रात: आचार्य मोक्षराज (अजमेर) के ब्रह्मत्व में यज्ञ का कार्यक्रम हुआ, जिसमें माधवमुनि जी को उस आश्रम का उत्तराधिकारी बनाया। व्यापारिक संघ व माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री रामस्वरूप मोदी, नगरपालिका अध्यक्ष–श्री भगवान बंग, पारीक सभा के अध्यक्ष श्री राधेश्याम पारीक, कॉलेज के प्राचार्य श्री सुरेश व्यास ने इस बगीची पर वैदिक विचारधारा को प्रचारित करने में पूरा सहयोग करने का वचन दिया। स्वामी कर्मवेश ने वहां गुरुकुल स्थापित करने का आह्वान किया, जिसको नगरवासियों ने पूर्ण समर्पण व सहयोग का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में सभी महन्त नाथ सम्प्रदाय, निरंजन–निराकार, शैव, वैष्णव सम्प्रदाय के लोगों का शॉल ओढ़ा व श्रीफल भेंटकर स्वागत किया। उक्त आश्रम में अब नित्य अग्निहोत्र प्रारम्भ हो गया है तथा एकादशी, अमावस्या व पूर्णिमा को सत्संग सञ्चालित है। कार्यक्रम में हेमाराम आर्य, अमराराम जी सरपंच हरनावा आदि उपस्थित थे।

चुनाव समाचार

६. आर्यसमाज का गठन–चित्तौड़गढ़ जिले के निम्बाहेड़ा तहसील के मरजीवी ग्राम में सर्वसम्मति से आर्यसमाज मरजीवी का गठन किया गया। **संरक्षक**–गणपतलाल पटेल, **प्रधान**–कारूलाल गायरी, **उपप्रधान**–जीवन आंजना, **मन्त्री**–विक्रम आंजना, **उपमन्त्री**–दशरथ आंजना, **कोषाध्यक्ष**–गणपतलाल आर्य।

७. आर्यसमाज केकड़ी के चुनाव–सापणदा रोड़ स्थित आर्यसमाज भवन में आर्यसमाज केकड़ी के द्विवार्षिक चुनाव श्री कुञ्जबिहारी लाल पालड़िया प्रधान आर्यसमाज आदर्श नगर अजमेर की देखरेख में सम्पन्न हुए। जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये–**संरक्षक**–छोटूलाल कुमावत, **प्रधान**–मूलचंद महावर, **उपप्रधान**–वीरसिंह अलूदिया, **मन्त्री**–अशोक आर्य, **उपमन्त्री**–गजराज आर्य, **कोषाध्यक्ष**–सत्यनारायण सोनी, **पुस्तकाध्यक्ष**–हीराचंद खूंटेटा, **स्टोर कीपर**–बजरंग सिवनीगर।

८. आर्यसमाज शाहपुरा–श्रीमान् प्रधान साहब सम्पत कुमार जी व्यास की अध्यक्षता में दिनांक १६.१२.२०१२ रविवार को सायं ४.०० बजे साधारण सभा की बैठक आयोजित की गई जिसमें प्रस्ताव सं. (११) के अनुसार आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ, जो निम्न प्रकार है–**संरक्षक**–राजाधिराज इन्द्रजित् देव, **प्रधान**–कन्हैयालाल आर्य, **व. उपप्रधान**–हीरालाल आर्य, **उपप्रधान**–हनुमान प्रसाद पुरोहित, **मन्त्री**–सत्यनारायण तोलम्बिया, **उपमन्त्री**–हरीशचन्द्र शर्मा, राधेश्याम जीनगर, **कोषाध्यक्ष**–टीकमचन्द चितालांगिया, **पुस्तकाध्यक्ष**–रमेशचन्द्र टेलर, **द्रव्य निरीक्षक**–अखिल व्यास, **आर्यवीर दल अधिष्ठाता**–सत्यनारायण सेन।

शोक समाचार

९. आर्यसमाज नजफगढ़ के संरक्षक **महाशय अभय राम आर्य** का देहावसान २८ जनवरी २०१३ को ८८ वर्ष की आयु में हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक मन्त्रोचार के साथ किया गया। वे अपने पीछे भरा–पूरा परिवार छोड़ गये। उन्होंने अपने जीवनकाल में आर्यसमाज की बहुत सेवा की, काफी वर्षों तक वे आर्यसमाज के मन्त्री रहे। वे नजफगढ़ के गण्यमान्य व्यक्तियों में से एक थे। नजफगढ़ आर्यसमाज व क्षेत्र के लोगों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली दी।

१०. आचार्य पं. विभुमित्र शास्त्री ''विद्याऽमार्तण्ड को मातृ शोक–पं. विभुमित्र शास्त्री जी, ग्रा व पो–चोरसुआ, वाया–पावापुरी नालन्दा बिहार–की शताधिक वर्षीया माता बुद्धि देवी का देहान्त दिनांक ४.१.२०१३ को हृदयाघात से हो गया। उनका दाह संस्कार–पंचाने, गोयठवा और हरगावां नदियों के संगम स्थल (त्रिवेणीधार) पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

११. आर्यसमाज फूलिया कलाँ के प्रधान श्री राधेश्याम जी अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती शिमला देवी का देहावसान दिनांक २०.०१.२०१३ को प्रात: ५.०० बजे हो गया। श्रद्धांजली एवं शान्ति–यज्ञ दिनांक १२.०२.१३ को मध्याह्न ३.०० बजे से आर्यसमाज शाहपुरा, डोहरिया, फूलिया कलां के पदाधिकारियों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता श्रीमान् जितेन्द्र कुमार गुप्ता, राजकीय महाविद्यालय शाहपुरा ने की। समस्त कार्य श्रीमान् गुप्ता सा. ने वैदिक रीति से सम्पन्न करवाया। ✱

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ मार्च, २०१३ RNI. NO. ३९५९/५९

वैदिक आध्यात्मिक न्यास (वार्षिक स्नेह सम्मेलन-१)

२३ व २४ फरवरी, २०१३, ऋषि उद्यान, अजमेर

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

आवरण : MITTAL 9829797513